भूमिका।

ऋषियोंने लिखा है, "संसार अनित्य है"। इस वाक्यमें "संसार" शब्दसे सांसारिक पदार्थ वा सांसारिक कार्य्य समझना उचित है। संसारके जितने पदार्थोंका ज्ञान हम लोगोंको इन्द्रियोंके द्वारा हो सक्ता है, वा जिनका ज्ञान हम लोगोंको किसी प्रकार होही नहीं सक्ता, उनमेंसे एक पदार्थ भी अनित्य नहीं है, सब नित्य हैं—किसीका कभी नाश नहीं होता। वैज्ञानिकोंने प्रत्यक्ष प्रमाणोंसे निश्चय कर दिया है, कि उनका केवल रूपान्तर होता है—नाश कभी नहीं होता। लकड़ी जल जानेसे लकड़ीका नाश नहीं होता उसका केवल रूपान्तर होता है। जिन पदार्थोंसे लकड़ी बनी थी, वे राखमें मौजूद रहते हैं, उनका केवल रूप बदला रहता है। जीवित अवस्थामें मनुष्य जो कार्य्य करता है, वह भी अनित्य नहीं है। साधारण लोग भी कहते हैं, कि जो जैसा काम करता है वह मरनेपर वैसीही गति—अर्थात् स्वर्ग वा नरक पाता है। वास्तवमें इस साधारण कहावतमें बहुत कुछ सत्य है। मनुष्यके मरनेके बाद स्थूल शरीरसे शरीरस्थित ब्रह्मका विछोह होजानेपर वह ब्रह्म भाग्यानुसार अनेक योनियोंमें भ्रमण करनेमें अर्थात् सांसारिक अन्य शरीर धारण करनेमें प्रवृत्त होते हैं; और उस ब्रह्मका मृतक शरीरसे सम्बन्ध रहनेके समयतक इन दोनोंके द्वारा जितने काम किये गये थे, जितनी बातें जानी गई थीं वे सब भी मूर्त्तिमान होकर सूक्ष्म शरीर धारण करते हैं। परन्तु जो सुख वा दुःख हम लोग भोगते हैं, वे बहुत थोड़े समय तक रहते हैं। वेही अनित्य हैं और उन्हीं सुखदुःखोंके विषयमें ऋषियोंने अपनी पूर्व्वोक्त सम्मति दी है।

इतिहासके लेखक राजोंहीके विषयमें अधिक लिखते हैं। वैसे ही सब विषयोंमें लोग प्रधान ही पुरुषपर अधिक

ध्यान देते हैं। हमारे ऋषियोंने भी ऐसाही किया है। सांसारिक पदार्थोंके सम्बन्धमें लिखनेके समय उन लोगोंने शरीरस्थित ब्रह्म हीको प्रधान जानकर उन्हीके सम्बन्धमें अधिक लिखा है—सांसारिक कार्य्य और ज्ञानादिके सलकी सूक्ष्ममूर्त्ति जो शरीर और शरीरस्थित ब्रह्मके विछोह होजानेके बाद पैदा होती है, हमारे ऋषियोंके समीप गौण समझी गई ? इसी लिये इसके सम्बन्धमें हम लोग पुराणोंमें बहुत लेख नहीं पाते हैं, तौभी आप पूछ सक्ते हैं, "शरीरस्थित ब्रह्म अनेक योनियोंमें भ्रमण करनेके बाद परिष्कृत और शुद्ध होजानेसे अन्तको ब्रह्ममें सम्मिलित होकर जैसे मोक्षको प्राप्त होजाते हैं; वैसे सांसारिक कार्य्य तथा ज्ञानादिके सत्वका सूक्ष्म शरीर अन्तको कहां जाता है ?"

अगर आप निश्चय बतला सकें, कि गुड़से चीनी, चीनीसे मिसरी, मिसरीसे कन्द होनेपर भी कन्दसे क्या होता है; और ऐसी क्रिया जारी रहे, तो अन्तमें क्या होगा; अगर आप विश्वासपूर्व्वक कह सकें, कि जमीनसे ऊंचे उठते उठते पतलीसे पतली हवा पानेपर अनन्त दूरीपर जानेसे कैसी हवा मिलेगी; अगर आप शपथ करके कहें, कि पृथ्वी खोदनेसे पहिले साधारण मिट्टी तब कीचड़, फिर बालू और जल पानेपर भी खोदते रहनेसे अन्तमें क्या मिलेगा, तो मैं भी आपको बतला दूंगा, कि शरीर और शरीरस्थित ब्रह्मके बिछोहके बाद संसारमें किये कार्य्य और ज्ञानके सलका जो सूक्ष्म शरीर बनता है, वह अन्तमें क्या होता है।

परन्तु उसके पैदा होनेके बाद उसकी क्या दशा होती है, वह शरीर कहां और कैसे रहता है, वह क्या करता है—इत्यादि बातें एक विद्याके द्वारा जानी जा सक्ती हैं; इसी विद्याका नाम है "अध्यात्म विज्ञान।" इस पुस्तकमें उसी विद्याके सम्बन्धमें कई बातें लिखी गई हैं। यदि पाठक लोग इसे पढ़कर उत्साह दिखावेंगे और उस विद्याको पूर्णरूपसे प्राप्त करनेकी इच्छा प्रगट करेंगे; तो मैं उसके सम्बन्धमें एक बड़ी और अधिक आश्चर्यदाई पुस्तक भी उनको भेंट करूंगा।

इस "अध्यात्म विज्ञान" विद्यापर मुझे बहुत दिनोंसे प्रीति है। प्रायः ८ बरस होगये, कलकत्ता—पुलिसके मृत सुपरिण्टेण्डेण्ट बाबू काली नाथ बसुके मकानमें एक बार चक्र बैठी थी। उस चक्रमें कलकत्ता-पुलिस इन्सपेक्टर और पूर्वोक्त काली बाबूके दमाद बाबू शरत कुमार घोष, वकील बाबू गोविन्द चन्द्र राय बी० एल, मृत बाबू मक्खन लाल गाङ्गुली बी० एल, बाबू नित्य रञ्जन दत्त और बाबू मोहिनी मोहन मित्रके साथ मैं भी बैठा था। उस चक्रमें मृत प्रोफेसर ए०सी० दत्तकी मुक्तात्मा आई। दत्त महाशय बङ्गदेशी प्रधान सिविलियन मिष्टर आर०सी०दत्त जिला माजिष्टरके भाई थे। मिडियम दत्त महाशयको नहीं जानता था और न उनका लिखा हुआ कोई कागज उसने कभी देखा था; तो भी मिडियमने उनकी मुक्तात्माका हस्ताक्षर बहुत ठीक लिखा तथा कई ऐसी बातें कहीं जिनसे दत्त महाशयकी मुक्तात्माके आनेके विषयमें किसीको कुछ शङ्का नहीं रही। बाबू कालीनाथ बसुकी मुक्तात्मा भी आई और उसने अपने दमादके कानोंमें एक ऐसी धराज गुप्त बात कही, कि सब लोग चकित हो गये। उस दिनसे मुझे मुक्तात्माओं पर विश्वास हुआ और अध्यात्म विज्ञान पर प्रेम हुआ। यह विद्या औरोंको सिखलाना भी उचित समझ कर मैंने यह पुस्तक प्रकाशित की है। आशा करता हूं कि पाठक लोग इससे अवश्य लाभ उठावेंगे और मेरा परिश्रम तथा व्यय सफल करेंगे। यहां कह देना अच्छा है कि ऊपर लिखी पंक्तियोंमें तथा इस पुस्तकमें सांसारिक कार्य्य तथा ज्ञानादिकी सूक्ष्म मूर्त्तिके लिये मैंने एक शब्द "मुक्तात्मा" लिखा है।

इस पुस्तकके पहिले भागमें मृत डाक्तर राज कृष्ण मित्रकी बनाई बङ्गभाषाकी "लोकविजय" का प्रायः अविकल अनुवाद है। इस लिये उस भागमें जिस जगह "मैं" आदि सर्वनाम हैं, वहां उक्त हो डाक्तर साहबका कथन समझना चाहिये। वह पुस्तक सन् १८८०ई०में प्रकाशित हुई थी, इस लिये यदि "एक-बरस हुआ" आदि वाक्य हों, तो उनका अर्थ उसी अनुसार समझ-

जाना चाहिये। उस पुस्तकका अविकल अनुवाद करनेकी और उसे प्रकाशित करनेकी निष्काम आज्ञा देनेके लिये मैं उक्त डाक्टर साहबके योग्य पुत्र श्रीयुक्त मोहिनी मोहन सिंहको अनेक धन्यवाद देता हूं।

मेरे धन्यवादके भागी अमेरिका देश निवासी डाक्टर डेकुस-टर और जज एडमण्ड तथा हिन्दुस्थानमें प्रसिद्ध थियोसोफि-कल सोसाइटीके प्रेसिडेण्ट कर्नल औलकट भी हैं; क्योंकि पहिले दोनों महाशयोंकी बनाई अङ्गरेजी भाषाकी "स्पिरिचुआ-लिज़्म" नामकी पुस्तकका सारांश "परलोक"के दूसरे भागमें दिया गया है और कर्नल साहबकी बनाई "पीपुल फ्रोम दी अदर वर्ल्ड" नामकी पुस्तकका सारांश लेकर तीसरा खण्ड लिखा गया है।

परन्तु सिमरटोला-दरभङ्गा निवासी श्रीयुक्त पण्डित भुवनेश्वर मिश्रको भी धन्यवाद देना परम आवश्यक है, इस पुस्तक सम्बन्धी बहुतसा परिश्रम उन्हें करना पड़ा है। शायद इतना कहना भी यथेष्ट नहीं होगा कि यदि उक्त पण्डित जी अपनी विद्या बुद्धिसे मेरी सहायता न करते तो आज पाठकोंको "परलोक" का दर्शन नहीं हो सकता।

ता० ८वीं जून १८९६—
नं० १ चीनाबाजार लेन
कलकत्ता

शरच्चन्द्र सोम
प्रकाशक।

प्रथम भाग ।

विज्ञापन।

सचित्र हिन्दी

महाभारतका दूसरा नाम पांचवां वेद है। महाभारत ही हिन्दू मात्रका एक प्रधान धर्म्मपुस्तक है; धर्म्म पुस्तक होनेके अलावे भारतवर्षका यह एक ही पुराना इतिहास है, परन्तु अभीतक हिन्दीमें इसका एक भी शुद्ध अनुवाद नहीं हुआ है, इससे हम यह भयानक अर्थ-व्ययकारी कार्य्यमें दत्तचित होकर हर महीने एक एक खण्ड प्रकाशित करते हैं। सम्पूर्ण सचित्र हिन्दी महाभारतका मूल्य राजा महाराजोंसे ५१) रुपया, किन्तु साधारण गृहस्थ तथा विद्यार्थियोंके लिये सिर्फ २६) रुपया रखा गया है! आशा है कि धर्म्म परायण हिन्दू महोदयगण शीघ्र ग्राहक हो उत्साहित करेंगे।

शरच्चन्द्र सोम।

१ नं० चीनाबाजारलेन, हमाम गली। कलकत्ता।

आत्माका जन्म।
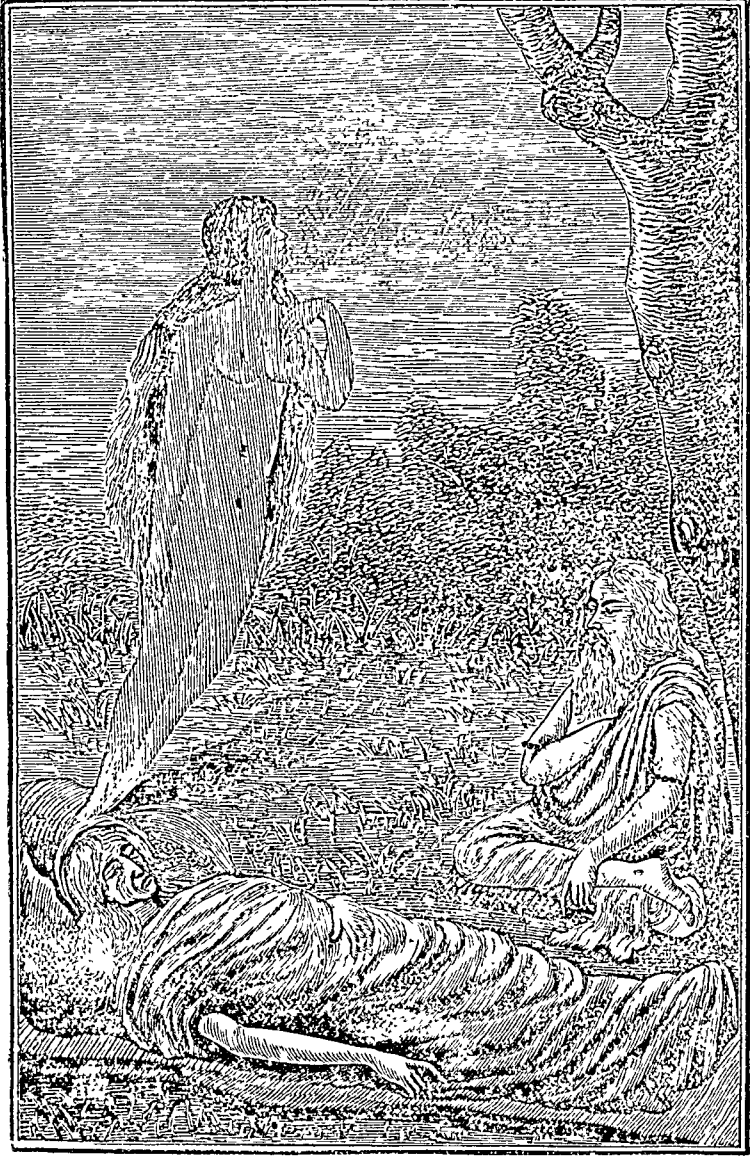
प्रथम भाग।

परलोक।

पहिला अध्याय।

उपक्रमणिका।

महाभारतमें लिखा हुआ १८ दिनोका महायुद्ध समाप्त हो जानेपर सौ लड़कोंको मा गान्धारी और बूढ़े धृतराष्ट्र सैकड़ों विधवा पुतोहू और पोत-पुतोहुओंके साथ द्वैपायन-काननमें जाकर वास कर रहे थे। कुन्ती और विदुर उनलोगोंके साथ गये थे। इसी अवसरमें नारदमुनि महर्षि व्यासदेवसे भेंट करनेके लिये आये और जहां राजपरिवार गुप्तवास कर रहे थे वहीं दोनो महापुरुष उपस्थित हुए। नारदजी सदा सदानन्द रहते हैं। बसन्त ऋतुके प्रात समय बनने अत्यन्त अनूप रूप धारण किया था। सो देखकर नारदजी अपना बीना छेड़ने लगे और गीत गाने लगे। आगे राजपरिवारके समीप गये। वहां सबसे पहिले गान्धारीने दो आसन सामने रखकर दोनो ऋषियोंको बैठनेको प्रार्थना की। फिर धीरे धीरे और सब स्त्रियां भी वहां आगईं और उन दोनो महात्माओंको घेरकर बैठ गईं।

व्यासदेव बोले, हे गान्धारी! हे स्त्रियां! आप लोग कुशल क्षेमसे तो हैं?

व्यासदेवकी इतनी बातें सुनकर स्त्रियाँ अपना अपना बिना चड़ीका बायां हाथ निकालकर, उनकी ओर उठाके बोलीं, हे देव! हम लोगोंकी कुशल यही देखिये। इतना कहकर वे सब बड़े जोरसे रोने लगीं।

व्यासदेव तब बोले "हे स्त्रियां! तुम लोग अपने अपने पतिपुत्रके शोकसे कातर हो रही हो; सो शोक तुम लोग दूर करो। इस विप्लव-जगतमें सब ही चीजें अमर हैं। आदमीकी बात तो दूर रहे, वृक्ष, लता, कीट, पतङ्ग, पशु, किसीका एकदम नाश नहीं होजाता है। यह असीम संसार पदार्थोंसे भरा हुआ है, और एक अनन्त प्रबल जीवन-प्रवाह इसमें व्याप्त होकर विस्तार रूपसे बह रहा है। जब यह जीवन-प्रवाह पदार्थोंके साथ मिल जाता है, तब ही जीवोंकी सृष्टि होती है। इसी तरहसे पानीमें मछली, आकाशमें चीड़ियाँ, और पृथ्वीपर अनेक प्रकारके जीवोंकी सृष्टि होती है। अलग होके उसीमें कुछ दिनोतक आनन्द करता है, और समय आजाने पर, वह जड़ शरीर पञ्च-भूतमें और जीवन वायु उस अनन्त जीवन-प्रवाहमें मिल जाती है। मतलब यह कि जिसे तुम लोग मृत्यु कहती हो, वह केवल रूपान्तर ही है। प्राणके विषयमें हम लोगोंका अन्यान्य जीवोंसे कुछ भी भेद नहीं है। भूख, प्यास, वंश बढ़ानेकी चेष्टा, स्त्री पतिसे प्रेम, भय, लोभ, काम, क्रोध सब जीवोंमें समान ही होते हैं, और जिसे तुम लोग मृत्युवा रूपान्तर कहती हो वह भी सब जीवोंकी समान ही देखी जाती है। किन्तु हम लोगोंके शरीरके भीतर एक और सूक्ष्म शरीर है, उसे आत्मा

कहते हैं। एक लोहेके गोलेको आगमें तवानेसे, उसके प्रत्येक रेणुमें अग्नि प्रवेश कर जाती है; उसी तरहसे आत्मा हम लोगोंके शरीरके सब अंशोंमें व्याप्त हो रही है। इस आत्माका नाश वा लय नहीं है। पृथिवी इसकी जन्मभूमि है; और यहीं यह अनन्त उन्नतिकी सीढ़ीपर चढ़ती है, प्रथम शिक्षा आरम्भ करती है। समय आजानेसे वा दैवी घटनासे इस शरीरके नष्ट होजानेपर आत्मा इसे छोड़कर ऊपर चली जाती है। देखो, यह जो गुलावके फुलकी कली देखती हो वह थोड़े ही दिनोंमें एक सुन्दर फूल होकर ज्यों ही खिलेगा त्यों ही उसके वीचकी असली चीज, अर्थात सुगन्ध, ऊपर उड़ जायगी और उसकी पत्तियां नीचे जमीनपर गिरके मिट्टीमें मिल जायंगी। उसी तरहसे हम लोगोंका शरीर नष्ट होजानेपर आत्मा उसे छोड़कर ऊपर चली जाती है, और जड़ निर्म्मित शरीर पंच भूतमें और प्राणवायु जीवनप्रवाहमें मिल जाती हैं। इस लिये, जिसको तुमलोग म्टत्यु कहती हो सो केवल आत्माका जन्म वा सूक्ष्म शरीर धारन करता मात्र है। यहां अपने आत्मीय स्वजन लोग शोकसे कातर होकर जमीनपर गिरके चिल्लाते रहते हैं, और आत्मा-भूमिमें आनन्दकी धूम मचती है। आत्माशरीरवाले अपने प्रियतम स्वजन लोग आत्माके जन्मके समयकी प्रतीक्षा करके रोगी आदमीके विछावनके पास उसकी सेवा करते रहते हैं और शरीरसे उसके अलग होते ही उसे साथ लेकर आत्मा-भूमिमें चले जाते हैं।

श्रीनारद जी बोले, हे व्यासदेव ! आप सत्य युगकी कथा नहीं जानते हैं। उस समय आदमीके शरीरमें कुछ भी पाप प्रवेश नहीं कर सकता है ; इस लिये जिसकी जिस तरहकी आत्मा होती है, वह उसीसे देखा जाता है।

गान्धारी बोली हे महर्षि ! आप सब कालकी खबर रखते हैं, लेकिन हम लोग इस अभागे द्वापर युगके मनुष्य हैं, उत्तम सत्ययुगकी कथा सुनकर क्या करेंगी। हे गुरुदेव ! आत्माकी जन्मकी कथा कहनेके समय आपने कहा था कि मृत्यु कालमें मुक्तदेहवाले अपने आत्मीय स्वजन नजदीक आजाते हैं, इसमें हमको पूरा विश्वास है। मेरी माँ बीमार पड़के बहुत दिनों तक दुःख भोग कर रही थीं और मृत्युके दो तीन दिन पहिलेसे मेरे पिता उनके नजदीक बैठकर सुश्रुषा करनेकी बातें कहा करते थे। पर हमलोग समझते थे, कि मा रोगसे विह्वल होकर बक रही हैं।

श्री व्यासदेवजी बोले हे गान्धारी ! तुमने ठीक कही है। मृत्युकाल उपस्थित होनेमे मस्तिष्ककी अवस्था ऐसी होजाती है, कि आत्मीय स्वजन वा प्रियतम लोगोंकी मुक्त-आत्मा समीपमें रहे तो बहुतसे लोग उन्हे देख सकते हैं, और कभी कभी उन्हे नाम धरके पुकारते भी हैं। वैद्य लोग उसे विकार समझके विषाक्त औषध देते हैं. और सिरको गर्म बालसे सेकवाते हैं। इसी अवस्थामें असुर वैद्य लोग खून निकलवा देना, फोड़ा कर देना, पिचकारी देना, सिर पर बर्फ बधवांना इत्यादि चिकित्सा करते हैं और वहांके लोगोंको समझा

देते हैं कि अब यह यमके साथ खींचाखींची कर रहा है। पर वेसब कारवाइयां सिर्फ मुर्देको तलवार मारनेके बराबर हैं। खैर, सो जो कुछ हो, इस समय, हे कन्यागण! मैं यही अच्छी तरहसे समझाना चाहता हूं कि आत्माका जन्म किस तरहसे होता है; तुम लोग ध्यान देकर सुनो।

बहुत दिन हुए, जब मैं दक्षिण अरण्यमें तपस्या कर रहा था तब वहीं एक सौ बरसकी उमर वाली एक बूढ़ी ब्राह्मणी भी बास करती थी। वह किस कारण, कब, कहांसे वहां आई थी सो कोई नहीं कह सकता था। वह दिन भर पासके गावोंमें भिक्षा मागती थी। रात होनेसे वह ईश्वराधनामें और राहभूले थके मुसाफिरोंको अपनी कुटीमें टिकाके उनकी सेवा करनेमें समय विताती थी। मैं उसके गुणसे अतयन्त वाधित था इसी लिये उसे बहुत मानता था। एक दिन उन्होंने मुझे अचानक कहा "आज चार पांच महीनेसे मेरा शरीर दुर्ब्बल हो रहा है, शरीरमें कोई बीमारी मुझे मालूम नहीं होती है, किन्तु तब भी मैं क्यों दिन दिन दूर्ब्बल होती जाती हूं इसका कारण नहीं ठीक कर सकती हूं। आप मुझपर कृपाकरके एक बार मेरे शरीरकी परीक्षा कीजिये।" मैं उसी समय ध्यानकरके बैठ गया और ध्यानहीमें उसके शरीरमें प्रवेश करके देखा कि उसके पेटमें उत्कट रोगकी अंकूर पैदा हुई है और उस रोगके नाश होनेका कोई उपाय भी नहीं है। सो मैंने उस बूढ़ीसे कहा कि आप डरें मत, अब भिक्षा मागनेको गांवमें भी मत जाइये; मैं आपका आहार

सब दिन यहाँ ला दूंगा। इस तरहसे सात आठ दिन बीते। एक दिन दोपहर दिनको वहां जानेसे देखा कि बूढ़ी कुटीके बाहर पड़ी हुई हैं। मुझे देखते ही उन्होंने हाथ उठाकर प्रणाम किया और कहा हे महर्षि! क्या मेरे बचनेका कोई उपाय नहीं है? मैंने जवाब दिया आपका रोग बड़ा ही प्रबल है। तिसपर बूढ़ी कुछ समय तक मेरी ओर टकटकी लगाये रहीं, फिर बोली हे महर्षि! क्या यह सम्वाद मेरे लिये शुभ जनक नहीं है?

मैंने उत्तर दिया कि आत्माका कारागारसे मुक्त होनेका समय अवश्य ही बड़ा शुभ जनक है।

ब्राह्मणी। तब तो आपके मतसे यही मालूम होता है, कि सब लोग एक दम मर जायं सो ही अच्छा।

व्यास। मुक्त होनेका समय उत्तम है, इसमें सन्देह नहीं; पर इस लिये मृत्युकी कामना करनी उचित नहीं।

ब्राह्मणी। तब क्या मैं जो मृत्यु चाहती हूं सो अन्याय करती हूं?

व्यास। इसमें क्या शक है। पहिले आरोग्य होनेके लिये सब प्रकारकी चेष्टा करनी चाहिये।

ब्राह्मणी। मैंने आपकी बात नहीं समझी।

व्यास। इस शरीरमें जब तक रह सकना सम्भव है तबतक रहना उचित है।

ब्राह्मणी। मैं यदि औषध नहीं खाऊं तो क्या पर-कालमें मेरी असद्गति होगी?

व्यास। जो लोग इहकालके सब नियमोंका यथोचित प्रतिपालन करते हैं उन्हे कुछ भय नहीं होना चाहिये।

इस समय वह बढ़ी बोली कि मुझे कोई कपड़ा ओढ़ा देव, बड़ी सर्दी मालूम होती है। उस समय गर्मीका मौसिम था, तिसपर भी उन्हे उतना जाड़ा मालूम करते देखकर मुझे भय होने लगा कि इनका मृत्युकाल अब आपहुंचा। मैंने उन्हे कपड़ा ओढ़ा दिया।

ब्राह्मणी। मैंने क्या इहकालके कार्य्योंको उत्तम रूपसे किया है?

व्यास। मालूम होता है कि आपने किया है।

ब्राह्मणी। तब मुझे कोई भय नहीं है। आओ मृत्युराज! अब मुझे कोई भय वा चिन्ता नहीं है।

इतना कहते उनकी देह गोया हंसीसे भर गई और उनकी आखें आनन्दसे चमकने लगीं। तब वह फिर बोलीं "मेरे स्वामीके साथ यह देव-शरीर धारी जवान कौन है?" तब बोली रुकनेपर उर्द्धश्वास आरम्भ हुआ। मैंने उसी समय ध्यान लगाया, देखा कि आत्मा समस्त शरीरमें व्याप्त थी, पर अब कई अङ्गोंसे तेज निकलकर मस्तिष्ककी तरफ दौड़ने लगा है। शरीरके वे सब अङ्ग प्रत्यङ्ग अब धीरे धीरे आत्माकी इच्छाके अनुसार काम करनेमें असमर्थ होने लगे हैं। आत्माका तेज जैसे जैसे उनके पाससे निकलकर ऊपरको जानेकी चेष्टा करने लगा, वैसे वैसे उसे अपने पास ही रखनेके लिये वे सब कोशिश करने लगे। बहुत दिनोंसे एक

जगह वास करनेके कारण उनमें आपसका प्रेम होगया था और शरीर आत्माको अपना एक अंश समझ कर, इस लिये कोशिश करने लगा कि यह (आत्मा) अब मुझे छोड़के न चला जाने पावे। यह तूफान विपरीत श्रोतोंका फल था। एक तरफ शरीरसे अलग होजानेके लिये आत्मा बड़ी कोशिश करने लगी और दूसरी तरफ जीवित शरीर आत्माको अपने साथ ही रखे रहनेके लिये कई तरहकी चेष्टा करने लगा। अङ्ग प्रत्यङ्गोंका टेढ़ा होजाना, हाथ पांव सिकुड़ जाना, स्वास लेनेमें कष्ट इत्यादि जितने तरहके उन्हे कष्ट होते मालूम हुए सो सब देखकर निश्चय किया कि साधारण लोग इन्हीको मरनेके दुःख कहते हैं। किन्तु वे सब विपरीत कार्य्योंके फलके सिवाय और कुछ नहीं थे। वास्तवमें इस समय आत्माको कुछ भी कष्ट पाते नहीं देखा। बड़े तूफानके पहिले समुद्रका पानी एक दम स्थिर होजाता है—मालूम होता है कि एक बहुत बड़ा कांचका टुकड़ा पड़ा हुआ है। उसी तरहसे, मृत्युसे थोड़ा पहिले बूढ़ीके शरीरमें पैरसे सिरतक कहीं भी किसी कष्टका कोई चिन्ह नहीं मालूम हुआ। देखा, बूढ़ीने अपनी आंखे बन्द करली हैं; शरीर प्रसन्न मालूम होता है; और दो तीन बार अपने पति और पुत्रका नाम लेती हैं। उस समय अनेक मुक्त-आत्मा उनकी चारों ओर खड़ी थीं। जन्मसे लेकर इस समयतक उन्होंने संसारमें जितने काम किये थे, वे सब चित्रित होकर छायाबाजीकी तरह क्रमानुसार उनके सामनेसे गुजरने लगे, और उन सबको देखकर वह कभी हंसती

थीं और कभी लज्जित होती थीं। इस समय उनके माथेसे तेज सब निकलकर उनके सिरको चारों ओर एक धूंआमय पदार्थ बनकर तीन चार हाथ ऊपर उठा। मस्तिष्कका प्रत्येक रेणु मानो अपने अपने घरका दरवाजा खोल देने लगा, प्रत्येक घर मानो पहिलेसे और भी अधिक उजियाला होने लगा और वह सब तेज ऊपरको उठने लगा। जैसे जैसे शरीर शीतल और विवर्ण होने लगा, वैसे वैसे मस्तिष्क सतेज और उज्वल होकर नवसृजित आत्मा देहकी सृष्टि होने लगी।

मैंने देखा कि सबसे पहिले एक सुन्दर मुंह, तब गला, तब छाती, तब कमर, तब हाथ पांव सब क्रमानुसार बनकर एक परम सुन्दरीका शरीर तयार हुआ। प्रसवके समयमें जैसे नाभीके द्वारा माके साथ नई जन्मी सन्तानका सम्बन्ध रहता है। वैसे ही इस धूंआमय पदार्थ द्वारा इस नये बने आत्मा शरीरका सम्बन्ध उस मृतक शरीरसे था। फिर यह धूंआ कुछ तो ऊपर उड़ गया और कुछ उसी मृतक शरीरमें फिर पैठ गया।

इसी तरहसे आत्माका जन्म हुआ। आहा! उस नये बने आत्मा-शरीरका सुन्दर रूप अब भी आंख मूंदनेसे मुझे देख पड़ता है। वैसा सुन्दर शरीर मैंने आजतक कभी नहीं देखा है, और उम्मीद भी नहीं होती है कि मैं कभी आइन्दे देख सकूंगा। उस टूटी फूटी कुटीमें जो ऐसी नई निरुपमा सुन्दरी बास करती थी, सो मुझे कभी स्वप्नमें भी नहीं खयाल आया था। जो कुछ हो, उस समय मैंने उस मनोहर दृष्टको एक तसवीर तयार कर ली थी, सो तुम लोग यह देखो।

इतना कहकर मुनिराजने गान्धारीके हाथमें एक तसवीर दी। सब लोग अवाक होके वह तसवीर देखने लगीं। सब लोगोंकी आखोंसे धड़ाधड़ जलधारा बहने लगी।

गान्धारी बोली हे मुनिराज! आपने स्वाभाविक मृत्युकी जो कथा कही सो हम लोगोंने खूब समझली। किन्तु जो लोग लड़ाईमें मारे जाते हैं उनके शरीरके अङ्गप्रत्यङ्ग शायद कटकटकर कई जगहोंमें गिर जाते हैं। तब उन लोगोंकी आत्माका नया शरीर किस तरहसे बनता है, सो आप अच्छी तरहसे समझा दीजिये।

श्रीव्यासदेव जी बोले, कि उन लोगोंकी आत्माका भी शरीर ठीक इसी क्रमसे बनता है। जहां मस्तक गिरता है, उसके दस बारह हाथ ऊपरको आत्मा देहकी सृष्टि होती है। मस्तिष्कका सब तेज पहिले उठके उस स्थानपर जाता है। और शरीरके अङ्गप्रत्यङ्गोंका तेज भी सब जगहोंसे यहींपर आकर मिलता है। हड्डी, शिरा और मांस द्वारा हम लोगोंके शरीरका परस्पर योगायोग है; वैसे ही आकर्षण शक्ति द्वारा आत्मा-शरीर आपसमें मिला रहता है। इसी लिये देहको खण्ड खण्ड करके अलग अलग फेंक देनेसे भी आत्मा-शरीरको कुछ हानि नहीं होती हैं।

इतनी कथा सुनकर गान्धारी बोली, हे ऋषिराज! आपकी कथा सुनकर आज मुझे दिव्य ज्ञान हुआ और मृत्यु क्या पदार्थ है सो मैं समझ सकी। पर कृपा-निधान! सो समझनेहीसे क्या। मेरी समान अभा-

गिनी संसारमें और कोई नहीं हैं। मैं एक सौ लड़कोंकी मा हूं। पर इस समय मेरे साथ कोई भी नहीं है। वे सब मेरे सामने तमाम दिन घूमते थे। सदा मेरी गोदमें बैठते थे, आहार मांगकर खाते थे, मामा कहके पुकारते थे। हे महर्षि! उन लोगोंको तो अब मैं नहीं देखती हूं। इस लिये मैं कैसे विश्वास करूं कि वे लोग जीते ही हैं; मेरा जला मन किसी बातसे नहीं समझता है।

श्रीव्यासदेव जी बोले हे गान्धारी! तुम ऐसी बात कह सकती हो। लेकिन मनसे विचारकर देखो कि आज छः महीनेसे हस्तिनापुर नगरकी अट्टालिका, दास-दासी, हाथी घोड़े परित्याग करके इस वनमें वास करती हो, इस लिये क्या तुम्हारे मनसे ऐसी खयाल आती है कि वह नगर और वह सम्पत्ति नाश होगई। तब तुम्हारे पुत्र पौत्र सब तुम्हारे पास नहीं हैं इससे तुम क्यों ऐसा समझती हो कि वे सब एकदम नष्ट होगये। इतना सुनकर दुर्य्योधन आदि सौ भाइयोंकी स्त्रियां चारों तरफसे एक ही बार चिल्लाकर रोने लगीं। सब लोग कहने लगीं हे महर्षि! आपने जो सब ज्ञान कथा हम सबको सुनाया उससे हम सब चरितार्थ हुईं। किन्तु जबतक उन सब प्रियतम लोगोंको अपनी इन आंखोंसे नहीं देखूंगी वा उन लोगोंकी मीठी बातें इन कानोंसे नहीं सुनूंगी तबतक हम लोगोंका शोक किसी तदबीरसे नहीं दूर होगा। हे महर्षि! सुना है कि आप इच्छा करनेसे उन लोगोंको यहां बुला सकते हैं इस लिये दया करके उन लोगोंके साथ हम लोगोंकी एक

बार मुलाकात कराइये। इतना कहकर सब स्त्रियां पृथ्वीपर गिर पड़ीं और चारों ओरसे चिल्लाकर रोने लगीं। महर्षि व्यासदेव बहुत देरतक नारदजीके मुखकी तरफ देखते रहे और चिन्ता करने लगे; फिर, आसनसे उठ खड़े होकर बोले हे शोकसे कातर स्त्रियां! तुम लोग अपनी अपनी कुटीको लौट जाओ, आज रातको तुम सब इसी नदीके किनारे आना। मैं तुम लोगोंको अपने अपने प्रियजनोंसे मुलाकात करा दूंगा। इतना कहकर मुनिराज अपने आश्रमको चले गये और स्त्रियां मनहीमन खुश होकर अपने अपने घर गईं। दिन समाप्त होजानेपर कब रात आवेगी यही चिन्ता सब स्त्रियोंके मनमें लगी रही। सांझ होनेके बाद वे सब उसी सूनसान एकान्त स्थानमें इकट्ठी हुईं। थोरी देरमें महर्षि भी वहां पहुंचे और स्त्रियोंको अपनी चारों ओर चक्राकार बैठाकर उनके बीचमें खड़े होकर कहने लगे—

हे स्त्रियां एकबार इस आकाशको ओर देखो। अहा! कैसा रमणीय दृश्य है, मानो एक नीला शामियाना सिरके ऊपर तना हुआ है और उसके नीचे असंख्य तारा हीरेके टुकड़ेकी तरह चमक रहे हैं। यह जो बीचमें एक सुफेद मेघकी तरह देखती हो उसे साधारण लोग बैतरणी नदी कहते हैं, लेकिन असलमें वह सुफेद मेघ ही है। नदी वा कोई धूआं मय पदार्थ नहीं है। उसका नाम छायापथ है। दूरबीनके जरिये देखनेसे साफ मालूम होगा कि इसमें असंख्य छोटे छोटे तारे गोया एक दूसरेसे सटे हुए वहां रक्खे हैं। वे

सब तारे पृथिवीसे लाखगुने बड़े और एक दूसरेसे लाख योजन अन्तरपर हैं। बहुत दूर रहनेके कारण इन आंखोंसे देखने पर वे धूआंमय पदार्थ मालूम होते हैं, और दूरबीनसे देखने पर सिर्फ छोटे छोटे असंख्य सटे तारे मालूम होते हैं। इस स्थानका नाम द्वितीय-स्वर्ग है। देहसे मुक्त होनेपर आत्मा पहले यहीं जाती है। बहुत दिन हुए, मैं द्वैपायन काननमें तपस्या करनेके समय शरीरका परित्याग करके उसके दो तीन स्थानोंमें गया था। वहा जो सब अद्भुत और आश्चर्य विषय देखा उसके सौ हिस्सेमेंसे एक हिस्सेका भी वर्णन करनेके योग्य कोई भाषा इस संसारमें नहीं है। मतलब यह कि जो सब मनोहर वस्तु हमलोग देखते हैं वे सब सिर्फ वहांके अविकल पदार्थोंकी नकल मात्र हैं। जो कुछ हो, यह बात तुम लोगोंको मैं किसी और समयमें समझा ऊंगा। इस समय तुम लोग अपने प्रिय लोगोंका ध्यान एकाग्रचित्त होकर करो।

आगे ऊपरको ताककर ऋषिवर कुरुक्षेत्रके सब योद्धाओंको एक एक करके बुलाने लगे। महर्षिकी बात किसकी शक्ति है कि टाले? सब एकएक करके आने लगे। द्वैपायन कानन उस रातका मानो दूसरा कुरुक्षेत्र हो गया, भेद केवल इतना ही रहा कि उन योद्धाओंको आपसमें शत्रुता नहीं देखी गई।*

दूसरे दिन सुबहीको दोनो मुनिवर राजपरिवारके समीप गये। वहां जानेसे इन लोगोंने देखा कि कुरुक्षेत्रके योद्धा लोग द्वितीय स्वर्गको चले गये हैं

* यह कथा महाभारतके आश्रमिक पर्व्वमें लिखी हुई है।

और गान्धारी प्रभृति सब स्त्रियां चुपचाप बैठी हैं। इन दोनोंको आते दूरहीसे देखकर वे सब कुछ आगे बढ़के साष्टाङ्ग दण्डवत पूर्व्वक बोलीं हे मुनिनाथ! आपने कल रातको क्या हमलोगोंको भोजविद्या दिखलाई थी? इसके पहिले हमलोग शोकसे कातर थीं, किन्तु कल रातको आश्चर्य्य घटना देखकर विस्मयके साथ ज्ञान और बुद्धि एक दम नष्ट करदेनेवाला भय हुआ है। हे ऋषिवर! हम सब आपके पैरोंपर गिरती हैं; इसका क्या माजरा है, सो अच्छी तरहसे समझा दीजिये।

श्री व्यास जी बोले हे स्त्रियां! स्थिरचित्त होकर सुनो। पिता ईश्वर सबके आदि कारण हैं। इच्छा उनका यन्त्र है। उन्होंने इच्छा की, उससे प्रकृतिकी सृष्टि हुई। दोनोंके सम्मिलनसे विश्वजगतकी सृष्टि हुई। वही पिता सबकी आदिशक्ति हैं, ज्ञानमय और प्रेममय रूपसे वह विश्वजगतमें विराजते हैं। सृष्ट वस्तुओंमें मनुष्य सबसे प्रधान है। मनुष्यमें पिता ईश्वर और माता प्रकृतिका विशिष्ट रूप देखा जाता है। देहान्त होनेपर मातृ अंश जमीनपर गिरके पञ्चतत्वको मिल जाता है, किन्तु पितृअंश ऊपर जाकर क्रमशः बढ़नेकी कोशिश करता है। वह इच्छा जितनी प्रबला होती है, आत्मा-शरीर उतना ही अधिक तेजोमय ज्ञानमय, और प्रेममय होता है। सैकड़ों बड़े बड़े नगर, समुद्र, ग्राम हुए हैं; कितने महाराज्योंका पतन और कितनी पृथिवीका ध्वन्श हुआ है, तेजोमय सूर्य्य ज्योति रहित हो सकते हैं;

ऐसा भी हो सक्ता है, कि महाप्रलयके द्वारा समूची पृथ्वीका नाश हो जाय, पर ऐसा नहीं हो सक्ता कि आदि शक्तिकी वह स्फुलिङ्गरेणु आत्मा किसी समयमें नाश हो। यह असीम शून्यमें रहकर अनन्त कालतक इच्छाशक्तिके बलसे चिरोन्नति पथमें चलती है। इस लिये, हे गान्धारी! तुम किसके लिये शोक करती हो? कोई नहीं मरता है।

गान्धारी बोली हे मुनिनाथ! मुझे दिव्य ज्ञान मिला, मेरे बेटे सब नहीं मरे हैं, सो मैंने प्रत्यक्ष देखी और उसमें विश्वास भी करती हूं। किन्तु आज उन लोगोंके जानेके समय मैं बहुत रोई थी। मैं जानती हूं, कि माया ही इसका प्रधान कारन है। इस लिये आप मुझे यह उपदेश करें कि यह माया कैसे नष्ट हो सक्ती है।

श्रीव्यास जीने गान्धारीकी इतनी बात सुनकर कुछ हंसे और बोले कि हे गान्धारी! मायाको नष्ट करदेनेकी क्षमता किसीमें नहीं है, क्योंकि यह माया वही आदि शक्ति प्रेम है, प्रकृतिके संसर्गके दोषसे इकृत भाव धारन करके जीवको सदानन्दके स्थानमें निरानन्द करती है। तब हो यही सक्ता है, कि घर्षण मार्ज्जन करके इसे पूर्व्व अवस्थामें ले आओ और तब यह फिर तुम्हें सदा आनन्द रहनेका सुख दिखलावेगा।

गान्धारी बोली हे महर्षि! इसे खूब समझाकर कहिये।

इतना सुनकर नारदजी आगे बढ़ आये और बोले कि मैं समझा देता हूं। हे गन्धर्वोंकी कन्यायें! बालक

अवस्थामें मैं इस मायामें बहुत भूला हुआ था। यज्ञो-पवीत होजाने पर उससे अलग होकर वनमें जाऊंगा और वहीं तपस्या करूंगा, यही मैंने निश्चय किया था। किन्तु मायाने मुझे इतना वेवश कर रक्खा था कि मैं कुछ नहीं करसका। बहुत सोच समझ कर मैंने ओछी मायाको बहुत फैला देनेके अभिप्रायसे पहिले अपने पड़ोसियोंको तब समूचे संसारके लोगोंको, क्या मनुष्य क्या पशु, क्या कीट, क्या वृक्ष, क्या लता, आदि सबको अपना समझ कर प्यार करने लगा। मन ही मन जानता था कि कोई भी अपना नहीं है, तौं भी सबको अपना मानकर समान रूपसे सबके साथ प्रेम करने लगा। थोरे ही दिनोंमें देखा कि सदा सब अवस्थामें चारों तरफ मैं प्यारी वस्तुओंसे घिरा रहता हूं। मन प्रेमानन्दसे परिपूर्ण रहता था और वही आनन्द अब भी दिन रात हृदयमें विराज रहा है। हे स्त्रियां! विश्व प्रेममें मनको मग्न रक्खो, सब जीवोंसे समान ही माया, दया, स्नेह, प्रेम और प्रणय रक्खो। जहां जिस अवस्थामें रहोगी, चारों तरफ प्रेममय देखोगी और हृदय प्रेमानन्दसे प्रफुल्लित रहेगा। अब समय बहुत बीत गया, तुमलोगोंने रातभर जागा है, सो अपने अपने घर जाओ। इतना कहकर दोनो ऋषि चले गये। स्त्रियां भी अपनी अपनी कुटीको गईं।

महाभारतकी कथा यहींतक समाप्त करते हैं। उस समयके मुनि ऋषि लोग तपस्याके बलसे सिद्ध पुरुष होते थे; और इच्छा करनेहीसे इस शरीरको छोड़कर भिन्न भिन्न स्थानोंमें घूम सक्ते थे। और कहांतक,

बुढ़ापा आजानेसे जब हाथ पांव आत्माकी इच्छाके अनु-सार काम करनेमें असमर्थ होते वा मस्तिष्क पहिलेकी तरह कोमल नहीं रहनेसे मानसिक शक्ति वैसी उत्तेजित नहीं मालूम होती, तब वे लोग अपनी ही इच्छासे शरीरका त्याग करके परलोक गमन कर सक्ते थे। उस तरहके लोग अब देखे नहीं जाते हैं, इस लिये उस तरहकी कथाओंको सुनकर लोग उन्हे वाहियात कहानी खयाल करते हैं। नीचेकी लिखी घटना, इस लिये, एक अध्यात्मिक पुस्तकसे उद्धृत करते हैं।

कुछ दिन बीते होंगे, अमेरिका देशके न्यूयोर्क शहरमें एक साहब अपनी स्त्रीके साथ रहता था। उसवे कोई लड़केवाले नहीं थे। किसी जरूरी कामके लिये साहबको एकबार विलायत जाना पड़ा। तीन चार महिनेतक अपनी बीबीको उसने चिट्ठी नहीं लिखी। बीबी इसी सोचसे एक तरहकी बौड़ही होगई। उस समय उस शहरके किनारेमें एक उदासीन साहब रहता था। यह आदमी मैदानमें, स्मशानमें वा किसी निर्जन स्थानमें वास करता था। वह सदा मैला कपड़ा पहिरता था, स्नान नहीं करता था और उसके बाल हमेशे बिखरे रहते थे। आदमियोंके सतसङ्गसे वह सदा दूर रहता था, इसी लिये लोग उसे पागल कहते थे, लेकिन जो लोग उसका गुण जानते थे वे उसे महापुरुष करके मानते थे। बीबी किसी तरहसे अपने स्वामीकी कोई खबर नहीं पाकर, एक दिन उस उदासीनके पास गई और बड़ी विनतीके साथ अपने मनकी बात कही। उदासीनने बीबीको बाहर ही बैठनेकी आज्ञा देकर

अपने घरका किवाड़ बन्द कर दिया। बहुत विलम्ब होनेसे बीबीने घबड़ाकर बाहरहीसे घरकी खिड़कीकी झिलमिली उठाकर झांका, तो देखा कि उसका शरीर आधा खटियेपर है और आधा नीचे जमीनपर। शरीरमें कुछ भी संज्ञा नहीं मालूम हुई, मानो एक लाश पड़ी हुई है। डरकर बीबीने झिलमीली आहिस्ते आहिस्ते बन्द कर दी। दो घण्टेके बाद वह किवाड़ खोलकर बाहर आया और बीबीसे बोला कि तुम्हारे स्वामीने जो अखिरी चिट्ठी लिखी है, वह तुम आज पाओगी; साहब बहुत ही बशिद्दत बीमार होगया था, इसी लिये वह चिट्ठी नहीं लिख सका था; वह बहुत दुबला होगया है और मुझसे कहता था कि १५ दिनके बाद जो नाव विदा होगी उसीमें मैं रवाना होऊंगा।

बीबीने कहा कि हे महात्मा जी! अगर ये बातें सही ठहरें तो आपने आजसे मुझे बिना मोलकी दासी बना डाली।

जब बीबी अपने घर पहुंची, तो डाक-प्यादेने आकर उसके स्वामीको चिट्ठी उसे दी और बीबीने उसे पढ़कर देखा कि बाबाजीकी कही हुई बातें उस चिट्ठीमें भी लिखी थीं। एक महीना बाद साहब घर पहुंचा। उसके पहुंचनेके दूसरे दिन बीबीने साहबसे कहा कि आपके आनेसे एक महीना पहिले आपकी कोई खबर मुझे नहीं मिली थी, इस लिये मैं बड़े सोचमें थी। किन्तु फलानी जगह जो एक बाबाजी रहते हैं उन्होंने आपकी सब खबरें मुझे कह दी थी; अगर वह मुझसे

उस दिन वे सब बातें नहीं कहते तो शायद मैं इतने दिनोंतक नहीं बचती। सो चलो, एक दिन दोनों आदमी मिलकर उनके पास चलें और उनका प्रणाम कर आवें।

साहबने कहा कि मैं अभी तुम्हारी तरह पागल नहीं हुआ हूं कि उस मशहूर बौड़हेको प्रणाम करने जाऊं, लेकिन बीबी बार बार साहबको वही बात कहती रही; लाचार हाकर साहबको मञ्जूर करना पड़ा; दोनों साथ होकर बाबाजीके पास गये। आगे आगे बीबी और पीछे पीछे साहब गये। बीबीने पहिले दण्डवत किया। साहब ज्यों ही उसके पास गया कि साहबका बदन कांपने लगा; बाबाजीकी तरफ टकटकी बांधे देखता रहा; फिर धब्बसे नीचे बैठ गया। "क्या हुआ, क्या हुआ" कहते हुए चारों तरफसे लोग आ पड़े और साहबके हाथ मूंहपर पानी छिड़कने लगे। कुछ देर बाद साहब बोला बड़े आश्चर्य्यकी बात है, मैंने इस आदमीको फलानी तारीखमें विलायतकी राजधानी लण्डन शहरमें एक्सचेञ्ज दूकानपार देखा था। इन्होंने मुझसे पूछा था कि आप क्यों नहीं घर जाते और क्यों चिट्ठी नहीं लिखते और मैंने इन्हें सब बातें कह दी थी। फिर जब इनका परिचय पूछनेको मैंने इनकी तलाश की तो यह कहीं नहीं मिले।"

शरीर त्यागकर इस तरहसे दूसरी जगह जानेके उदाहरन बहुतसे दिये जा सक्ते हैं। लेकिन सबसे पहिले हम आत्म-परिचय लिखेंगे। अर्थात अध्यात्म-विज्ञान शास्त्र पढ़नेमें क्यों प्रवृत्त होना चाहिये, कबतक चक्र

बैठाकर साधन करना चाहिये और उन सब चक्रोंसे क्या फल होता है, सो सब बातें पहिले लिखेंगे।

दूसरा अध्याय।

आत्म परिचय।

मेरी छोटी उमरमें मेरे पिताकी मृत्यु होनेसे मेरा प्रतिपाल ननिहालमें हुआ था। माता, मामा मौसी और नानी दिनरात जपतप किया कहती थीं। सब ही एक परमेश्वरकी आराधना करते थे, किसीके मनमें कुछ कुसंस्कार नहीं था। सब जीवोंपर समान दया रखते थे, यहांतक कि दरवाजेपरके तालावमें अगर कोई मछली मारता था तो वे उससे बहुत रंज होते थे। इस लिये बाल्यावस्थाहीसे मेरी प्रवृत्त धर्मकी ओर हुई।

हम लोग चार सहोदर भाई थे। सबसे जो बड़े थे वह छोटी ही उमरमें मर गये। जो उनसे छोटे थे वह मुझे बहुत मानते थे; उन्होंने पिताके समान मुझे खिलापिला पहिरा ओढ़ा कर लिखना पढ़ना सिखाया। सन १८५९ सालमें वह संक्रामक ज्वरसे पीड़ित हुए और बहुत दिनतक उसमें फंसे रहे। इसी समय मैं एक देशहितैषी काम करनेको कहीं गया और वहीं एक बड़े आदमीसे रंज कर आया, इसपर भाईने गोस्सा होकर मुझे गाली दी। मुझे भी कुछ रंज मालूम हुआ, घर छोड़-कर भाग गया। मेरे भाई भी आब हवा बदलनेके लिये गाजीपुर चले गये और वहीं उनकी मृत्यु हुई। घर

लौटनेपर मैंने देखा कि पांच छः महीनेके अन्दर घरके १४।१५ आदमी फसली हैजेसे मर गये हैं; इसी समय मैंने भाईकी मृत्युकी खबर भी पाई; इस शोकसे मेरी छाती फट गई, मैं पागल सा होगया। दिन रातमें कभी यह चिन्ता चित्तसे दूर नहीं होती थी। इस समय किसी काममें एक दम फंसे रहनेसे उस चिन्तासे कुछ रिहाई पानेकी आशा करके मैंने एक नौकरी कर ली। दिन रात काममें फंसा रहता था और रातको छुट्टी होनेपर रोता रहता था। इस तरहसे ३।४ बरस बीत गये, पर चित्तमें शान्ति नहीं हुई। जब मनमें होता था कि "वे लोग मुझे छोड़कर कहां चले गये" तब रोलाई छूटती थी।

इसी समय एक फ्रान्सीसी आष्ट्रेलिया देशसे होमियोपैथिक डाक्तरी करनेके लिये इस देशमें आये। उन्होंने होमियोपैथिक और आत्मविज्ञानकी धूम इस देशसे पहिले पहिल शुरू की। गये १५।१६ बरसोंही के अन्दर शिक्षित जवान लोगोंके समाजमें होमियोपैथी एक तरहकी चिकित्सा-शास्त्र हो गई है; और अध्यात्म-विज्ञान शास्त्र भी अनेक विचक्षण लोगोंके दर्मेयान धर्म्म-शास्त्रके नामसे परिगणित होने लगा है।

मैं उस समय कामकाजके वजहसे एक जगह गया था। वहां तक भी अध्यात्म विज्ञानकी धूम फैली थी। वहांके डांक बङ्गलेमें एक दिन १६।१७ भले आदमी एक बड़ा चक्र बनाकर बैठे। उनके साथ मैं भी बैठा था। थोड़ी ही देरमें, वहांके एक मुन्सिफ साहब जो बी० ए, बी, एल, पास किये हुए ब्रह्मसमाजी थे, सो, और डांक-

घरके एक बड़े इन्स्पेक्टर जो राय बहादुरकी उपाधिसे सुशोभित थे सो, दोनो आदमी मानो नींदमें आ गये। हाथकी उंगलियां हिलने लगीं और उनके हाथमें एक पेन्सिल देनेसे उन दोनोंने एक एक मरे आदमीका नाम लिख दिया। उन लोगोंकी दशा देखकर मुझे बड़ी हंसी आई; यहां तक कि चक्रसे बाहर जाकर मैं बड़े जोरसे "हा-हा-हा-हा-" करके हंसने लगा। और भी कई लोग मेरी ही तरह बाहर जाकर हंसने लगे। परन्तु कई आदमी मुझपर रंज हुए। पहिले मैंने समझा था कि यह सब उन लोगोंकी सिर्फ चालाकी है। चक्र टटजानेके बाद उन सबसे पूछनेपर उन लोगोंने कहा कि हम लोग तो कुछ नहीं जानते हैं, बैठनेके कुछ देर बाद शरीर आसन्न हो गया। और धीरे धीरे नींद आगई। तब मेरे मनमें हुआ कि इन दोनो आदमियोंको तो बहुत दिनोंसे अपना आदमी समझता हूं, तब ये लोग क्यों मुझसे चालाकी करने चले, सो हो न हो इसमें कोई असली बात भी अवश्य ही है। दूसरे ही दिनसे मैंने एक नया चक्र मुकर्रर किया और उसमें जो जो अजीब और गरीब बातें मैंने देखी उन सबका कुछ अंश यहां आप लोगोंके आगे सुनाता हूं। जो हृदय पहिले शोकसे कातर हो रहा था वही अब बड़ी आशासे प्रफुल्लित हो गया है। अब मैंने समझ लिया है कि जन्म और मृत्यु—इहकाल और परकाल—सिर्फ इस घर और उस घरसे भिन्न और कुछ नहीं हैं।

पहिले ही दिनके चक्रमें हम लोगोंको फल मिल गया। एक कायस्थका लड़का, जिसकी उमर २३।२४

बरसकी थी, १०।१५ मिनट तक बैठने पर बेहोश होगया। यह देखकर सब लोग अवाक हो रहे। थोड़ी ही देरके बाद उसके दहिने हाथकी उंगलियां हिलने लगीं। उसके हाथमें तब एक पेन्सिल धरा दिया गया। पहिले तो उसने उस कागजपर कुछ इदिर बिदिर लिखा, तब यह प्रश्न पूछा गया—

प्रश्न। आप किस पुरुषकी मुक्तआत्मा हैं,—नाम लिखिये।

उत्तर। फलाना—(कोई उस नामको नहीं जानता था)।

प्रश्न। जब आप इस संसारमें थे तब आपका घर कहां था?

उत्तर। फलाने गांवमें (कोई इस गांवको नहीं जानते थे), फलाना थाना, फलाना जिला।

प्रश्न। कितने दिन हुए कि आपने इस पृथिवीका परित्याग किया था।

उत्तर। प्रायः ६० बरस।

प्रश्न। आजकल आपके बंशमें कोई है?

उत्तर। मेरी लड़कीकी एक नतनी है,—सो भी बिधवा है। मेरे घरका कोई चिन्ह भी नहीं है।

इतनी बात लिखकर मिडियमका (उस बेहोश आदमीका) हाथ स्थिर हो गया। थोड़ी देरके बाद हाथ पांव समेट देनेपर उसे होश हुई। तब पूछे जानेपर उसने कहा कि मैं तो कुछ नहीं जानता हूं; पर मालूम होता है कि मैं सो गया था। वह जनवरीका महीना था, और उस समय जाड़ा बहुत पड़ता था,

पर जब सब आदमी घरसे बाहर हुए, तब मिडियमने चिल्लाकर कहा "देह जली जाती है, देह जली जाती है" और अपने बदनका सब कपडा उतारकर फेंक दिया। दूसरे दिन सुबहीको उस थानेके दारोगेके नामसे इस बातकी चिट्ठी लिखी गई। ६ दिनके बाद दारोगा साहबने उसका जवाब भेजा। जवाबमें लिखा था कि मैंने स्वयं उस गांवमें जाकर तलाशकी और मालूम हुआ कि ५०।६० बरस पहिले इस नामका एक किसान इस गांवमें रहता था; उसकी जिन्दगीमें उसे अपने जमिन्दारसे बड़ा मुकद्दमा हुआ था; उसके मरनेपर उसकी स्त्री और लड़की कहां गई सो किसीको मालूम नहीं है; उसके रहनेके घरका कुछ चिन्ह भी नहीं है; पर एक अधवयसी औरत जो कूट पीसा करके अपना दिन बिताती है अपनेको उसकी लड़कीकी नतनी कहती है; बात बहुत दिनोंकी है, इस लिये उसके बारेमें और बातें किसीको मालम नहीं है।

यह चिट्ठी पानेसे हम लोगोंका उत्साह और भी बढ़ गया। अब तो एक एक हफ्तेमें ३।४ बार चक्र बैठने लगा। मिडियमकी शक्ति दिन दिन बढ़ने लगी। शहरमें इसकी बड़ी चर्चा फैली। बहुतसे बड़े बड़े लोग इस अद्भुत कारखानेकी घटनाओंको देखनेके लिये खाहिश जाहिर करने लगे। वैसे ही क्रस्तान हाकिम लोग बड़े रंज होने लगे। राजा—को देखनेकी बड़ी इच्छा हुई परन्तु साहब लोगोंकी रंजगी बचानेके लिये वह एक रात चुपचाप आये। अपनी गाड़ी उन्होंने उस जगहसे आध कोशपर छोड़ दिया था। उस दिन

छः बरसका एक ब्राह्मणका लड़का मिडियम हुआ था। लड़केकी आंखे बन्द थीं, होश कुछ नहीं था, पर तौभी उसके हाथमें कागज और पेन्सिल देनेसे वह इदिर-बिदिर लिखने लगा। तब राजा साहबने उससे पूछा—

राजा। आप किस आदमीकी मुक्त आत्मा हैं—अपना परिचय बतलाइये।

लड़का। श्री (फलाने)—(राजा साहबके एक जानेसुने ज्ञातिका नाम उसने लिखा। यह १०।११ बरस पहिले परलोक सिधारे थे)

राजा। अच्छा, अगर तुम उस पुरुषकी आत्मा हो तो तुम्हारे मरनेके पहिले तुमसे और मुझसे जो बात हुई थी सो क्या तुम बतला सकते हो?

लड़का। मैंने स्वीकार किया था कि मैं आपसे मुलाकात करूंगा, मैं आपके पास कई बार गया था, पर आप मुझे देख नहीं सके थे।

राजा। (आश्चर्य्यसे) सच है, (फिर कुछ सोच कर) अच्छा मेरे सोनेके घरमें जानेकी सीढ़ीके सामने क्या है सो कह सकते है? (यह वहांसे आध कोसपर था)

लड़का। एक तसवीर है।

राजा। किसकी तसबीर?

लड़का। यह तसवीर उस समय नहीं था, मैं कैसे बतलाऊं।

राजा। उसके नीचे नाम लिखा है। पढ़कर कहो।

लड़का। नि—ल—क; रौशनी झुक झुक करके जलती है, ठीक पढ़ा नहीं जाता।

राजा। हाँ, ठीक कहते है। राजा नीलकण्ठहीकी तसवीर है।

लड़का। राजा साहब! आपको मैं होशियार कर देता हूं। आप फिर यहां मत आया कीजिये। इस दलके सब लोगोंपर विशेष अत्याचार होनेकी सम्भावना है। और अगर कह आत्याचार आपपर होगा तो बड़ी हानि होगी।

राजा साहब * उस दिनसे फिर हम लोगोंके चक्रमें न आये। हम लोगोंके ऊपर जो अत्याचार हुआ उसे यहां नहीं लिखेंगे।

एक दिन बैठनेके साथ ही मिडियम बेहोश होगया। उसके दहिने हाथमें पेन्सिल देकर नाम पूछनेसे उसने लिखा—

मिडियम। ईश्वरचन्द्र गुप्त मजुम—

प्रश्न। समझ गये; आपका वे ही कविवर ईश्वरचन्द्र गुप्त है? वह तो मजुमदार न थे।

मिडि०। हां, मैं वही हूं—मजुमदार हम लोगोंकी उपाधि है। (पीछे उनके भतीजेसे पूछनेपर जाना गया कि उनकी उपाधि सचमुच मजुमदार ही थी)

प्रश्न। आप कैसे हैं।

मिडि०। अच्छे नहीं हैं।

प्रश्न। क्यों अच्छे नहीं है? कोई कष्ट है?

मिडि०। कोई ऐसा कष्ट तो नहीं है, किन्तु पृथिवीसे आनेके बादसे आज यहां कल वहां केवल घूम रहे हैं।

---

* स्वर्गीय राजा बरोदाकण्ठ राय बहादुर। घटनाका स्थान, नामेल जिला—जेसोर।

प्रश्न। आप कोई अद्भुत लीला दिखला सके हैं?

मिडि०। सब कुछ अद्भुत ही है।

प्रश्न। आप कृपा करके कुछ कविता लिखें।

मिडि०। तुम लोगोंकी सर्कल आज भी सब तरहसे दुरुस्त नहीं हुई है। खैर चेष्टा करेंगे।

इतनी बातें लिखनेके बाद मिडियमका हाथ बिजलीके समान चलने लगा और मुहूर्त्तके अन्दर परमार्थिक विषयक १३ पंक्तियोंकी कविता लिखी गई। इस समय देखा गया कि टेबुलकी लकड़ीमें वा टिनके कठरेवाले पासहीके स्लेटमें लगकर उसका दहिना हाथ दोतीन जगह कट गया है और लोहू बह रहा है, किन्तु उसे उसकी कोई खबर नहीं है। हम लोगोंने उसका हाथ थाम्हकर उसकी आँख, मुहपर पानी छिड़का, तन्द्रा छोड़ाया। इस समय इस स्थानसे आठकोशपर एक और सर्कल बैठी थी। गुप्त महाशय उसी समय वहां गये और अपनी कविताकी १४ वीं पंक्तिसे २४ वीं पंक्तितक लिखकर उसे पूरी कर दी। इन २४ पंक्तियोंकी वह कविता अति चमत्कार है। जैसा भाव है वैसी ही मीठी कविता है और जिस तरहका उत्तम अनुप्रास उसका है उसे देखनेसे मालूम होता है कि गुप्त महाशयको छोड़कर और कोई उसे नहीं लिख सक्ता है। जो लोग गुप्त महाशयकी कवितासे भले परिचित थे, वे उसे देखते ही ऐसा कहने लगे थे।

फिर एक दिन हमलोग चक्र लगाकर बैठे तो मेरे बड़े और मझले भाई एक ही बार आगये। उस दिन उन लोगोंने अपना परिचय इस तरहसे दिया था कि

मेरे चित्तमें कुछ भी सन्देह बाकी नहीं रहा। ठहरे तो वे लोग उस दिन बहुत ही थोड़े समय तक, किन्तु वैसे सुखका दिन मुझे और कभी नहीं मिला था। उसके बाद उन लोगोंने, खास कर मेरे मझले भाईने मुझसे कई बार मुलाकात की, और कितना ही उचित उपदेश दिया। उस दिनसे मेरा जला शरीर मानो नया हो गया। मेरे हृदयसे अन्धकार रूपी सन्देह दूर हो गया, सूर्य्य रूपी ज्ञानका उदय हुआ, और अनिश्चयताके कोलाहलके स्थानमें आनन्दकी स्थिर वर्षा होने लगी।

एक दिन मिडियमके वारिसोंने साहबोंके डरसे चक्रमें बैठनेके समय उसे घरमें तालेके जरिये बन्द कर रखा। हम लोग पहिलेहीसे जानते थे कि वे सब ऐसा करेंगे, इस लिये शामको जब सब लोग इकट्ठे हुए तब मिडियमकी इन्तजारी नहीं करके जितने लोग आये थे उतनेहीका चक्र बनाकर बैठ गये और बाहरके लोग वहां आकर हल्ला न मचाने पावें, इस खेयालसे उस घरका दरवाजा बन्द कर दिया गया। आधे घण्टे तक भी हम लोग न बैठे होंगे कि एक आदमी बड़े जोरसे किवाड़ तोड़ कर भीतर आया और टेबुलपर हाथ देकर मेरे पास बैठ गया। टेबुलके नीचेसे तब चिराग उठाकर देखा कि हम ही लोगोंका मिडियम न जाने कहांसे आकर बैठ गया है। मिडियमका मकान करीब आधा कोस दूर था। जब हमलोग सर्कल बनाके बैठे थे तब वह अपने ही घरमें बेहोश होगया था, और उसी बेहोशीमें अपने घरका किवाड़ तोड़कर गिरता पड़ता सब

चीजोंको लांघता रास्ते बेरास्ते एक मूहूर्तमें हमलोगोंके घरमें आके दख्लदार हो गया था। हम लोगोंने तब देखा कि उसका शरीर लकड़ीकी तरह कठिन हो रहा है, टकसानेसे टकसता नहीं। दोनो आंखे एक दम सुफेद हैं। आंखकी पुतलियां बिलकुल ऊपर चली गई हैं। निर्जीव तो ऐसा हो रहा था कि शरीरमें आग लगानेसे वा सूई भोंकनेसे भी शायद वह जरा न हिलता। हाथमें पेन्सिल देनेपर वह दहिनी ओरसे बाईं ओर लिखने लगा। न तो मिडियम ओर न उपस्थित लोगोंमें कोई आदमी फारसी भाषा जानता था। १०।१५ मिनटमें सिरामपुरी कागजके दो तख्तोंको उसने भर दिया। और आश्चर्यकी बात यह हुई कि सिर एक तरफ पड़ा हुआ था, किन्तु एक पीठ भर जानेपर हाथ उठाकर उसने जगह बजगह जहां नुक्ता देना मुनासिब था वहां वहां नुक्ता भी अनायास दे डाला। हम लोगोंने इन सबका एक अक्षर भी न समझ सके। इस लिये जब हम लोग उसे बहुत कहा सुना तब उसने बड़े कष्टसे एक मुसलमानका नाम बंगले अक्षरोंमें लिख दिया। फिर हम लोगोंने उसे कहा कि हमलोगोंके प्रश्नोंका उत्तर बंगले अक्षरोंमें लिखो। इसपर देखा कि उसके हाथ. पांव, केहुनी समूचे शरीरकी 'मानो उसे जरूरत हो गई। सो देखकर हम लोगोंने उसकी तन्द्रा छुड़ा दी।

इस समय वहांकी जजी अदालतमें ६५ बरसके एक बूढ़े कायस्त मुहाफिज-दफ्तर थे। यह फारसी इल्म अच्छी तरहसे जानते थे। दूसरे दिन सुबहको हम-

लोगोंने मिडियमके लिखे कागजोंको उन्हीके पास ले गये। उन्हे देखते ही मुहाफिज दफ्तर साहब बोल उठे "वाह वा वाह, यह तो किसी बड़े मुन्शीका लिखा-हुआ मालूम होता है।" फिर उन्होने उसे शुरूसे आखिर तक पढ़ा। आखिरीमें लिखनेवालेका नाम देखकर उन्होने बड़े अचम्भेसे पूछा कि आप लोगोंने यह कागज कहां पाया? ४०।५० बास हुए, जब मैं इस अदालतमें पहिले पहिले नौकर हुआ था, तब यह यहांके दीवानजी थे। इन्होंने बहुत रुपया कमाया था, और उस समय इनके समान फारसी जाननेवाला आदमी बहुत कम मिलता था।

गवर्नमेण्ट स्कूलके एक प्रधान शिक्षक *, एक मुन्सिफ साहब †, और एक डिपटी कलकटर साहब ‡ एक बार चक्र लगाके बैठे। अंगरेजी भाषाके विख्यात कवि मिल्टनकी मृतात्मा उस समय मुन्सिफ साहबके ऊपर आई। उन लोगोंमेंसे कोई भी लटिन भाषा न जानता था इस लिये उसी भाषामें एक कविता लिखनेकी प्रार्थना करनेसे, पहिले मिडियमका दहिना हाथ एक घण्टे तक टेबुलपर ठकठक करता रहा, पीछे जब हाथ स्थिर हुआ तब एक मुहूर्तमें १४ पंक्तिकी एक लैटिन कविता उसने लिख दी। वह कविता वहांके कलकटर साहबके पास भेजी गई; उन्होने उसका अंगरेजी अनुवाद करके भेज दिया और लिखा

---

* बाबू उमाचरण दास, पीछे कूचबिहारमें इन्स्पेकटर हुए।

† बाबू गिरिशचन्द्र चौधुरी, पीछे जजराला हुए।

‡ ब.बू सञ्जीवचन्द्र चट्टोपाध्याय, पीछे रजिष्टार हुए।

कि यह कविता कविवर मिल्टनकी कविताके समान मालूम होती है, परन्तु उनकी कविताकी ग्रन्थावलीमें यह पाई नहीं जाती है।

पहिले पहिल हम लोगोंके चक्रमें जितनी मुक्तात्मा आती थीं प्रायः सब ही नीचे दर्जेकी थीं, क्योंकि उन सबसे हाल चाल पूछनेपर वे कहती थीं कि "अच्छा नहीं है।" चक्रमें बैठना शुरू करनेके एक बरस बाद एक दिन बसन्त ऋतुमें एक अच्छे दर्जेकी मुक्तात्मा हम लोगोंके चक्रमें आई। घरके सब दरवाजे बन्द थे, पर मालूम हुआ कि मानो दरवाजेके फांफरे होकर एक मनोहर ज्योति घुसकर घरमें आगई है। पहिले घर अन्धकारसे भरा था परन्तु उस ज्योतिके आनेके बाद एक तरहकी उजियाली घरमें छा गई और सब चीज देख पड़ने लगी। सब लोगोंका मन बड़ा खुश हो गया। मिडियम देखनेमें स्वभावहीसे बड़ा कुरूप था, किन्तु उस समय मालूम होने लगा कि उसके चेहरेके भीतरसे ज्योतिकी आभा बाहर निकल रही है। जीव रहित काठकी पुतलीकी तरह उसका शरीर होगया। आंखे दोनो खुली थीं, परन्तु पुतलिया गायब होगई थी। बदन हंसमुख मालूम होता था। वह कोई बाजा बजाने नहीं जानता था, परन्तु दोनो हाथोंसे टेबुलपर ठेका बजाने लगा और दोनो पावोंसे टेबुलके नीचे ताल देने लगा। फिर "वाहवा क्या बात है, क्या खूब" कहके शोर करने लगा।

प्रश्न। कृपा करके आज अपना परिचय बतलाइये, आपका नाम क्या है?

उत्तर। परिचय नहिं दूंगा आज सुनो सब कोई।
होगा नहिं उससे काम, कहा नहिं सोई॥
वाहवा-क्या बात है, क्या बात है (ठेका)

प्रश्न। आप अच्छे तो हैं?

उत्तर। पृथिवीपर कोई पाप नहीं करनेसे।
रहता हूं मैं दिन रात सदा सुखहीसे॥
वाहवा—क्या खूब, क्या खूब (ठेका)

प्रश्न। ईश्वरकी पूजा कैसे करनी चाहिये?

उत्तर। सुमन प्रेमका करो नीर श्रद्धाका लाओ।
भाव वेलकापत्र ईश पूजामें चढ़ाओ॥
वाहवा-क्या कहना है (ठेका)

इसी तरहसे एक घण्टेतक हजारों प्रश्न किये गये। प्रश्न मुंहसे बाहर भी होने नहीं पाता था कि उसका उत्तर छन्दोंमें मिलना आरम्भ होजाता था। हम लोगोंको अनेक उपदेश दिया; उसमें पाप-पुण्य स्वर्ग और नरक सम्बन्धी प्रश्न करनेसे उन्होंने विचित्र उत्तर दिया। उनकी रायसे आत्मा जन्मके समय सब बातोंसे मूर्ख रहती है; कलेवर जैसे जैसे बढ़ता जाता है वैसे ही वैसे उसका ज्ञान भी बढ़ता है। चिरोन्नति करना ही आत्माका भाग्य होता है, पर वह यह नहीं जान सकती है कि कब किस समयमें कितने दिनोंमें सम्पूर्ण होकर वह ज्ञानमय होगी। संसर्गके दोषसे बहुतसे आदमी बहुतसा अनुचित काम करते हैं, किन्तु उन कामोंके लिये न तो वह पापी हो सकता है और न वह उनके लिये अनन्त नरक भोग करता है। असम्पूर्ण देहसे सम्पूर्ण फल पानेकी आशा करना न्यायवान

लोगोंका काम नहीं है। इस लिये मैं यह कभी नहीं स्वीकार करूंगा कि हम लोगोंके परम दयालु जगत-पिता न्यायवान नहीं हैं। अगर अज्ञानताके कारण सन्तान दुष्कार्य करती है, तो पिता उसपर क्रोध कभी नहीं करते, उसे सजा नहीं देते, बल्कि उसे समझा बुझाकर उसकी अज्ञानता दूर करनेकी चेष्टा करते हैं; इस लिये मैं यह भी नहीं स्वीकार करूंगा कि हम लोगोंके ज्ञानमय पिता सुविज्ञ नहीं हैं। उस मुक्तात्माके कहनेसे यह भी मालूम हुआ कि जो आदमी इस आत्माकी उन्नतिमें रुकावट डालकर उसे अधोगामी करानेकी चेष्टा करता है वह नरहत्याकारीसे भी बढ़कर पापी है। अन्तमें उस आत्माने कहा "तुमलोग बराबर ऐसे ही चक्र लगाकर बैठा करो, मैं कभी कभी आकर तुम लोगोंको उपदेश दिया करूंगा। सत्यकी खोजमें अगर तुम्हें कुछ आपत्ति विपत्ति भी भोगनी पड़े तो कुछ भय मत करना। और कुछ नहीं कहूंगा, अब चलता हूं. नमस्कार, आनन्दमय तुम लोगोंको आनन्द रखें।"

घर और मिडियमके शरीरसे बिलकुल ज्योति जाती रही। हम लोग रत्नपाकर भी उसे यत्नपूर्व्वक रख नहीं सके, ऐसा ही कह कर बहुत शोक करने लगे। यद्यपि उन्होंने अपना परिचय हम लोगोंको नहीं बताया, तौभी उनकी बातचीत और पद्योंके शब्दोंसे साफ मालूम होगया कि वह बङ्गाली थे। तन्द्रा भंग होनेके बाद मिडियमने कहा चक्रमें बैठनेके थोड़ी देर बाद एक बहुत बड़ा लम्बा शरीरवाला ज्योतिमय आदमी

दक्षिण दरवाजा होकर घरमें आया और उसके बाद मुझे नीद आगई, कुछ नहीं देख सका।

इस दिनसे हम सब आदमी एक मन, एक तान और एक सुरसे यह गाकर आन्तरिक भक्ति प्रगट करके चक्रमें बैठते थे,—

तुम्हरी पूजा करनेको हम सब आये।
बैठे हैं दीननाथ! प्राण मीलाये॥
भक्ति रुदन जल श्रद्धा बेलकि पाती।
हृदय भक्तिकी कली तुम्हे दी जाती॥
बर चाहैं यह एक समति सब छनमें।
स्थिर रहे प्रेम तुम्हारे ऊपर निज मनमें॥
मन रहे सदा आनन्द मलिन नहिं होवे।
भिक्षा यह चाहौं नाथ! कृपा अब होवे॥

आत्म हत्या।

जो लोग आत्महत्या करके मरते हैं वे मरनेके बाद कुछ दिनोतक नष्ट बुद्धि होकर रहते हैं। एक दिन चक्रमें बैठते न बैठते मिडियमका हाथ हिलने लगा। हाथमें पेन्सिल देनेसे अंगरेजीमें एक बड़े आदमीका नाम उसने लिख दिया।

प्रश्न। आपका निवास कहां था?

उत्तर। फलानी जगह।

प्रश्न। आपके वंशमें क्या कोई जीता है?

उत्तर। हां। मेरी बूढ़ी मा और स्त्री (फलानी) जीती हैं।

प्रश्न। और वे सब बात कहनेकी जरूरत नहीं। अच्छा, अगर आप उसी पुरुषकी आत्मा हैं तो क्या मुझे पहचानते हैं।

उत्तर। देखा, तुम्हारे भाई नवीन बाबू मेरे साथ हैं। तुम क्या हमलोगोंकी परीक्षा लेनी चाहते हो? मेरे शरीर त्याग करनेके चार बरस पहिले तुम्हारे बरामेटके मकानके कोठेपर एक घरमें तुम्हें पास बैठाके मैंने भूगोलका यह-प्रश्न पूछा था और तुमने तब यह-उत्तर दिया था।

मैंने देखा कि यह बात ६५।२६ बरसोंकी है। मुझे छोड़कर वहांके और कोई आदमी उस बातको नहीं जानता था। यह मेरे मझले भाईके परम दोस्त थे। दोस्ती ऐसी गाढ़ी थी कि दो तीन बरसोंतक दोनो आदमी एक ही जगह भोजन करते थे, एक ही जगह सोते थे, और एक ही जगह टहलने जाते थे। और उसी समय मुझे देखकर अपने पास बुलाकर बैठा लेते थे और हंसी खुशी करते थे। उनकी ये सब बात सुनकर मेरे मनमें और कोई सन्देह नहीं रहा।

प्रश्न। आपके नामसे जो मुकद्दमा हुआ था, उस निष्ठुर काममें क्या आप सचमुच कसूरवार थे?

उत्तर। तुम्हें क्या ऐसा ही विश्वास है?

प्रश्न। तब आपने अफीम खाकर क्यों आत्म हत्या की?

उत्तर। शराब-शराब—शराब। दिन रात शराब पीते थे। मुकद्दमा शुरू होनेपर सब लोग मुझे हराने लगे। डरसे कलकत्ते आया; वहां भी जिससे राय

पूछते थे वह सिवाय डर दिखलानेके और कोई बात नहीं कहता था। शराब पीकर इस डरको भूलजानेकी जितनी ही मैं कोशिश करता था, उतनाही वह डर और भी प्रचण्ड होने लगा। अन्तमें मुझे यह निन्दनीय काम करना पड़ा।

प्रश्न। आपने जो वसीयतनामा लिखा था वह किस अवस्थामें लिखा था।

उत्तर। मेरे पृथिवीके कामोंके बारेमें और कोई प्रश्न मत पूछो।

प्रश्न। माफ कीजियेगा। अब मैं वैसा प्रश्न नहीं करूंगा। अब यह पूछता हूं कि जब आपकी आत्मा आपके शरीरसे अलग हुई थी, उस समय आपको कैसा मालूम हुआ था। कृपा करके यह बात मुझे बतला दीजिये।

उत्तर। मैंने देखा कि मेरा शरीर नीचे पड़ा हुआ है, और मैं उससे कुछ ऊंचे पर खड़ा हूं। तब मैंने मनमें सोचा, "यह क्या! मानो ज्ञानबुद्धि एक दम अलग हो गई।" लोग सब और डाक्तर मेरे शरीरको छू छा कर रहे थे और उठाने पठानेके फिक्रमें थे। एक बार इच्छा हुई कि फिर शराब पीऊं; बोतलके पास गया, पर शराब पी न सका। इसी समय दो मुक्तात्मा आईं और मुझे ले गईं। किन्तु वे मुझे किस जगह होके कहां ले गईं सो मैं नहीं कह सक्ता हूं। इस तरहकी आच्छन्न अवस्थामें मैं कब तक रहा सो मैं नहीं जानता हूं। जब कभी मैं किसी मुक्तात्माके पास जाता था तो वह मुझसे मुह

फेरकर और किसी तरफ चली जाती थी। इस तरहसे कई बरस बीते। फिर मेरी दशा बदलने लगी, जिन दो आत्माओंने मुझे बुला लिया था वे सदा उपदेश देती थीं। मैं अपनी स्त्रीको बहुत प्यार करता था, और अपनी बड़ी लड़कीको बड़ा मानता था। इस लिये मैंने पहिले यही खोजा कि वे कहां गईं। मायाके कारण उन लोगोंके पास बहुत जाता था और दोनो मुक्तात्मा गुरुओंने जिस तरहका उपदेश मुझे दिया था उसी तरहकी बातें मैं अपनी स्त्रीसे कहता था। तब उन्होंने मेरे धनसे जैसे जैसे दान पुन्न करना शुरु किया, वैसे वैसे मेरी आखोंकी पट्टर मानो खुलने लगी। इस समय अब मैं अच्छा हूं, खास कर तुम्हारे भाईके आनेके दो बरस बादसे हम दोनो एक ही जगह सुखसे हैं।

प्रश्न। आप किसीको कोई बात कहा चाहते हैं?

उत्तर। नहीं; पर तुम इतनी बात सबने कह सक्ते हो कि मनुष्यकी म्रत्यु नहीं होती है।

इसी तरहसे वह एक घण्टे तक बातचीत करके चले गये। इस घटनाको हुए १५ बरस हुए। उस समय इन बातोंको मैंने एक किताबमें लिख रखा था, परन्तु न जाने मेरी विपदके समयमें वह किताब कहां खो गई।

धर्माधर्म्म विश्वास।

धर्म्मके सम्बन्धमें मरनेके समय जिसका जो विश्वास रहता है, मरनेके बाद बहुत दिनोतक उसका वह

विश्वास न चल सक्ता है। एक दिन करीब १० बजे रातको मैं, दो आदमी ब्रह्मसमाजी और एक ब्राह्मण एक जगहके डाकबंगलेकी कोठरीमें बैठकर चक्र बनाया। थोड़ी ही देरमें एक ब्रह्मसमाजीका हाथ हिलने लगा। ब्रह्म समाजी महाशय उस जिलेके प्रधान मुन्सिफ थे, उनको अध्यात्म विज्ञानके ऊपर कुछ भी विश्वास नहीं था। वह भी एक मिडिमय थे परन्तु कभी बेहोश न होते थे। अपना दहिना हाथ हिलते देखकर उन्होंने कहा "अब देखो, यह क्या! मेरे हाथमें एक पेन्सिल दोओ तो।" हाथमें पेन्सिल और एक स्लेट देनेसे उन्होंने एक नाम लिख दिया। नाम पढ़कर वह बड़े अचम्भे हुए। वह नाम उनके दादेका था। बोले "गत ५। ६ बरसोंमें मैंने तो इनका नाम एक बार भी याद न किया था।

ब्रह्म समाजी। आपने क्या समझकर यहां आना चाहा?

उत्तर। तुम्हे देखने आया हूं।

प्रश्न। आप क्या अभीतक माला खटखटाते हैं?

उत्तर। हां; करते हैं और उसीसे बड़ा सुख मिलता है।

राम राम सीता राम सीता राम कहिये।"

ब्रह्म समाजी महाशयने इसे अपने धर्मसे खिलाफ वा लड़कोंका खेल समझकर हाथसे पेन्सिल फेंक दिया और बोले "उठो, रात बहुत बीत गई, मैं कुछ समझ नहीं सक्ता हूं।" हम लोगोंको तो इच्छा थी कि वह कुछ और ठहरते परन्तु वह किसी तरहसे राजी न हुए।

सब लोग एका एकी घरसे बाहर होने लगे। मिडियम महाशय सबसे पीछे थे, जब वह दरवाजेके पास आये तब उनका दहिना हाथ चौकठमें ठक ठक ठोकर मारने लगा। हम लोगोंने उनका हाथ पकड़ लिया, परन्तु उनके हाथका हिलना और दरवाजमें खट खट करना किसी तरहसे रुक न सका। आखिरकार वह फिर जाकर बैठे और हम सब भी जा कर बैठे। पहिलेहीकी तरह उनके हाथमें पेन्सिल दिया गया, परन्तु देखा गया कि उनका हाथ कई जगह फूट गया था और लोहू बह रहा था।

प्रश्न। अब फिर हम लोगोंको क्यों बुलाया है?

उत्तर। कसूर माफ कीजियेगा, गलती हुई थी। इस जगह एक ब्राह्मण बैठे थे, मैंने उन्हे पहिले नहीं देखा था।

प्रश्न। ब्राह्मण बैठे थेतो इससे क्या?

उत्तर। मैं प्रणाम करनेको भूल गया था, सो अब प्रणाम करता हूं।

प्रश्न। अब हम लोग जायं?

उत्तर। हां जाओ। सीता राम सीता राम सीता राम कहिये।

सब लोग अवाक होकर अपने अपने घर गये।

व्यवसाय।

पृथिवी पर जिसका जो व्यवसाय रहता है, परलोक जानेपर भी कुछ दिनोतक उसकी उसी कामोंमें इच्छा

और रुचि रहती है। ६।७ बरस हुए कि मैंने अपनी स्त्री और लड़कियोंको "हारमोनियम" बजाना सिखलानेके लिये एक बूढ़े ब्राह्मणको मुकर्रर किया था। सन १८७८ सालके मई महीनेमें उस ब्राह्मणकी मृत्यु हुई। उसके मरनेके तीन महीना बाद मेरी स्त्री एक दिन शामको हारमोनियम बजा रही थी। उस घरमें और कोई नहीं था। पर आंख उठाकर देखनेसे उसे मालूम हुआ कि बाजेकी बांई ओर बाजा पकड़े हुए बूढ़े शिक्षक महाशय खड़े हैं। पहिले तो उसे भय हुआ, परन्तु एक दम वह चिल्ला न उठी केवल बोली "पण्डित जी महाराज!" ब्राह्मणकी सुक्ष्मात्माने कोई उत्तर नहीं दिया, परन्तु मुसकराकर वहांसे चल और दरवाजेई तक आते आते हवामें मिल गई। इसके ठीक एक बरस बाद एक दिन सुबहको मेरी छोटी लड़की और मेरा छोटा लड़का दोनो "प्लाञ्चट"* पकड़के बैठे। मैं और मेरा बड़ा लड़का दोनो वहांपर मौजूद थे। प्लान्चेटने घूमते घूमते बूढ़े शिक्षकका नाम लिख दिया।

लड़कीने प्रश्न किया। पण्डितजी महाराज! आप कैसे हैं?

---

* प्लान्चेट पानकी शक्लकी एक लकड़ीकी कल होती है। नीचे एक तरफ छोटे छोटे दो टके रहते हैं। और दूसरी तरफ एक छेद और उसमें एक लकड़ीकी पेन्सिल रहती है। अकेले वा दो आदमी आमने सामने बैठ कर दोनो हाथोंकी उंगलियोंकी फुनगीसे अगर उसे थामहे रहें तो वह खुद बखुद घूमने लगता है। उस समय अगर कोई सुक्ष्मात्मा वहां मौजूद रहे तो प्रश्न करनेसे वह उसका उत्तर लिख देता है।

उत्तर। अच्छा हूं। धीरो (लड़कीका नाम) देखो बेटी, तुम लोगोंके पास आनेकी मेरी बड़ी इच्छा रहती है।

प्रश्न। आप एक नया गीत तो कृपा करके लिख दीजिये।

प्लान्चेट भों भों करके घूमने लगा और एक नया गीत लिख दिया।

प्रश्न। इस गीतको बाजेपर मिला दीजिये। (हार-मोनियमकी बोलीसे ताल मान, सुर मिलाकर ठीक दिया गया)।

उन्होंने तब परमार्थिक विषयके सम्बन्धमें भी एक गीत लिखा, पर वह बाजेके साथ मिलाया न गया।

नास्तिक।

क० नामके एक आदमी कई विद्याके जाननेवाले महा पण्डित थे। वह जबतक पृथिवीमें रहे, ईश्वरको नहीं मानते थे। उनके मरनेके कई बरस बाद उनकी आत्माको बुलानेसे वह आये और लिख दिया "बड़ा कष्ट है—दुख अब सहा नहीं जाता।"

प्रश्न। आपकी दशा जाननेके लिये आपको बुलाहट यहां हुई है। ऐसे बुलाये जानेसे क्या आप रञ्ज होते हैं?

क०। बड़ा कष्ट होता है—फिर ऐसे मत बुलाइयेगा।

प्रश्न। आपने क्यों फांसी लटककर अपना प्राण-त्याग किया था?

क०। आशा छोड़कर जीवन धारण करनेमें असमर्थ होकर मैंने इस तरहका गर्हित काम किया था। पर यहां आनेसे मालूम हुआ कि यहां मेरे रहनेकी जरूरत नहीं थी। परकालमें मुझे विश्वास नहीं था, जानते थे कि पृथिवीहीमें मामला खतम होजाता है।

प्रश्न। मरनेके समय आपके मनमें क्या भाव हुआ था?

क०। पहिले तो कुछ भी नहीं हुआ। तब मालूम हुआ कि अन्धकार होकर कहीं चले जाते हैं। अब सो भाव चला गया है। पर और कितना कष्ट भोगना होगा सो नहीं कह सक्ते हैं।

प्रश्न। आप क्या अपने भाईसे कभी मुलाकात किया चाहते है?

क०। नहीं नहीं। सुखके समयमें सुख बांट लेना अच्छा होता है। मेरे इस दुखकी बात वह जानने न पावें।

प्रश्न। आप जिस समाजमें रहते थे उसमेंके कई आदमी ईश्वरको नहीं मानते हैं, आप उन लोगोंको कुछ कहा चाहते हैं?

क०। उन लोगोंसे कह देना कि मुझ अभागेकी दशा देखकर वे लोग परकालमें विश्वास करें।

प्रश्न। आपको किस तरहकी तकलीफ है सो कह सक्ते हैं?

क०। बहुतसा बतला सक्ते हैं। पृथिवीमें रहनेके समयमें अगर तुम्हारे विश्वासके विरुद्ध कोई बात सत्य ठहरजाय तब तुम्हारा घमण्ड मिट्टी मिलकर मनमें

जना कष्ट होगा, उससे सौगुना ज्यादे कष्ट मुझे होता है। मैंने अपनी समूची जिन्दगीमें सबको इसी वहममें कायल किया है कि परकाल कुछ नहीं है। किन्तु इस समय वही परकाल देख रहा हूं। लज्जासे किसीके नजदीक मुह नहीं दिखला सक्ते हैं। और कहां तक कहें, अदनेसे अदने जान पहचानेके खेतिहरकी मुक्तात्मासे मुलाकात होनेपर हमे अपना मुहछिपाके भागना पड़ता है। सुनते हैं, भगवानके ऊपर लौ लगानेसे यह दशा शीघ्र ही दूर होजाती है। अब देखते हैं कि उनकी चिन्ता और ध्यानसे बड़ा सुख होता है।

सुखी मुक्तात्मा।

नीचे लिखी मुक्तात्माकी कथा आलेन करडेककी "स्वर्ग और नरक" नामक पुस्तकसे उद्धृत करते हैं—

फ्रान्सीसदेशकी राजधानी पेरिस शहर है। मुक्तात्माओंको बुलानेके लिये वहां बहुत दिनोंसे एक अध्यात्मविज्ञान सभा है। उस सभामें वहांके बहुतसे बड़े बड़े आदमी सभ्य हैं। उन लोगोंमें बहुतसी स्त्रीयां और पुरुष मिडियम हैं। सर्कल वा चक्रमें बैठकर वे लोग पहिले भगवानसे प्रार्थना करते हैं, हे जगदीश सर्व्वशक्तिमान! तुम्हारे अनुग्रहसे आज हम लोगोंको एक अच्छी मुक्तात्मा आकर उपदेश दे, और कोई बुरी मुक्तात्मा परेशान करनेको न आने पावे। फिर ईश्वरका नाम लेकर कहते हैं "हम लोग फलाने आदमीको

आत्माको बुलाते हैं।” इस तरहसे वे लोग अपनी इच्छाके अनुसार खास खास लोगोंकी मुक्तात्माओंको बुलाते हैं।

मानसन साहब नामके एक आदमी “पेरिस अध्यात्म विज्ञान सभाके” सभ्य बहुत दिनोंसे थे। मरनेके एक बरस पहिले वह बीमार पड़े और उससे उन्हें अनेक प्रकारका दुःसह दुःख हुआ था। मरनेका समय नजदीक जानकर उन्होंने उस सभाके सभापतिको एक चिट्ठीमें लिखा कि मेरे मरनेके बहुत जल्द बाद मेरी आत्माको आप लोग बुलवाइयेगा; और किस किस ढंगसे आत्मा शरीरसे मुक्त होती है और उसके सम्बन्धमें जो सब घटनायें होती हैं उन सबके विषयमें अधिक पूछपाछ करवाइयेगा।

सन १८६२ सालकी ३१ वीं अप्रैल तारीखको साहबके परलोक गमनके थोड़ा ही बाद, कई सभ्य उनके घरमें जा हाजिर हुए। उस समय उनकी लाशको दफन करनेका बन्दोबस्त हो रहा था। जिस घरमें साहब मरे थे उसी घरमें सब लोग सर्कल वा चक्र बनाके बैठे। सबसे पहिले ईश्वरकी आराधना करके साहबकी आत्मा बुलाई गई। साहब भी बहुत जल्द आये।

प्रश्न। प्यारे भाई—तुम्हारी इच्छाके अनुसार इस समय हम लोगोंने तुम्हें बुलाया है।

उत्तर। भगवानकी स्तुति करो, उन्हींकी कृपासे मैं तुम्हारे पास इस समय आ सका हूं। किन्तु मैं बड़ा ही दुर्ब्बल हूं, थर थर कांप रहा हूं।

प्रश्न। परलोक गमन करनेके पहिले तुम्हें यहां बड़ा ही कष्ट हुआ था, इस समय भी क्या तुम्हें वे सब कष्ट मालूम होते हैं? दो दिन पहिलेकी अवस्थासे आजकी अवस्था मिलाकर कहो तो कि तुम्हे कैसा मालूम होता है?

उत्तर। पहिले जितने कष्ट थे वे सब इस समय कुछ नहीं हैं। इस समय बड़ा सुख मालूम होता है। मेरा शरीर नया होगया है। जन्म ही नया मालूम होता है। मिट्टीके शरीरसे आत्मा किस तरहसे निकली सो मैं पहिले कुछ नहीं समझ सका। इस समय बहुतसी आत्मायें अज्ञान अवस्थामें रहती हैं. किन्तु मरनेके पहिले मैंने और मेरे प्रिय लोगोंने भगवानकी प्रार्थना की थी कि मरनेके बाद मुझे बातचीत करने की शक्ति बनी रहे और भगवान ही की कृपासे मुझे वह शक्ति इस समय है।

प्रश्न। मरनेके कितना समय बाद आपको होश हुआ था?

उत्तर। करीब आधा घण्टा। इस लिये भी मैं भगवानका गुनानुवाद करता हूं।

प्रश्न। आप कैसे जानते हैं कि आप इसी पृथिवीसे वहां गये हैं?

उत्तर। इस बारेमें मुझे कुछ भी सन्देह नहीं है। जब मैं पृथिवीमें रहता था तब अपनी जिन्दगी सदा परोपकारमें बिताता था। इस समय आत्मा-भूमिमें रहकर सत्यानुसन्धान। प्रचार करनेके लिये अध्यात्म विज्ञान शास्त्र मनुष्योंमें फैलाऊंगा। मैं अच्छा था, इस लिये अब इस समय सबल हुआ हूं—मानो

नया कलेवर मिल गया है। अगर मुझे इस समय आप देखिये तो फिर उस गलचटके दतटुट्टे बूढ़ेको खयाल न करगे। इस आत्माभूमिमें वह मासका लोथड़ा (देह) ढोये फिरना नहीं होता है। यह असीम विश्व-जगत मेरा घर है; और उसी विश्वपिताके समान सम्पूर्ण होकर मेरा भविष्यत भाग्य है। मुझे अपनी सन्तानोंसे बात-चीत करनेकी इच्छा होती है, शायद वे मेरी यह अवस्था देखकर अपना विश्वास बदल सकें।

प्रश्न। तुम्हे अपनी यह म्टत देह देखकर मनमें कैसा भाव होता है?

उत्तर। आहा!—शरीरतो बिलकुल मिट्टी होजा-यगा, किन्तु इसीके द्वारा मैं आप लोगोंसे परिचित था। मेरी आत्माका बासस्थान, इस शरीरने मेरी आत्माको पवित्र करनेके लिये कितने दिनोतक कैसा कैसा कष्ट सहा है! देह! तुम्हारी ही बदौलत मुझे आज यह सुख मिल रहा है।

प्रश्न। आपको क्या मरनेके समयतक ज्ञान था? तब आपके मनका भाव कैसा था?

उत्तर। हां था। उस समय मैं चर्म्म चक्षुके द्वारा न देख सक्ता था, परन्तु ज्ञान चक्षुके द्वारा सब कुछ देखता था। पृथिवीके सब काम मनमें उदय हाने लगे। ठीक अलग हानेके समय आत्मा दृष्टिहीन हुई। उस समय मालूम हुआ कि किसी अनजान शुन्याकार होकर चल रहा हूं। फिर थोड़ी ही देरमें एक अद्भुत आनन्दमय स्थानमें मैं पहुंच गया। सब दुःख भूल गया, मन एक अपार आनन्दमें डूब गया।

प्रश्न। आप क्या जानते हैं—(अभूची बात मुंहसे बाहर भी नहीं हुई थी कि उत्तर लिखा जाना आरम्भ होगया।)

उत्तर। जो लिखे हो सो अवश्य अवश्य होगा। श्मशान और मृतक देखकर लोगोंको परकालकी याद-गारी और नास्तिकोंके मनमें भय उत्पन्न होता है। इस लिये धर्म्म सम्बन्धमें मेरी जो कुछ राय है उसे सब लोगोंपर विदित कर देओ, क्योंकि इससे बहुतसा उप-कार हो सक्ता है।

फिर जब मृतक मिट्टीके नीचे रखा जाने लगा तब उन्होने लिखा "भाइयो! मृत्युसे भय मत करना। पृथिवीके सब दुःखोंमें धैर्य्यावलम्बन करके सत्य पथमें समय बितानेसे असीम सुख अपने साम्हने देखोगे। सत्यके प्रचारमें प्रवृत्त रहो। यह एक बात सदा मनमें रखना—पृथिवीमें सब सुखोंसे वेष्टित रहनेकी इच्छा करनेसे और लोगोंको सुखसे बञ्चित करना होता है; सो यदि सचमुच सुखी होनेकी खाहिश हो तो दूसरोंको सुखी करो।" उस दिन इतना ही कहकर मुक्तात्मा चली गई।

पेरिस अध्यात्म विज्ञान सभा, २५ अप्रैल सन १८६२।

प्रश्न। मरनेके समय क्या बड़ा कष्ट होता है?

उत्तर। जरूर कष्ट होता है। पृथिवीमें रहनेका समय केवल दुःखका समय है; और मृत्यु उसी दुःखकी पूर्णाहुति है। आत्मा शरीरसे अलग होनेके पहिले, समूची देहसे तेज खींच लेती हैं। इसीको सब लोग मरनेका कष्ट कहते हैं। इस खिचावमें आत्मा अचेत होजाती है।

यह बात सब आत्माओंके साथ नहीं होती। हम लोगोंने कई आत्माओंको देखा है कि शेष हवासे बातचीत करते करते बिना कष्टके देह छोड़कर अलग होगई हैं।

प्रश्न। अच्छा, शरीरसे अलग होनेके कुछ पहिले आपकी आत्मा आत्मा-भूमिको देख सकी थी?

उत्तर। इस बातका जवाब पहिले ही दे चुका हूं। मैंने वहां पहुंचकर अपने आत्मीय सम्बन्धियोंको देखा। उन लोगोंने बड़ी खुशीके साथ मेरा स्वागत किया। शरीरके निरोग और बलवान होजानेसे मैं खुशी खुशी उन लोगोंके साथ असीम शून्य होकर चला। रास्तेमें मैंने जिन जिन पदार्थोंको देखा उनकी अनूप रूप और आश्चर्य सौन्दर्य्यका वर्णन करनेके योग्य संसारमें कोई भाषा नहीं है। सिर्फ यही एक बात समझ लो कि जिसे तुम लोग पृथिवीपर सुख कहते हो वह सिर्फ उपन्यास मात्र है। तुम लोगोंके बड़े बड़े कवियोंको कल्पनासे भी वहांके सुखके एक छोटेसे छोटे टुकड़ेका अनुभव नहीं हो सक्ता है।

प्रश्न। मुक्तात्मा सब देखनेमें कैसी होती हैं? उन लोगोंको भी मनुष्योंहीकी तरह हाथ, पांव, आंख, मुंह होते हैं?

उत्तर। हां है, ठीक आदमीहीकी तरह है। भेद इतना ही है कि मनुष्योंका शरीर बहुत मोठा और बदसूरत होता है और बुढ़ापेसे वा शोक दुःखसे और भी बुरा होजाता है; परन्तु आत्मा-शरीर बहुत सूक्ष्म है। आसानीसे चल फिर सक्ता है, और किसी तरहसे बुढ़ापा आदिके पाले नहीं पड़ता है। हम लोगोंकी

इच्छा होनेसे जहां चाह वहीं रह सक्ते हैं। यह देखो, तुम्हारे पास ही मैं इस वेले खड़ा हूं, तुम्हारे हाथपर हाथ रखता हूं पर तो भी तुम कुछ मालूम नहीं करते हो। हम लोगोंकी आंखे सब द्रव्योंके भीतरकी और बाहरकी बातें देख सक्ती हैं। हम लोगोंमें स्त्री-पुरुष नहीं होते।

प्रश्न। आप लोग किसीके मनकी बात कैसे जान लेते है?

उत्तर। वह बात तुम लोग जल्द नहीं समझोगे। धीरज धरके संसारमें धर्म्म करो, तब सब कुछ समझ सकोगे। तुम लोगोके मनकी चिन्ता चारोंतरफकी हवामें अंकित होजाती है, और उन्ही चिन्होंको मुक्तात्मा लोग पढ़ लेते हैं।

द्वितीय अध्याय यहींपर समाप्त करते हैं। इसके बादके अध्यायमें मुक्तात्माओंको बुलानेकी रीति लिखेंगे। जन्मके समयसे लेकर मरनेके समय तकको इहकाल,और मरनेके बादसे अनन्त उन्नतिके समयतकको परकाल कहते हैं। लेकिन इहकाल और परकाल स्वतन्त्र स्वतन्त्र काल नहीं हैं; दोनो एक ही बड़े कालके दो भाग हैं। इस लिये, पृथ्वीपर आनेके समयसे लेकर अनन्त उन्नतिके समयतकको आत्माका जीवन काल कहते हैं। इस कालकी समाप्ति नहीं है, इसी लिये आत्मा अमर है। चिरोन्नति ही आत्माका भाग्य है। सैकड़ो-बार सोनेको जलाकर जैसे सोनार लोग सोनेको चोखा बनाते हैं, वैसे ही मनुष्योंकी आत्मा लाखों शिक्षा पाकर धीरे धीरे उन्नत होती है। ज्ञान-पर्व्वत असीम और

असंख्य है ; एककी चोटी पर चढ़नेसे और भी कई ऊंची ऊंची चोटियां उसकी चारों ओर देख पड़ती हैं। इस तरहसे अनन्त सीढ़ियोंपर चढ़के जितना ऊपर जाओगे, आत्मा उतनी ही उन्नत होगी, और आत्मा-शरीर उतना ही ज्यादे तेजमय और सूक्ष्म होगा।

इन सबके अन्तमें क्या होता है, सो कोई नहीं कह सक्ता है। ऊंचे दर्जेकी मुक्तात्मायें अपार आनन्द और असीम सुखकी बात कहा करती हैं. किन्तु वह आनन्द क्या है, वा वह सुख कैसा होता है सो हमलोग किसी तरहसे नहीं जान सक्ते हैं। मुक्तात्मा होनेहीसे जो चाहो कि कोई सर्व्वज्ञ हो जाय, सो नहीं हो सक्ता। खास करके जो मुक्तात्मायें हम लोगोंके पास बराबर आती हैं, उन लोगोंका ज्ञान बुद्धि हम लोगोंसे बहुत अधिक नहीं रहता है। इस लिये हम लोग नहीं जान-सक्ते हैं कि सबके अन्तमें क्या होता है। हां. अध्यात्म विज्ञान जाननेसे इतनी बातें बखूबी मालूम होंगी कि परकाल अवश्य है, आत्मा अमर होती है, और आत्मा भूमि अत्यन्त सुख देनेवाली जगह है। ४० बरसकी एक घटना है - क्षेत्रनाथ बसु नामका एक कायस्थ किसी दिहातसे डाक्तरी पढ़नेके लिये कलकत्ते आयाथा। हैजेकी बीमारीमें गिरफतार होकर वह बीमारीके कष्टसे— और उस समय डाक्तर लोग इस बीमारीमें समूची देह पाछ देते थे, उसकी पीड़ासे—वह छटपट करता था। क्षेत्रनाथ अचानक ऊपर देखने लगा। उसके रोवें खड़े होगये। मुंहपर हंसी आ गई, देह लाल मालूम होने लगी—वह बोल उठा "देखो, देखो, कैसा सुन्दर,

कैसी अपूर्व्व शोभा, वाहवा !” मैंने पूछा “क्या—क्या ?” “देखते नहीं क्या ही बढ़ियां, वाहवा वाह—”। उसी समय उसे उर्द्धस्वास आरम्भ हुआ और बहुत जल्द मर गया। उस समय मैंने समझा था कि यह भ्रम बोल रहा है, पर अब जानता हूं कि उसने दूरहीसे आत्मा-भूमिकी कुछ शोभा देखकर ऐसा कहा था।

तीसरा अध्याय।

अध्यात्म विज्ञान।

पुराने इतिहासोंको पढ़नेसे साफ ही मालूम होता है कि किसी समयमें आर्य्य लोगोंने समस्त भारतवर्षकी जय करके अतुल सुखके अधिकारी हुए थे। पीछे उन लोगोंको मालूम हुआ कि सुखकी इच्छा ही सचमुच सुख है,—एक बार सुख मिलनेसे उसमें फिर सुख नहीं मालूम होता है। तब वे लोग बिलकुल सांसारिक सुखोंका परित्याग करके चिरस्थायी सुखकी खोजमें प्रवृत्त हुए और तपस्या तथा योगाभ्यास करनेलगे। लड़ाई झगड़ा, राजकाजका देखना सुनना, इत्यादि कामोंको क्षत्रियोंके हवाले करके स्वयं फल मूल आहारके साथ परकाल और परमेश्वरकी चिन्ता करने लगे। वे लोग ध्यानके बलसे भूत, भविष्यत, वर्त्तमान सब कुछ जान सक्ते थे। उन लोगोंकी आत्मायें शरीरको छोड़कर नाना स्थानोंको जा सक्ती थीं, और अपनी इच्छानुसार शुभ-आत्माओंके साथ बात चीत कर

सक्ती थीं। उस समयमें इस देशमें अध्यात्म विज्ञानकी चर्चा पहिले पहिल जारी हुई थी। रामायण, महाभारत और भूतडामर आदि सब तन्त्रसारोंमें इसके अनेकानेक प्रमाण पाये जाते हैं। और साधारन लोगोंके विश्वासके लिये उन लोगोंने गांव देवता, वन-देवता, ब्रह्मदेवता, गया आदिकी सृष्टिकी थी। उन लोगोंके वंशमें बहुतसे लोगोंके हीन वीर्य्य होनेसे वह शक्ति एक दम लोप ही होगई. और सांसारिक खोटे सुखोंकी खोजमें प्रवृत्त होनेसे योगशास्त्र भी भूल गये। धीरे धीरे यह शास्त्र इस देशसे एक दम लोप होगया। आजकल समूचा देश खोजनेसे एक भी सच्चे योगी शायद न मिलेंगे।

आजकल हम लोगोंकी पृथिवीकी दूसरी तरफ—जिसे पाताल लोक कहनेमें कुछ हर्ज नहीं हो सक्ता—एक नई जाति प्रगट हुई है। उस जातिवाले बहुत थोड़े समयमें अतुल ऐश्वर्य्य और क्षमताके अधिपति और सभ्य जातिमें सभ्यताके लिये सबके अफसर, कहे जाते हैं। इन लोगोंका नाम है अमेरिकन। हिन्दुस्तानके पहिलेके आर्य्य जातिवालोंकी तरह, उन लोगोंको भी पृथिवीका अतुल सुख अच्छा नहीं लगता है। यहांकी अध्यात्म विज्ञानकी बुझी बत्ती वहां और भी दूनी ज्योतिके साथ जल उठी है। आर्य्य सन्तान लोग इन सब बातोंको सर्व्व साधारनसे छिपाये रखते थे, किन्तु अमेरिका वालोंने इन बातोंको सबके सामने प्रगट कर दिया है, इस कारण चारोंतरफ बड़ी धूम मच गई है। जिस कारणसे यह वहां पहिले

पहिले जाहिर हुआ था उसका बिलकुल हाल नीचे लिखते हैं।

ठीक ३२ बरस हुए होंगे—सन १८७२ ई० में अमेरिकाके न्यूयौर्क शहरके किनारेमें फौक्स नामके एक आदमीने एक घर किरायेपर लिया था। वह घर तो बहुत बढ़िया था परन्तु लोग उसे भुताहा वा भूतोंके रहनेका घर कहके उसके पास न जाते थे। उसके किरायेपर लेनेके बाद घरके भीतर जगह बजगह कई तरहके शब्द होने लगे। उस शब्दको सुनकर पहिले उन लोगोंने समझा था कि चूहा मूहा कहीं होगा, किन्तु दोही चार दिनमें मालूम होने लगा जैसे सब कोठरियोंमें आदमी घूम फिर रहे हों। फौक्स साहबको दो लड़कियां भी थीं, एक ८ बरसकी और दूसरी १७ बरसकी। एक दिन उनकी माने देखा कि बड़ी लड़कीके पैरपर एक बहुत बड़ा कुत्ता बैठा है, किन्तु जब वह उस कुत्तेके पास गई तब वह हवामें मिल गया; घरकी कुर्सी, मेज, आदि सब चीजोंपर मानो उछलने कूदने लगा। "ठक ठक" दिन दिन बढ़ने लगा। कभी कभी ऐसा होता था कि मालूम हुआ कि दरवाजेपर कोई किवाड़में धक्का दे रहा है। परन्तु दरवाजा खोल कर देखनेसे कुछ नजर नहीं आता था, पर फिर जब दरवाजा बन्द कर दे तो वेही शब्द फिर आने लगें। अड़ोसी पड़ोसीकी सहायतासे फौक्सने घरकी चारों तरफ पहरा बैठाया, लेकिन उपद्रव कुछ भी न घटे। लड़कियां जितनी बार हाथसे ताली बजाती थीं, उतनी बार कोई दूसरा भी ताली बजा देता था। जब लड़-

कियां बोलती थीं तब वही बात कोई दूसरा भी बोल देता था। इन सब बातोंको देखकर लोगोंने निश्चय किया कि उपद्रव करनेवाला आदमी लड़कियोंकी बात जरूर समझता है और वह समझ बूझ भी सक्ता है। ऐसा निश्चय करके लड़कियोंसे उपद्रवीको कहवाया गया कि तुम्हे जो कुछ कहना है सो समझा देओ। हम लोगोंकी जो बात तुम समझ लेओ उसपर एक बार "ठक" शब्द कर देना, जो न समझो उसपर दो बार "ठक" शब्द करना और तीन बार "ठक" करनेसे हम समझेंगे कि तुम कुछ निश्चय ही नहीं कर सक्ते हो। इतनी बात सुनकर उपद्रवीने एक बार ठक शब्द किया, अर्थात कहा कि मुझे ये बातें पसन्द हैं।

तब ये लोग उससे बातचीत करनेके फिक्रमें हुए। अङ्गरेजी वर्णमाला पढ़ने लगे। जब किसी अक्षरका नाम होनेसे "ठक" शब्द हो तो उसे लिख ले और फिर वर्णमाला शुरूसे पढ़ना आरम्भ करें। फिर जिस अक्षर पर "ठक" शब्द हो उसे लिख लें। इस प्रकार अक्षर लिखते लिखते शब्द निकले, शब्दोंसे वाक्य बना, वाक्यसे भूतका अभिप्राय मालूम हुआ। उस भूतने बतलाया कि करीब तीस बरस हुए कि मैं बहुतसा रुपया साथ लेकर इस घरमें आया था। उस समय वेल नामका एक शख्स इस घरमें रहता था। उस समय वेलकी उमर ३१ बरसकी थी। एक दिन मङ्गलवारकी रातको ठीकाठीक दो पहरमें उसने मुझे मारकर मेरा बिलकुल धन छीन लिया। उस दिन इस घरमें और कोई नहीं था। दूसरे दिन सुबहोको उसने मेरी लाश उठाकर

सीढ़ीकी चोरकोठरीमें १० फुट नीचे जमीनमें गाड़ दिया।

सब लोग गये, उस कोठरीको खोला। मिट्टी कोड़नेसे आदमीकी बहुतसी हड्डियां वहां मिलीं भीं। वेल नामका एक आदमी बहुत दूर रहता था; वह लाया गया, उसने सबके सामने शपथ खाकर कहा कि मैं निर्दोषी हूं, इन सब बातोंको कुछ नहीं जानता हूं। उसने अपनी सफाईकी गवाही खुद ही दी थी। उसके खिलाफ! कोई सुबूत न मिलनेसे वह छोड़ दिया गया।

अमेरिका देशमें अध्यात्म विज्ञानकी चर्चा उसी दिनसे आरम्भ हुई। और एक बात जाहिर हुई कि फौक्सकी लड़कियोंकी तरह और भी किसी किसी स्त्री पुरुषके सामने ये सब शब्द वा भौतिक घटनायें होती हैं। इन लोगोंके द्वारा मुक्तात्माओंके साथ योगायोग होता था, इसी लिये इन लोगोंका नाम "मिडियम" अर्थात् "मध्यवर्त्ती रक्खा गया। मिडियम अनेक प्रकारके होते हैं, किन्तु यहां सिर्फ ५।७ प्रकारके मिडियमोंका वर्णन किया जाता है।

(१) लिखनेवाला।

(२) बोलनेवाला।

(३) शब्द वा टेलिग्राफका मिडियम जैसे फौक्सकी लड़कियां।

(४) हीलिङ्ग अर्थात आरोग्यकारी मिडियम।

(५) भिजन अर्थात जो सब घटनायें हो गईं वा होगी वे सम गोया सामनेमें हो रही हैं, ऐसा देखे।

(६) फोटोग्राफी अर्थात् इसके द्वारा मुक्तात्माओंकी तसवीर बन जाती, है। इसके सम्बन्धमें एक कथा है।

अमेरिका देशमें प्रजातन्त्र बन्दोबस्त है। राजकाज देखने चलानके लिये पांच पांच बरसोंपर एक आदमी सरदार चुना जाता है, उसे प्रेसिडण्ट कहते हैं। जैसे और देशोंमें राजाका अधिकार होता है वैसे पांच बार तक उस देशमें उसी प्रेसिडण्टका अधिकार रहता है। कुछ दिन हुए, लिनकोलन नामके एक महापुरुष प्रेसिडण्ट चुने गये, परन्तु थोड़े ही दिनोंमें वह मर गये। उनकी बीबीने सुना कि मरे आदमियोंकी मुक्तात्माओंकी भी तसवीर खीचीं जाती है। बस इन्होंने झट मुहपर घूंघट डालकर, तसवीर खीचनेवाले (फोटोग्राफर) की दूकानपर गईं और बोलीं कि देखो, मेरी तसवीर खीच देओ, परन्तु तसवीर इस तरहसे खीचों कि मेरे अभिलषित प्रियपुरुषकी तसवीर भी उसमें खिच जाय।

फोटोग्राफर। आप कौन हैं? आपके अभिलषित प्रिय पुरुष कौन हैं?

बीबी। मैं कौन हूं और किसकी तसवीर खिचवानी चाहती हूं सो न कहूंगी। उनका नाम मेरे हृदयमें खुदा हुआ है।

फोटोग्राफर। अच्छा, आप बैठें, परन्तु मैं यह वादा न कर सक्ता हूं कि आपके अलावे और किसीकी तसवीर भी बनेगी वा नहीं।

बीबी बैठ गईं, तसवीर खींची गई। बीबी बड़ी बढ़ी थीं। तसबीरमें बीबीकी कुर्सीके पीछे छोटी उम-

रका एक सुन्दर जवान पुरुष उनके कन्धोपर हाथ दिये खड़ा था और दूसरा जवान आदमी उनसे कुछ दूरपर अलग खड़ा था। वहां तमाशा देखने वालोंमें एक और स्त्री खड़ी थी। उन्होने तसवीर देखते ही कहा "वाहवा! मालूम होता है यह तसवीर हम लोगोंके साविक प्रेसिडण्टकी बन गई है।" बीबी लिनकालनने तब कहा "देखें देखें" और अपने हाथमें तसवीर लेकर घूंघट हटाकर कहा "हां, ठीक हुआ है। उन्हीकी तो तसवीर हुई है। और यह जो कुछ दूरपर एक दूसरे जवानको देखती हो वह मेरा बड़ा लड़का है, मेरे स्वामीके मरनेके बहुत दिन पहिले वह मर गया था।" इतना कहकर उस साध्वी सतीने अपने प्रिय पतिकी तसवीर हाथमें लेकर और शोककी गठरी दूर फेंक कर हंसती हंसती अपने घर चली गई।

(७) डांक वा तारकी खबर देनेवाला मिडियम। न्यूयर्कके शहरमें माष्टर मैन्सफील्ड नामके एक आदमी इस तरहके मिडियम हैं। अपने आत्मीय लोगोंको मुक्तात्माके नामसे चिट्ठी लिखकर उनके पास डांकके द्वारा भेजदेनेसे वह उस चिट्ठीको बिना खोले उन मुक्तात्माओंके यहांसे जवाब मगा देते हैं।

(८) इनके अलावे भी एक तरहके मिडियम होते हैं। वे लोग चक्रमें बैठनेके साथ ही बेहोश होजाते हैं। मुक्तात्मा लोग उसके शरीरसे तेज निकाल लेकर मनुष्यकी आकृति धरके चक्रकी चारों ओर घूमते फिरते हैं और सब लोगोंसे हाथ मिलाते हैं। थोड़े ही दिन हुए हुसैनखा नामका एक मुसलमान-मिडि-

यम इस देशमें आया था। इसकी असाधारण क्षमता बहुत लोगोंने देखी थी। हुसैनखांके छूते ही रुपये पैसे गहने इत्यादि उड़ जाते थे। उसने स्वत राजा दिगम्बर मित्रके सेमञ्जिलेपर बैठके झिलमिलीके बाहर हाथ निकाल कर सभामें बैठे लोगोंके हुक्मके मुताबिक एक एक करके ब्राण्डी, शेरी, शैम्पेन इत्यादि मगाकर सब लोगोंको खिलाया था। एक दिन बाबू हीरालाल मित्रके बैठकखानेकी एक कोठरीमें उसे ताला कुञ्जीसे बन्द करके चारों तरफ पहरा बैठाकर लोगोंने उससे कहा कि चार आदमियोंके खानेके लायक मुनासिब खाना विलसन होटलसे मगा रखो। हुसैन सब चिरागोंको बुझा कर "हजरत," "हजरत" कहके पुकारने लगा। थोड़ी ही देरके बाद उन्होंने सब लोगोंको कहा "खाना तयार है, आपलोग आकर भोजन करें।" सब लोगोंने दरवाजा खोलकर भीतर जानेसे देखा कि सचमुच चार आदमियोंका भोजन मौजूद है। सब बरतनोंपर विलसन साहबका नाम लिखा हुआ था।

कई बरस हुए, डेभेनपोर्ट ब्रदर्स और प्रोफेसर फय नामके अमेरिकाके रहनेवाले मिडियम कलकत्ते आये थे। उन लोगोंने थियेटरोंमें जाकर अनेक आश्चर्य भौतिक क्रिया दिखलाके बहुत सा धन कमाके लेगये। इन लोगोंका हाथ पांव बांधके कोठरीमें छोड़ देनेपर उसी कोठरीके छेद होकर भुक्तात्माका हाथ निकलकर टन टन करके घण्टा बजाता था। और घरके बाहर इन लोगोंको बांधकर चिराग बिलकुल बुझादेनेसे

सितार, बेयाला, अकोर्डियन आदि नानाप्रकारके बाजे अन्धकारमें सबके सिरके ऊपर घूमते फिरते थे। इस तरहसे कई प्रकारके मिडियमोंकी कथा कही जा सकती है, किन्तु उन सबकी बात बन्द करके, अब यह बतलावेंगे कि किस तरहसे सर्कल अर्थात चक्रमें बैठनेसे मिडियमका निश्चय और मुक्तात्माका आवाहन हो सकता है।—

(१) एक मेज(टेबल)की चारों ओर कुरसी लगवाओ। अगर कुरसीकी पेंदोमें गद्दोके बदले लकड़ी वा बेंतकी बिनावट रहे तो और भी अच्छा।

(२) तीन आदमीसे कम और दस आदमीसे अधिक लोग न बैठें। सब लोग टेबलपर हाथ रखकर चारोंतरफकी कुर्सियोंपर बैठें। एक आदमीका दहिना हाथ दूसरेके बायें हाथसे मिला रहे।

(३) पुरुष और स्त्री, गोरे और काले, मोटे और दुबले, बुद्धिहीन और बुद्धिमान, आलसी और परिश्रमी इत्यादि विपरीत गुणवाले लोग सटे सटे बैठें।

(४) इस वेले मनसे सब तरहका सोच फिक्र, काम, क्रोध, लोभ, मोह, इत्यादि सबकुछ दूर कर देओ। एक दूसरेके साथ मीठी मीठी बातें करो वा एक आदमी गाओ वा कुछ पढ़ो और दूसरे सब आदमी उसी तरफ मन लगाये रहो। मतलब यह कि सब आदमी एक ही भावसे रहो। जिसकी आत्माको बुलाना चाहो उसकी चिन्ता सब आदमी एकाग्र चित्तसे करो। या नहीं, अगर हो सके, तो मनसे सब तरहकी चिन्ता एक दम अलग कर दो।

(५) जो सब आदमी चक्रमें बैठेंगे उन सबको आपसमें शत्रुता, डाह, घृणा, वा धर्मके कारण द्वेष भाव इत्यादि न रहे।

(६) पापी मनुष्यको, बुरे कामोमें सदा प्रवृत्त रहनेवालेको, तथा नास्तिकको चक्रके घरमें भी मत जाने देना।

(७) बैठनेका घर, टेबल, वा चौकी बराबर अदलना बदलना न चाहिये। जिसकी जो जगह है, वह उसी जगहपर सदा बैठे।

(८) हमलोगोंने देखा है कि किसी विशेष व्यक्तिकी आत्माका ध्यान न करके सिर्फ खाली ध्यान लगाकर निश्चिन्त बैठना अच्छा है। जो आत्मा कृपा करके आवेगी उसका आदर सत्कार करनेसे वही दूसरी मुक्तात्माओंको सम्वाद पहुंचा सक्ती है। अगर किसी आदमीकी आत्माका बड़ा ध्यान करनेसे किसीके मनमें उसी भावका अधिक अधिकार होजाय और नकली मुक्तात्मा नजर आने लगे तो आश्चर्य क्या है?

(९) कभी कभी ऐसा भी होता है कि दस पन्द्रह दिनतक बैठनेके बाद मिडियम निश्चय होता है। जबतक मिडियम निश्चय न होजाय तब तक अपनी अपनी जगह बदलकर बैठना चाहिये। पर जब एक बार मिडियम स्थिर होजाय तो फिर जगह उलट फेर करनी उचित नहीं।

(१०) जो आदमी मिडियम स्थिर होजाय उसे दक्षिण मुह अर्थात् उत्तर तरफ पीठ करके बैठाना।

(११) सर्कल अर्थात चक्रमें एक आदमीको सरदार निश्चय करलेना चाहिये। उसी सरदारकी आज्ञानुसार सब लोगोंको काम करना चाहिये, और मिडियमसे जो कुछ बातें पूछनी हों सो उसीके जरिये पुछवानी चाहिये। यह सरदार मिडियमके ठीक आमने सामने बैठे।

(१२) आंधी, पानी, बिजली, ठनका, बड़ी सर्दी बड़ी गर्मीके दिनोंमें सर्कल करनेसे उतना फल नहीं होता है। इस लिये जिस दिन न बहुत सर्दी हो और न बहुत गर्मी हो ऐसे ही दिनमें अन्धकार वा कम उजियाले घरमें चक्र करनेसे बड़ा फायदा होता है।

(१३) अगर "टप, टप" शब्द हो तब एक बार होनेसे "हां" और दो बार होनेसे "न" समझना और इसी तरहसे मुक्तात्माके साथ बात चीत करना। अगर किसीका हाथ कांपता देखो तो झटसे उसके हाथमें पेन्सिल और उसके नीचे कागज रख देना। अगर कोई सो जाय और "आड़—हाड—आड़—हाड़" इत्यादि अस्पष्ट वाक्य कहे तो समझना कि बहुत जल्द उसकी जबान साफ हो जायगी और यह ठीक ठीक बोलने लगेगा। कभी कभी कोई मुक्तात्माओंको देखता है, और आकाशमें वा दीवालपर सोने वा चांदीके अक्षर देखकर पढ़ लेता है। कभी कभी घरके बिलकुल चौकी टेबल हिलने डोलने लगते हैं, बाहरकी चीजें घर बन्द रहने पर भीतर चली आती हैं, और भीतरकी चीजें बाहर चली जाती हैं।

(१४) किसी किसी आदमीके शरीरसे दिन रात एक तरहका तेज निकलता रहता है। इसको अंगरेजीमें "अडिल" कहते हैं। इसके द्वारा सूक्ष्मात्माओंके साथ हम लोगोंका योगायोग होता है। और किसी किसीके शरीरमें ऐसा तेज पैठता रहता है। इस तरहकी भिन्नता धातु विषेशके अनुसार होती है। किन्तु किस धातुमें किसतरहका होता है को अभी तक निश्चय न हो सका है। ऊपर कहे हुए दो तरहके लोगोंमेंसे पहिली तरहके लोग चक्रमें अधिक रहें तो सहजहोमें बहुत कुछ भौतिक क्रिया देखी जाती है; और अगर सो न हो तो जगह बदलना और कभी दूसरे आदमियोंको लेआना भी जरूर होता है।

चक्र बैठानेके कायदे कह दिये; अब हम यह बतलाते हैं कि किसी खास आदमीकी आत्माको बुलाना चाहें तो उसे कैसे बुलावगे। अगर मिडियम स्थिर होजानेके बाद किसी खास आदमीकी आत्माको न बुलाओ तो अपने ही आत्मीय स्वजनोंकी आत्मा आजाती है। चुम्बक पत्थर लोहेको आकर्षण करके अपने पास खींच लेता है। वैसे ही जो जिसे अधिक मानता है उसका मन वह अपनी तरफ खूब खींचता है अर्थात आकर्षण कर लेता है। इसी लिये आत्मीय स्वजनोंकी सूक्ष्मात्मा सदा सर्व्वदा हम लोगोंके पास रहती हैं और सुभीता देखनेसे जाहिर भी होजाती हैं। इनके अलावे नीचे दर्जेकी सूक्ष्मात्मायें तमाशा देखनेके लिये वा उपद्रव करनेके लिये भी आजाती हैं। इस लिये चक्रमें बैठनेके पहिले ही मिडियम वा चक्रके सर-

दारको चाहिये कि भगवानका भजन करे और किसी ऊंचे दर्जेकी मुक्तात्माको भेजदेनेकी प्रार्थना करे। तब अगर किसी विशेष आदमीकी आत्माको बुलाना हो तो उसे मन ही मन पुकारना चाहिये। किन्तु ऐसे पुकारनेसे वह आत्मा चली आवेगी सो निश्चय नहीं है। चक्रमें बैठनेके समय बहुत लोगोंके मनमें रहता है, "मुझे कैसे ज्यादे रूपया मिलेगा', "घर बेंचे कि न बेंचें, "फलानीके साथ मेरी शादी होगी वा नहीं" इत्यादि। परन्तु ऐसे चक्रोंमें कोई ऊंचे दर्जेकी आत्मा नहीं आती और अगर आती भी है तो तुरंत चली जाती है।

इस तरहसे पुकारने पर अगर कोई ऊंचे दर्जेकी आत्मा आती हैं, तो आते ही "हां मैं आगया" वा "मुझे क्यों बुलाया है" इत्यादि लिख देते हैं। उन लोगोंसे पहिले ऐसे ही प्रश्न करना जिसका उत्तर हां वा न हो वा एक ही दो शब्दमें हो जाय। फिर धीरे धीरे उनसे बड़े बड़े पश्न भी पूछ सक्ते हो। उन लोगोंको परीक्षाके लिये कभी कोई प्रश्न न करना।

हमलोगोंने देखा है कि कभी कभी नीच जातिकी आत्मा आकर मिडियमको कई तरहका कष्ट देती है तब चक्रमें धूम मचाती है। उसको भगानेके लिये याती किसी अच्छी जातिकी मुक्तात्माको बुला लेना चाहिये या नहीं तो निशृंखल भावसे भगवानके नामसे उसे चले जानेको कहना चाहिये। ऐसा कहनेसे वह तुरत चली जाती है। कभी कभी पृथिवीके कामोंको स्मरण करके वह रोने लगती है, उस समय भक्तिके साथ

भगवानका भजन करनेसे उसकी रोलाई बन्द हो जाती है, मानो आगपर पानी उझल दिया गया। एक उदाहरण सुनिये ।

एक समय एक घण्टा रात बीते रामबगानमें मिष्टर दत्तके मकानमें हम लोगोंने एक चक्र बैठाया था। इस चक्रमें दो आदमी अंगरेज, बाबू प्यारी चरण मित्र, बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय अटर्नी, एक वैद्य, एक महाशय एम० ए० पास किये हुए, मैं, घरवाले और मिडियम उपस्थित थे। सबसे पहिले प्यारी बाबूने बड़ी भक्तिके साथ भगवानकी प्रार्थना की। थोड़ी ही देरके बाद देखा कि मिडियम अचैतन्य और चेष्टा रहित हो गया। उसी समय मैंने देखा कि एक मुक्तात्मा सामने खड़ी है। मैंने यह बात सबसे कह दी। मालूम हुआ कि यह हमलोगोंके जानेसुने लोगकी आत्मा थी। मिडियम टेबलपर अज्ञान होके पड़ रहा, तब साहबोंने उसे उठापठाके झटसे खटियेपर सोला दिया। वहां जाकर वह हाथ पांव सिमटने लगा। मेरे और मि॰जेन साहबके अनेक पास * देनेपर वह कुछ स्थिर हुआ लेकिन बड़े जोरसे रोने लगा। नाम पूछनेपर उसने कहा "मैं अपना परिचय नहीं दूगा। आह! कितनी तकलीफ है, अब सही नहीं जाती। या भगवान! तुम्हारी दया कहां गई, क्यों तुमने मुझे वैसी दुर्मति दी थी, क्यों मैंने तुम्हारा ऐसा मीठा नाम न लिया था? आह! आह! कलेजा फटता है, अब सहा नहीं जाता। (बड़े जोरसे रोने लगा)

* पासकी परिभाषा चौथे अध्यायके आरम्भमें देखो।

प्रश्न। तुमने क्या पाप किया था, और इस समय तुम्हें क्या कष्ट हो रहा है?

उत्तर। (रोकर) पूछते हो कि क्या पाप किया था? हा जगदीश! तुम्हारे सब नियमोंके खिलाफ मैंने किया था। अब कष्ट सहा नहीं जाता। जबसे मैंने पृथिवी छोड़ी, तबसे केवल अन्धकारमें घूम रहा हूं। न किसी आदमी न आदमजादके साथ कभी मुलाकात हुई। भगवान! मेरा कलेजा फाड़कर देखो तो तुम्हारा नाम लिखा है कि नहीं। संसारकी बात जब याद आजाती है, तब कलेजा फटके दो टुकड़ा होजाता है, अब संसारी बातोंकी चर्चा मत कीजिये। मरनेके समय बड़ा कष्ट सहकर आत्मा स्वतन्त्र हुई थी। उन कष्टोंको स्मरण करनेसे इस समय भी कष्ट होता है।" (इस समय प्यारी बाबू भगवानकी प्रार्थना और ब्रह्म संगीत गाने लगे)। मिडियम हाथ पांव छटपट करके कहने लगा "आह! आह! ठंढे हुए, ठंढे हुए।"

प्रश्न। तुम यहां कैसे आये।

उत्तर। मैं अन्धकार होकर चला जाता था, जाते जाते आकाशमें एक ज्योति देखी, उसी ज्योतिके अवलम्बसे मैं यहां तक पहुंचा हूं। आपलोग बहुत भले आदमी हैं। आपलोगोंके साथ रहनेसे मेरा बहुतसा पाप कट जायगा। मरनेके बादसे मुझे आज ही आदमीके साथ देखा देखी हुई है। हा भगवन! अब कष्ट सहा नहीं जाता। (फिर वह रोने लगा)।

इस तरहसे वह करीब आधे घण्टेतक रोता रहा और अपने पापोंके लिये क्षमा मांगता रहा। इस समय

मिडियमका समूचा शरीर बर्फके समान ठंढा होगया और तमाम बदनसे पसीना निकलने लगा। तब हम लोगोंने मुक्तात्माको चलेजानेको कहा और विपरीत पास देकर मिडियमको होशकराया। वह मुक्तात्मा अभीत द्वितीय स्वर्गमें रहनेके लायक नहीं हुई है। मनमें उसके अनुताप तो हुआ है, परन्तु उसके जीसे अहंकार न गया है, इसी लिये आपना परिचय देनेमें और अपने दुष्कर्मोंका विशेष नाम कहनेमें उसे लज्जा हुई थी। उसने तो परिचय नहीं दिया, परन्तु हम लोग उसे पहचान गये थे। वह पृथिवीमें रहनेके समय सामान्य अवस्थासे बढ़ते बढ़ते बड़ा धनवान होगया था और उसकी नामवरी भी बहुत फैली थी। सरकारी कर्म्मचारियोंकी खुशामद करके उन्होंने बड़ी प्रतिष्टा और बड़ी खिताब हासिल की थी। ज्यादे न कहेंगे। पृथिवीके धन और मानके मदसे जो लोग पृथिवीपर पांव नहीं देते हैं वे लोग इससे सावधान हो जायं।

आत्माके बुलानेके बारेमें एक और नई बात कहते हैं, शायद बहुत आदमी इसमें विश्वास न भी करेंगे। हम लोगोंने अपनी आंखोंसे तो यह बात नहीं देखी है, परन्तु अध्यात्म विज्ञान सम्बन्धी कई पुस्तकोंमें पढ़ा है कि जिन्दे आदमियोंकी आत्मा भी कभी कभी शरीर छोड़कर चक्रमें उपस्थित होती है। एक बार पैरिस नगरमें किसी गृहस्थके घरमें चक्र बैठाया गया। उसी घरकी मालकिनी उस चक्रमें मिडियम हुई थी। चक्रहीके घरमें मिडियमका नाती खटियेपर सो रहा

था। थोड़े ही समयमें उसकी आत्मा शरीर छोड़कर मिडियमपर पहुंच गया। उस लड़केने उस दिन स्कूलमें जो कुछ पढ़ा था वे ही सब बातें उसने टूटे फूटे अक्षरोंमें लिखना आरम्भ किया। पर बीचहीमें रुक गया। उधर लोग देखें तो मालूम हुआ कि लड़केने करवट ली है। फिर लड़केको ज्योंही गाढ़ी नींद हुई कि फिर मिडियम लिखने लगी। लेकिन मरे आदमियोंकी मुक्तात्माकी तरह स्वतन्त्रता जिन्दे लोगोंकी मुक्तात्माको नहीं होती है। इस तरहकी आत्मासे एक बार पूछा भी गया था, तब उन्होंने कहा था "मुझे उतनी स्वाधीनता नहीं है। मैं लोहेके खूटेमें जंजीरसे बंधा हूं।

जगे हुए रहनेपर जिससे बहुत समीपी सम्बन्ध रहे वह उसकी आत्माको बुला भी सक्ता है। उस समय उसकी नींद छूटजाती है वा मन विचलित होजाता है। इस बारेमें बहुत नहीं कहेंगे, पर एक बात चिता देते हैं। बहुत छोटा बच्चा, एकदम बूढ़ा, बहुत दुर्बल वा संकटापन्न लोगोंकी आत्माको ऐसे कभी नहीं बुलाना चाहिये। इससे बड़ा अन्धेर भी होसक्ता है।

हम लोगोंने देखा है कि मुक्तात्मा लोग अपना ठीक परिचय देनेके लिये कई तरहका उपाय करते हैं। क० नामका एक आदमी चईकी बीमारीसे बहुत दिन-तक खांसते खांसते मरा था, इस लिये उसकी आत्मा जब चक्रमें आती थी तब मिडियम १०।१२ मिनट तक "खों, खों" करके खांसता था, इससे हमलोग समझजाते थे कि क० की आत्मा आरही है। पुलिस दरोगा जयगोपाल

मुखोपाध्याय नामका एक आदमी बहुत दिनोंतक कोढ़ी रहकर मरा था। सो वह जब कभी चक्रमें आता था तब मिडियमका पञ्जा इतना सुकड़ जाता था कि पहिले देखनेसे मालूम होता था कि सचमुच यह ठूठा हाथवाला कोढ़ी है। एक बार एक बेजानी आत्मा आई और बात बातमें वह "क्या नाम कि" कहती थी। पीछे दरियाफ्‌त करनेसे मालूम हुआ कि जिन्दगीमें वह सदा क्या नाम कि कहा करता था। सरकारी कर्म्मचारियोंकी खुशामद करनेवाली जिस मनुष्यकी आत्माका जिकर ६५वें पृष्टमें किया है, वह जब आती थी तब अपने ही पुशाकमें नजर आती थी। लेकिन ऐसा मत खयाल कीजिये कि सब मुक्तात्मा सच्ची और धर्मात्मा होती हैं। हम लोगोंने कई आत्माको धोखा देते और झूठी बात कहते भी सुना है। उनमें कई तो इस चतुराईके साथ बात कहती हैं कि सुननेसे उनमें विश्वास करनेका जी चाहता है। लेकिन सावधान! जो जो बात कह दें उन सबको विश्वास मत करना। इसके बादके अध्यायमें मुक्तात्माओंके बुलानेकी दूसरी रीति लिखेंगे। उस रीतिको मेसमेरिज़्म कहते हैं।

चौथा अध्याय।

मेसमेरिज़्म।

फरान्सीस देशके मेसमर नामके एक साहबने यह-रीत पहिले पहिल निकाली थी। इसी लिये इसका नाम "मेसमेरिज़्म" हुआ। यह एक तरहकी सोलानेवाली वा मोहनी शक्ति है। इसके जरिये एक आत्मा बेहोश वा दूसरेके वश कर लीजाती है।

"मेसमेराइज" शब्दसे मेसमेरिज़्मका काम सम-झना चाहिये। इस शब्दका अर्थ है "मेसमेरिज़्मके द्वारा किसीको बेहोश वा अपने वश करलेना।"

"मेसमेराइजर" शब्दसे निद्राकारक वा जो मेसमेरा-इज करे उसका बोध होता है।

"मेसमेराइज़्ड" शब्दसे निद्राभाजन वा जो मेस-मेराइज किया जाय उसका बोध होता है।

"पास" वा गति शब्दसे हाथकी उंगलियोंको फैलाकर ऊपरसे नीचे लेआनेको क्रियका बोध होता है। हम लोगोंके देशमें ओझा लोग जिस तरहसे झाड़ते हैं, उसी तरहसे पास दिया जाता है।

"क्लेयरभोआयन्स" वा भेद दृष्टि शब्दसे आखोंसे काम न लेकर देख सकनेकी शक्तिका बोध होता है। यह मेसमेरिज़्मकी एक अवस्था है। यह अवस्था प्राप्त करनेपर आंख बाधदेनेसे भी केवल पेट और कपालके द्वारा आदमी पढ़ सक्ता है।

"क्लेयारभोआयगट" शब्दसे उस आदमीका बोध होता है जो स्वयं वा मेसमेरिज़्मके द्वारा क्लेयारभो-आयन्स अवस्था प्राप्त कर सक्ता है।

मेसमेराइज करनेके कई उपाय हैं। पहिले मैं उन्ही उपायोंका वर्णन करता हूं।

पहिला। अपने मनसे सब तरहका सोच फिक्र दूर करके मनको स्वच्छन्द और इच्छा शक्तिको दृढ़प्रतिज्ञ करो। जिसे मेसमेराइज करना चाहो उसे अपने सामने बैठाओ। उस आदमीका तुमपर विरुद्धभाव नहीं रहना चाहिये। अपने दहिने हाथकी उंगलियोंकी फुनगी उसके बायें हाथकी उंगलियोंकी फुनगीसे और अपने बायें हाथकी उंगलियोंकी फुनगी उसके दहिने हाथकी उंगलियोंकी फुनगीसे मिलालेओ। दोनो आदमी आंखें मिलालो। वह तुम्हारी आंखोंकी तरफ विनीत भावसे और तुम उसकी आंखोंकी तरफ दृढ़-चित्तसे टकटकी लगाके देखते रहो। थोड़ी ही देरमें उसे पहिले सुस्ती होगी फिर वह सो जायगा।

दूसरा। जिसे मेसमेराइज करना हो उसे अपने सामने बैठाओ। टकटका लगाकर उसकी आंखोंकी ओर देखते रहो। अपने दोनो हाथोंकी उंगलियोंको मिलाकर उसके कपालके ऊपरसे लेकर नाभी मण्डल वा पैरकी घुट्ठियों तक आहिस्ते आहिस्ते, धीरे धीरे, पास देओ। लेकिन देखना, तुम्हारे उंगलियोंकी फुनगी उसके शरीरके किसी भागमें छू न जायं, किन्तु तौ भी उसके शरीरसे वे कभी दूर न होने पावें। जब हाथ नीचे तक पहुंचजाय जो मुट्ठी बांध लेना और

फिर ऊपर लेजाकर मुट्ठी खोलके पहिलेक तरह हाथपर हाथ मिलाके पास देना आरम्भ करना। ऐसा करते. रहनेमें थोड़ी ही देरमें उसकी पलकें खुद्‌बखुद् गिर जायंगी. आखिरीमें आखें एकदम बन्द हो जायंगी, तब नींद खूब गाढ़ी आजायगी।

तीसरा। जिसे मेसमेराइज करना हो उसे अपने सामने बैठाके अपने अंगूठेसे उसका अंगूठा खब कसके दबाकर, एक टकसे दृढ़रूपसे उसकी आंखोंके ऊपर ताकते रहना। थोड़ी ही देरमें उसे मेसमेरिक नींद आजायगी।

चौथा। ऊपर कही हुई रीतिसे अपने अंगूठेसे उसके हाथकी "अलनर" नामकी वायुशिराको कसके दबाकर उसकी आंखकी ओर देखते रहनेसे वह निद्रित हो जायगा।

पाचवां। कोई चीज आंखके सामने वा उससे कुछ ऊपर थाम्हे रखनेसे और उसपर उससे टकटकी लगाकर देखवानेसे वह जल्द सो जायगा, अगर वह चीज सुफेद चमकीला हो तो और भी जल्द नींद आजाती है।

इसी तरहके कई उपायोंके द्वारा मेससेरिक नींद कराई जा सक्ती है। इसका असल भेद यही है कि जो मेससेराइज करेगा वह अपने मनकी सब चिन्ता और सोच फिक्रोंको एक दमसे दूर करदे और एकटक लगाकर दृढ़ रूपसे देखता रहे; और जिसे मेसमेराइज करना हो उसके मनमें मेसमेराइज़रके ऊपर कोई तरहका विरुद्ध भाव न रहे और नम्र भावसे स्थिर बैठा रहे, ऐसा होनेसे फल बहुत जल्द देखा जायगा।

किस तरहके धातुवाले आदमी बहुत जल्द मेस-मेराइज हो सक्ते हैं, सो बात अभी तक निश्चय नहीं हो सका है। हिन्दू-जातिके मतसे तुला राशिमें जिसका जन्म हो वह बहुत जल्द मेसमेराइज हो जायगा। इस विषयमें मैं अपनी राय कुछ भी नहीं दे सक्ता हूं। लेकिन हां, एकबात बतला सक्ता हूं। जिसे मेसमेराइज करना चाहो उसका हाथ चित्त करके अपने सामने रख लो और उसकी कुहनीसे नीचे उंगलियोंकी फुनगी तक पास देना आरम्भ करो, अगर इतना करनेसे उसे इतनी दूरमें ठंढा वा गर्म, झिनझिनी, थकावट वा किसी और तरहका दर्द मालूम हो तो समझ लेना कि इस आदमीको मैं बहुत जल्द मेसमेराइज कर लूगां।

मेसमेराइज हो जानेपर बहुतसे लोगतो ऐसे बेहोश हो जाते हैं कि अगर उनके शरीरमें सूई भोंको वा जलती आग रखदो तो भी उन्हें खबर न होगी। मेस-मेराइजरको छोड़कर और किसीकी बात वह सुन ही नहीं सक्ता है, और वह जिस तरहसे उसे रहनेको वा काम करनेको कहते हैं वह उसी तरहसे काम करता है। अगर मेसमेराइजरको उस समय कोई मारे तो उसके शरीरमें भी चोट लगेगी। अगर मेसमेराइजर कड़ चीज खाय तो उसका भी मुह बिकटाकार धारण करता है, और मेसमेराइजर अगर उस समय शराब पीले तो उसे नशा भी आजाती है। जर्मनी देशमें इसी तरहसे मेसमेराइज करके उसकी आत्माको अन्यत्र भेज-कर जगह जगहकी खबरें मगाई जाती थी और उसी आत्माके द्वारा मेसमेराइजरकी इच्छानुसार अन्यलोगोंके

घरमें उपद्रव कराया जाता था। तन्त्र शास्त्रके मारन, मोहन, स्तम्भन, वशीकरन आदि कार्य्य केवल मेसमेरिज़्म मात्र हैं।

कभी कभी मेसमेरिक निद्रा ऐसी गाढ़ी हो जाती है कि उस निद्राको फिर छोड़ा देना अत्यन्त कठिन हो जाता है। ऐसी अवस्थामें मेसमेराइजरको छोड़कर और कोई उसे न छुये, क्योंकि अगर छुनेवाला अचेत ही आदमीके धातुके समानका होगा, तो उसे छूते ही वह भी खुद-बखुद बेहोश हो जायगा। इस तरहकी गाढ़ी नींद स्वयं छुट जाती है। अगर स्वयं न छुटे तो, मेसमेराइजरको घबराना न चाहिये, धीरे धीरे उसके सिरपर पंखा झले और विपरीत पास दे—अर्थात नीचेसे ऊपर पास ले जाय। अगर इससे भी आंख न खुले तो अपने दोनो हाथोंके अंगूठोंसे अचेत आदमीकी नाककी जड़में लगाकर दोनो भौओंके बीच होकर ऊपर सिर तक बारम्बार घसे और पानीको मेसमेराइज करके उसकी आंख और मुहपर दे। अगर नये सीखनेवाले लोग सिर्फ किताबहीपर भरोसा न करके किसी पक्के मेसमेराइजरसे यह विद्या सीखें, तो शायद ऐसी मुश्किलमें कभी गिरफ्तार न होंगे।

सिर्फ निश्चिन्त होकर टकटकी लगाके देखते रहनेसे भी आदमी बेहोश होजाता है। अजगर सांपका शरीर बहुत बड़ा होता है, वह तमाम घूम फिर नहीं सकता है। जब पेड़ ऊपर वह कोई पची उसको देखता है तब उसकी तरफ टकटकी लगाके देखने लगता है। थोड़ी ही देरमें पक्षीका नजर भी अजगरपर पड़ जाता

है, तब वह टेंटें करके उड़नेकी कोशिश करता है। परन्तु अजगर तब और भी दृढ़ चित्तहोकर और मुह बा कर उसकी ओर देखने लगता है। आखिरकार पक्षी छटपटाके उसके मुहमें गिर जाता है।

हम लोगोंके पूर्व्वपुरुष-लोग यह विद्या अच्छी तरहसे जानते थे। हम लोगोंके योग शास्त्रके अनुसार, दोनो आंखोंसे एक टक लगाकर नाककी फनगीको देखना ही योग विद्याकी प्रथम शिक्षा समझी जाती है। अर्थात् अगर कोई आदमी अपनेहीको मेसमेराइज करना चाहे तो इसी तरहसे काम करे। गौरकरके देखनेसे मालूम होगा कि विवाहके समय जो वरण करना होता है सो भी एक तरहसे मेसमेराइज ही करना होता है। वरन करनेके समय हाथ पांव चलाना गोया पास देना होता है। कामाख्याका जादू और मरदोंको भेंड़ा बना रखनेकी बातें भी मेसमेरिज्महीसे सम्बन्ध रखती हैं।

मेसमेरिज्मके बारेमे मैंने जितनी बातें पढ़ी है, वा अपनी आखों देखी है, उन सबको अगर लिखें तो एक बहुत बड़ी पुस्तक तयार हो जाय। इसके द्वारा सब तरहका दर्द, बहरापन, स्त्रियोंकी मूर्च्छा, नींद नहीं आना, उन्माद आदि कई प्रकारकी बीमारियोंको आरोग्य होते देखा है। एक पुराने रोगीके पेटमें कोई चीज ठहरने न पाती थी। ज्योंही कुछ खाता था कि वमन हो जाता था। इस अवस्थामें उसे पानी मेसमेराइज करके देनेसे उसके पेटमें टिक गया। इसी तरहसे धीरे धीरे वह सब चीज हजम करने लगा। आजकल एक भले घरकी स्त्री मेरी दवा खा रही है। हत्पिण्डकी

[illegible]के कारण पेटमें उदर रोग और समूचा शरीर फूल गया था। एक लहमेके लिये भी उन्हें चैन नहीं था। दिनरात हंफनी, कलेजेकी धड़कड़ी, बहुत थोड़ा खानेसे भी पेटका फूलजाना और सोनेसे स्वास बन्द हो जानेसे चिल्ला उठना इत्यादि अनेक उपद्रव थे। कई तरहकी दवा देनेपर भी कोई फल न होनेसे मैं उन्हें रोज शामको मेसमेराइज करने लगा। पहिले ही दिन उन्हें नींद आगई और एक सप्ताहके अन्दर ही बिछावनपर लेटनेसे वह अच्छी नींदसे सोने लगीं। उनके हृत्पिण्डकी गति मेरे अधीन होजानेसे उसे ठीक स्थानपर ले आनेके बाद उचित दवा देकर उदररोग और शरीरका फूलना मैंने छोड़ा दिया है। इस समय वह मुनासिब भोजन, नींद, आराम और सांसारिक काम काज करती हैं। इसी लिये मैं कहता हूं कि सब चिकित्सकोंको मेसमेरिज्म सीख लेना चाहिये।

गद्देको मेसमेराइज करके एक सांपके चारों ओर आरीकी तरह रख देनेसे देखा कि सांप किसी प्रकारसे उस आरीके बाहर न हो सका। कई रोगोंकी परीक्षा और कई तरहके रोगकी असली दवा इसके जरिये जाहिर होते देखा है; परन्तु यहां उन सब बातोंकी चर्चा न करूंगा, केवल अध्यात्म विज्ञान विद्याके सम्बन्धमें इसकी जो जो बातें देखी हैं उन्हींके विषयमें कुछ कहूंगा।

कृष्णनगर कालिजके पढ़े लिखे एक अच्छे विद्वान महाशय, बाबू क्षेत्र नाथ राय, बरासतमें ओभर सियरका काम करते थे। उनकी एक ही बहन थी, सो १२

बरसकी उमरमें विधवा हो गई, लेकिन उसके ससुरालमें किसीके न रहनेसे वह सदा अपने नैहरहीमें रहती थी। बहुत दिनोंसे वह सब दिन ही एक बार अचेत हो जाती थी और हाथ पांव पटकती तथा गोंगियाती थी। उसे मूर्च्छाकी बीमारी कहकर डाक्तरी और वैद्यक दोनो मतोंकी अनेक दवायें उसे दी गईं; परन्तु किसीसे उसका कुछ उपकार न हुआ। सन १८६६ सालकी ८वीं अहास्तको मैं उसे मेसमेराइज करनेके लिये दीनो बाबूके घर गया और वह मेरे सामने लाई गई। भले आदमीके घरकी लड़की, छोटी उमरमें विधवा हुई, वह जो किसी बाहरी आदमीके सामने आ खड़ी होगी सो सहज बात नहीं है। वह एक हाथसे घूंघट करके कांपती कांपती मेरे सामने एक चिटाईपर आ बैठी। मैं एक कुरसीपर बैठा था। मेसमेराइज करनेमें दोनो एक दुसरेकी तरफ टकटकी बांधकर देखते हैं, किन्तु इसमें उसे राजी न होते देखकर मैंने एक गिलास पानी मेसमेराइज करके देखनेके लिये उसके हाथमें दिया। वह उसे टकटकी लगाकर देखने लगी। थोड़ी ही देरमें वह बोली "इसमें जोतिका एक गोला देख पड़ता है।" फिर पानीको मेसमेराइज करके उसके हाथमें देनेसे उसका समूचा शरीर कांपने लगा, और पानी-भरा गिलास जबतक मैं उसके हाथसे ले लूं, तबतक वह बेहोश होकर चिटाईपर लेट गई। तब उसे उत्तर सिरहाने सोलाकर सिरसे पैर तक मैंने आठ दस पास दिए। थोड़ी ही देरमें वह बोल उठी—

"भैया हो!—एक औरत!"

मैं। (दीनो बाबूको जवाब देनेसे रोक कर) कौन, वह कौन है? (उसने कुछ उत्तर न दिया) तुम कौन हो?

रोगी। आन्द–(मतलब यह कि वह कोई दूसरी थी)

मैं। तुम इसके शरीरपर कितने दिनसे हो और किस तरहसे सवार हुई थी?

रोगी। मैं दस बरससे इसके ऊपर हूं। जब यह अपने स्वामीका संस्कार करके घाटसे घर लौटी आती थी तब ही मैं इसपर सवार हुई थी।

(दीनानाथ बाबूने इस समय हिसाब करके कहा कि ठीक है, विधवा होनेके बादहीसे यह बीमार है)।

मैं। तू इसे छोड़ दे।

रोगी। नहीं कभी न छोड़ूंगी। वाह! मैं दस बरससे आनन्दके साथ दिन बिता रही हूं, सो तुम मुझे निकालना चाहते हो!

मैं। तुझे जाना ही होगा—अगर खशीसे न जायगी तो तुझे जबरदस्ती निकाल दूंगा।

रोगी। तुमने मेरा घर तो तोड़ा है सही, परन्तु मुझे यहांसे हरगिज न निकाल सकोगे। अगर तुम मुझे जबरदस्ती निकालो तो अपने बेटेका लोहू पीओ, मैं तुम्हे निर्वंश कर डालूंगी।

सब लोग चुप होगये। मैं भी सकूत होगया-इस तरहका काम कभी न करना पड़ा था। इसके पहिले मैंने डाक्तर ग्रेगरीकी बनाई तथा फ्रान्सीसी ऐकेडेमी और सायन्सकी प्रकाशित दोनों पुस्तकें पढ़ा था।

उनमें मैंने देखा था कि मेसमेरिज्मके द्वारा मूर्च्छा तथा मिर्गीको बीमारियां छूट सक्ती हैं, इसी लिये मैंने इसे मेसमेराइज करना निश्चय किया था। भला, मैं कब जानता था कि यहाँ ऐसी भूत भूतौपलका बीहड़ खेल होगा।

इस तरहसे वह तमाम रात बकती और सब लोगोंको गाली देती रही। खासकर मुझे और दीनो बाबूको तो उन्होंने हजारों नामसे पुकारा। हलदी जलाकर उसकी नाकके सामने रखनेसे और सरिसों उसके देहपर छींटनेसे वह बहुत बेतहाशे चिल्ला उठती थी, दूसरे दिन तीन बजेके करीब वह अचानक तन्द्राके समान आँख करके ५।७ मिनिट तक सो गई। फिर उठकर आंख मजते मजते बोली "मैयाके कचहरीसे आनेका समय हो गया, अभीतक पूरी क्यों न बनी है।"

वह तो वह न रही। पहिलेकी कोई बात न जानती थी। इसके पहिले वह सब दिन दो बार मूर्च्छित होकर बोहोश पड़ रहा करती थी, किन्तु उस दिनसे तमाम जिन्दगी तक कभी उस तरहसे फिर न हुई।

और एक दृष्टान्त देते हैं। आज यह दो बरसकी बात है। एक दिन ९।१० बजे रातको, कलकत्तेके विख्यात वकील बाबू नरेन्द्रनाथ सेन अपनी भतीजीको दवा-करानेके लिये मुझे बुलाकर अपने घर ले गये। उस लड़कीके स्वामी और चचेरे स्वसुर दोनो ऐलोपैथिक डाक्तर हैं। मैंने जाकर देखा कि रोगी टकटक ताक रही है, हाथ पांव सिकोड़ती है, मुहसे बोली नहीं निकलती है कण्ठावरोध हो गया है। कण्ठके भीतर

एक बुन्द भी पानी नहीं है। उसके स्वामीको जवानी मालूम हुआ कि उसे बहुत दिनसे मूर्च्छाकी बीमारी है। तीनचार दिन पहिले, शायद आत्महत्या करनेके अभिप्रायसे, एक बोतल तारपीन तेल पीकर अज्ञान हो गई थी। डाक्टर वुडफोर्ड और अन्य ७।८ डाक्टरोंकी रायसे कई तरहकी दवायें दीगई थीं, परन्तु किसीसे कुछ उपकार न हुआ। यहां तक कि उसका कंठ भी बन्द हो आया, इसी लिये मेरी बुलाहट हुई थी। मैंने भी उसे डेढ़ दिन तक कई तरहकी दवा दी परन्तु कुछ भी फायदा नजर न आया। मेरे तजवीजमें तब कोई बात आगई। किन्तु मैं कुछ कह नहीं सक्ता था। वे सब थे खड़े ब्रह्मसमाजी, अगर उनसे कहते कि इसे कोई पीड़ा नहीं है, सिर्फ ऊपरको टकटकी बंध गई है, तो वे सबके सब हंस पड़ते। सो, सब बातें मन ही मन सोच समझकर मैंने दूसरी रात अपना प्रबन्ध किया। रोगीके नजदीक ही बैठकर चुपचाप बिना किसीको कुछ कहे मैंने रोगीको तीन चार मिनट तक मेसमेराइज किया। दूसरे दिन सुबहको जब मैं वहां गया तब उसकी सासने मुझसे कहा कि "तमाम रात वह बिड़बिड़ा बिड़बिड़ाके बहुतसा अलाय बलाय बक्ती थी, और जब सुबह होता आता था तब बोलने लगी कि मेराघर तोड़ दिया गया है, अब मैं यहां कैसे रहूं; अच्छा, गंगा स्नान करके चली जाऊंगी, लेकिन देखना शिवजीकी पूजा जिसमें हो जाय। उस समयसे कुछ सुस्त हो गई है, और सो गई है।" सब लोगोंने समझा कि कोई एक नया उपद्रव उठा, परन्तु उसके घरके टूटनेका मैंने एक दूसरा ही

अर्थ समझा। उस दिन मैंने किसी बहानेसे एक गिलास पानी मेसमेराइज करके उसकी आंख और मुहपर छिड़कवाया और थोड़ी देर तक उसकी आखोंमें आंख मिलाकर देखता रहा—मनही मन उसे फिर मेसमेराइज किया। जब मैं ऊपरसे उतरा और गाड़ीपर सवार होके चलनेके फिक्रमें था, तब उसका स्वामी फिर आया और मेरा हाथ पकड़के ऊपर ले गया। इसमरतबे जाकर देखा कि रोगी उठके बैठी है। आधसेर दूध पी चुकी थी और मुझे देखते ही घूंघट करके बैठ गई।

मैंने तब उससे पूछा "तुम्हे क्या हुआ था ?"

रोगी। मैं तो कुछ नहीं जानाती हूं।

मैं। आज ६ दिन हुए, गत वृहस्पतिवारकी शामके बादसे तुम्हारी बीमारी शुरू हुई, उसके पहिले तुम क्या करती थी ?

रोगी। उस दिन शामको मैं छतपर टहल रही थी, मालूम हुआ कि कोई बेजाना पुरुष छायाकी तरह मेरे पास आकर ठहर गया। मैं उस आदमीके इतनी वशीभूत हो गई कि वह जो जो कहता था, मैं वही वही करती थी। उसने मुझे कहा "आओ, मेरे साथ आओ।" मैं चली। इधर, उधर, चारों तरफ उसके साथ घूमने लगी। तब उसीके कहनेसे आल्मारी खोलकर एक बोतल निकाल लिया और सीढ़ीके नीचेसे नारियलका एक खपरोइया लेकर बोतलमेंसे अरक ढाल ढालके दो बार पीया। तिसके बाद क्या हुआ सो मैं नहीं जानती ; इस समय मेरे कण्ठमें दर्द मालूम होता है।

मैं। अरक पीनेके समय कड़ न मालूम हुआ था?

रोगी। कुछ नहीं, पानीकी तरह पी गई थी; कुछ स्वाद न मालूम हुआ था और अगर कड़ मालूम होता, तो नहीं पीती।

एक और ऐसी ही कथा सुन लीजिये। परन्तु यह एक बहुत बड़े घरकी बात है, इस लिये नाम नहीं बतला सक्ते।

एक बड़े घरकी स्त्री, उमर २६।२७ बरसकी रही होगी, बहुत दिनसे बीमार थी। कई तरहकी चिकित्सा की गई, अन्तमें दो अंगरेज डाक्तर दवा करने लगे। वे लोग भी आखिरको जवाब देकर चले गये, तब मेरी बुलाहट हुई। रोगी सेमञ्जिलेकी एक कोठरीमें थी, हिसाब करनेसे सदर दरवाजेसे आधपाव फासलेपर रही होगी। पर ज्योंही मेरी गाड़ी उसके दरवाजेपर लगी कि वह वहां बड़े जोरसे चिल्लाकर कहने लगी "यह मुझे निकालनेको आरहा है।" सब लोग बोलने लगे क्या-क्या—कौन—कौन आता है, डरो मत।"

रोगी। यह बक्स लिये आता है (मेरे साथ दवाका एक बक्स था), फिर मेरा घर तोड़ देगा, अब मेरा रहना मुश्किल है।"

इन सब बातोंको सुनकर सब लोगोंने इन्हे बीमारीके उपद्रव समझे और जब मैं वहां गया तब सब लोग बड़े आश्चर्य्यके साथ ये सब बातें मुझे सुनाने लगे। मैंने जाकर वहां देखा—पाठको! आपने मृत्युकी तसवीर कभी देखी है?—कई एक सूखी हड्डियां चमड़ेसे ढकी। सिर वा कलेजा देखनेसे कोई नहीं कह सक्ता

था कि वह स्त्री थी वा पुरुष। आधा जीभ और बाईं तरफका गाल लटक गया था, मुहसे बराबर लोर गिर रहा था, पत्थरकी तरह सम्पूर्ण शरीर ठंढा और कठोर और हाथोंमें नाड़ीका कहीं पता न था। मैंने उसके स्वामीको कहा "बाबू सहाब! आपने इस रोगीको देखानेके लिये मुझे क्यों बुलवाया?" उन्होंने जवाब दिया "जब साहब लोग ६ महीने तक दवा करके हार गये और जवाब देकर चले गये हैं, तब मुझे उम्मीद जरा भी नहीं है कि यह बचेगी, किन्तु बिना दवाके रखे रहना उचित नहीं। रुपया खर्च करनेमें मैं डरता नहीं; जितना रुपया खर्च होगा उतना खर्च करनेको राजी हूं।" इसका मैंने जवाब दिया "आप लोग रुपया खर्च करनेको तो राजी हैं किन्तु दूसरोंके हकका (स्मशान रक्षक रुपया) अब वैद्य लोगोंको क्यों फजूल दीजियेगा।" फिर जब मैं रोगीके पास गया तो मेरे बैठते ही वह बोल उठी "आगये आओ—बैठो—नजदीक आके बैठो।" गोया मुझसे उसकी पुरानी दोस्ती थी। बात करनेके समय ठहर ठहरके खिड़कीकी तरफ देखती थी, जैसे किसीसे बात चीत करती हो। उसकी नाड़ी देखनेको मैंने ज्यों ही उसका बायां हाथ थाम्हा है कि उसने मेरा दहिना हाथ इतनी मजबूतीसे थाम्ह लिया कि दो तीन आदमियोंने बड़ी कोशिशसे मेरा हाथ छुड़ाया। एक दवा देकर मैं लौट आया, परन्तु मन ही मन प्रतिज्ञा कर लिया कि इस तरहके रोगीको देखनेके लिये फिर कभी कहीं न जाऊंगा।

दूसरे दिन सुबहको मेरी फिर बुलाहट हुई। मैंने एक शीशी पानी मेसमेराइज करके दवा कहके भेज

दिया। शामको उनका स्वामी मेरे पास आया और कहने लगा कि अब कुछ अच्छी है, परन्तु रह रहके कहती है कि "मेरा घर तोड़ दिया गया" और रोती है; सो आप एक बार चलिये। मैंने कुछ हंसकर कहा कि जानेकी कोई जरूरत नहीं, मैं यहींसे दवा देता हूं। लेकिन उन्होंने हमारी एक न सुनी, जबरदस्ती मुझे ले गये। ज्योंही उस घरमें गया कि रोगीने कहा "आये! फिर भी सर्व्वनाश करोगे? जरा नजदीक आओ।

मैंने इन्होंने कहा "आप कैसी है?"

रोगी। कैसे रहूंगी क्या? मेरा घर तोड़ दिये हो, अब क्या मैं यहां रह सक्ती हूं?

मैं। कहां जायंगी? क्यों, इस वक्त तो आप बहुत अच्छी हैं?

रोगी वह बात पीछे होगी, इस वेले जरा नजदीक आओ। आज तुम यहीं ठहरो, रातको मैं जाऊंगी।

मैं। कहां जायगी? कुछ और आराम होने दीजिये तब नैहरे जाईयेगा।

रोगी (हंसकर)। बच्चा.कुछ बूझते हैं जो! कुछ नहीं जानते हैं, (पीछे मुझे घरसे बाहर जाते देखकर) तब तुम नहीं ठहरोगे? (दीर्घ निश्वास लेकर) अब तुमसे फिर मुलाकात न होगी!

जितने लोग वहां बैठे थे सब अकचका गये। उसी रातको किसी विषयपर बातचीत करते करते उसकी आत्मा मुक्त हो गई।

पाठको! ऊपर जो तीन तरहका दृष्टान्त दिया, वे तीनो नीचे दर्जे की आत्मायें थीं। द्वितीय स्वर्गमें रह-

नेके योग्य न होनेके कारण उन्हे इसी पृथिवीपर रहना पड़ा था। आश्चर्य्यकी बात यही है कि तीनोंने कहा था "मेरा घर जोड़ दिये हो, मैं कैसे रहूं।" उस समय मैं कुछ नहीं जानता था कि घर टूटनेसे क्या मतलब है, मेसमेरिज्मसे घर कैसे टूटता है।

बहुतसे आदमी मामूली तरहसे खुद बखुद मेसराइज हो जाते हैं। हम लोगोंके देशमें भूतके पाले पड़ना, रातको चिल्लाना इत्यादि इसीके उदाहरन हैं। इस तरहके रोग मैंने बहुत देखे हैं, परन्तु यहाँ सिर्फ दोका उदाहरन देते हैं।

श्रीयुक्त महाराज नरेन्द्रकृष्ण बाहादुरकी जिमिन्दारीमें धनकृष्ण मित्र नामका एक अपला रहता था। अपनी बड़ी बहन और आठ बरसकी भतीजीको साथ लिये वह अहीरीटोलेमें एक घर किराया करके रहता था। अचानक उस घरमें कई तरहके शब्द, गूह फेंकना आदि उपद्रव आरम्भ हुए। सब लोगोंने समझा कि यह किसी दुष्टका काम है इस लिये पड़ोसियोंकी सहायतासे घरकी चारों ओर पहरा पड़ने लगा। परन्तु जब इससे भी उपद्रव न घटा, तब उस घरको छोड़के उसने राजा राजबल्लभ ष्ट्रीटमें एक घर किरायेपर लिया और वहीं रहने लगा। वहां भी अत्याचार वैसे ही होने लगे। तब वह मुझे बुलाके ले गया। मैंने पानी मेघमेराइज करके घरकी तीन तरफ छिड़कवा दिया। चौथी तरफ दूसरेका घर था, इस लिये उसने पानी छिड़कवाने न दिया। दो दिन कत अत्याचार बन्द रहे, पर इसके बाद पहिलेसे भी

अधिक उपद्रव होने लगे। फिर भी उसने मुझे बुलाया। मैं गया। तब मैंने उस आठ बरसकी लड़कीको मेसमेराइज कर दिया और मेसमेराइज किया पानी पिला दिया। उस दिनसे उपद्रव एकदम बन्द हो गया।

थोड़े ही दिन हुए, बरासत निवासी श्रीनित्य निरञ्जन घोषको रातके वक्त पकड़ा था। वह एक दिन दो पहर रातको अचानक बिछावनसे उठ बैठा और "जाते हैं जी" कहके घरका किवाड़ खोलकर उसी समय स्मशानमें जा बैठा। ऐसे ही एक रात और उठा और हम लोगोंकी फुलवाड़ीकी झीलमें गलेभर पानीमें जाकर खड़ा रहा। जब वह इस तरहसे बहुत धूम करने लगा तब उसके घरवालोंने उससे परेशानहोकर उसे मेरे यहां दवा करानेके लिये भेज दिया। जिसी दिन वह मेरे घरपर पहुंचा, उसी दिन मैंने उसे एक गिलास पानी मेसमेराइज करके देखनेके लिये दिया। थोड़ी ही देरमें उसने कहा कि गिलासके भीतर दो छोटे छोटे हाथ घूम रहे हैं। देखते ही देखते वे हाथ बड़े और तेजमय होगये। नित्यने गिलासको तब फक दिया और भागकर बाहर अंगनईमें चला गया। चार पांच आदमी मिलकर उसे पकड़ लाये, तब देखा कि उसका शरीर स्पन्दहीन, लोहेके समान कड़ा हो रहा है। आंखें बन्द किये है, पर आंखके ढिम्मे दोनो ऊपर ही उठे हैं। चौह बैठे हैं। तब बिछावनपर सोलाकर मैंने ७।८ पास उसके सिरसे पैर तक दिया और चौहपर पास देके चौह खुलवाया। तब कुछ देर तक अकबक करके सीधे सीधे बोलने लगा। "क्यों मुझे

निकाल भगानेकी कोशिश कर रहे हो?" जब मैंने उससे परिचय पूछा तो उसने कहा मेरा नाम है भोलानाथ मुखोपाध्याय, घर था जेसोर जिलेमें; तीस बरस हुए मैं ५००० रुपया लेकर चला जाता था। पांच किसानोंने मिलकर विषके बुझे तीरोंसे मारकर मेरी जान ली। यह बात किसीको नहीं मालूम है। और यह रुपया भी आज तक किसीने अपने काममें न लगाया है, एक दीवालमें गड़ा हुआ है इत्यादि। लेकिन बड़े आश्चर्य्यकी बात यह थी कि किसी उपायसे उसने अपने हत्याकारीका नाम न बतलाया। उस रात उसने अनेक आश्चर्य्य भौतिक कारखाने दिखलाये थे। दूसरे दिन उसे लेकर हाईकोर्टके अटर्नी बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्यायकी फुलबाड़ीके बङ्गलेमें हम लोग चक्र बनाके बैठे। उस दिन उस चक्रमें आनरेबल ब्रूस नामके अमेरिका देश निवासी एक भले आदमी, मोरान कम्पनीके मनेजर ब्यजन साहब, बाबू प्यारी चन्द्र मित्र, प्रभृति १५। १६ आदमी बैठे थे। थोड़ी ही देरमें नित्य अकस्मात उठ खड़ा हुआ और जैसे तारोंसे अलग होकर नक्षत्र अदृश्य होजाते हैं वैसे ही वह अलग होकर अदृश्य होगया। सब लोग उसके पीछे पीछे गये, यह स्थिर नहीं कर सके कि वह किस तरफ गया है। इसलिये सब लोग हतबुद्धि होकर फाटकके पास खड़े हो गये। इस समय अमेरिकावाले ब्रूस साहबने मुझसे कहा कि आप उसे पुकारके कहिये कि जहां है वहीं ठहरे। मैंने वैसा ही किया। तब देखा गया कि नित्य कुछ दूर आगे रास्तेपर एक खजूरके पेड़के पास नाच रहा है।

आंख बन्द थीं और शरीर लोहेके समान था, अंगरेजोंके "पालका" नाचकी तरह नाचते २ खजूरके ऊपर चढ़ने लगता था और वैसे ही तालहोके साथ नीचे उतरता था। आरा जिलेका रहनेवाला एक दरवान उसे पकड़ने गया, परन्तु उसने "हुंह" कहके अपने बायें हाथसे उसे ऐसा धक्का दिया कि बिचारा दरवान दो तीन हाथ पीछे हटके गिर गया। तब फिर ब्रूस साहबके कहनेसे मैं उसके पास गया और उसका कन्धा स्पर्श किया। मेरे स्पर्श करते ही वह मेरे शामिल आनेको राजी हो गया। फूलबाड़ोमें लाकर बङ्गलेकी कोठलोमें बिछावनपर उसे सोलाकर ७।८ पास देते ही वह पूरा स्पन्द हीन हो गया। आगे और भी पास देकर उसके चौह और हाथोंको छोड़ाया और तब उसने कुछ लिखकर और कुछ कहकर समझाया जिससे मालूम हुआ कि वह एक नीचे दर्जेकी मुक्तात्मा है। पृथिवीमें रहनेके समय सदा बुरेकामोंमे फंसे रहनेके कारण उसने कभी भगवानका नाम न लिया था। इस लिये मरनेके बाद द्वितीय स्वर्गमें रहनेके योग्य नहीं होनेसे वह आजकल बराकपुरकी राहमें एक बड़के पेड़के ऊपर बहुत दुख सह रहा है। भगवानका भजन सुनकर मिडियमकी आंखोंसे आंसू निकलने लगे।

उस दिनसे, नित्य निरंजन इस चक्रका एक बिख्यात मिडियम होगया। मेरे अनेकानेक आत्मीय स्वजन और बाहरके अनेक मुक्तामाय आकर अपनी अपनी अवस्थाका वर्णन, आलाप परिचय और हजारों उपदेश देकर चले जाते हैं। भोलानाथकी आत्मा जिसने पहिले

पहिले इसके शरीरमें प्रवेश करके इसको बहुत कष्ट दिया था, वह अब कहा करती है कि ईश्वरका भजन सुनकर और ऊंचे दर्जेकी मुक्तात्माओंके संसर्गसे मेरी दशा पहिलेकी बनिसबत बहुत अच्छी होगई है। अब वह दूरसे द्वितीय स्वर्ग देख सकती है और बड़के पेड़पर भी अकेले रहना नहीं होता है। अब वह जब जब आती है तब तब कृतज्ञता स्वीकार करती है। नित्यके ऊपर भी अब उसे स्नेह हो गया है। एक दिन मा: सो० दत्तके मकानके चक्रमें एक पगलीकी मुक्तात्माने आकर खस्सीका सिर, और एक विजातीय भाषामें लिखी चिट्ठी रख दिया और मिडियमको अनेक तरहका कष्ट देनेकी कोशिश की। उसके दूसरे दिन मेरे घरमें चक्रमें भी बहुतसी गो-हड्डी फेंकनेकी कोशिश-की, लेकिन हम लोगोंके भाग्यसे उस दिन भोलानाथने आकर उसे निकाल दिया। इस समय मिडियमके पेटमें ७।८ दिनसे दर्द हो रहा था, वह उससे बड़ा परेशान था। अनेक दवा मैंने उसे दी थी परन्तु किसीसे दर्द न घटा। तब मैंने भोलानाथको कहा। उसने उलटा पास देकर उसे झटपट आराम कर दिया। हम लोग ७।८ आदमी वहीं मौजूद थे, सब लोगोंने यह बात आँखसे देखी थी।

गत ता० २७ जून सन १८८१ सालमें बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्यायकी फुलबाड़ीमें आध्यात्म बिज्ञानके वादि-योंकी सभा बैठी थी। चक्रमें बैठनेके पहिले ही ब्यूनन साहबने नित्यनिरञ्जनको मेसमेराइज करना शुरू किया। थोड़ी ही देरमें वह डरकर चिल्लाने लगा। सबब पूछ-

में उसने कहा कि सामनेके आईनेमें दो ज्योतिमय योगी खड़े हैं। तुरत ही उसका भय जाता रहा, वह ठंढा हो गया और उसी समय अचेत और स्पन्दहीन होकर टेबलपर पड़ रहा। पीछे सब लोगोंने उसे उठा कर बिछावनपर सोला दिया। तब उसका हाथ हिलने लगा। हम लोगोंने एक पेन्सिल उसके हाथमें दिया और कागज उनके नीचे रख दिया, तब प्रश्न पूछनेसे जोकुछ उन्होंने जवाब लिखा उसका सारांश नीचे लिखते हैं।—

मेरा नाम है गङ्गागोविन्द मुखोपाध्याय। पश्चिमोत्तर प्रदेशमें मेरा जन्म हुआ था। ४९ बरस हुए, मैं ज्वर रोगसे पीड़ित होकर मर गया था। उस समय मेरी उमर ८५ बरसकी थी। मैंने व्याह नहीं किया था। मेरे शिष्य देवेन्द्रनाथ तर्करत्न इस समय मेरे साथ हैं। गत रविवारको यह तुम लोगोंके चक्रमें आये थे। मैंने इन्हें योगाभ्यास करनेकी शिक्षा दी थी। मेरे माबाप काशीमें रहते थे। मेरी १८ बरसकी उमरमें मेरे पिता परलोक सिधारे और उसी शोकसे उसके २०।२२ दिन बाद मेरी मा भी चलती हुईं। संसारमें तब मुझे कोई नहीं रहा, इस लिये मैं लोगोंका संग छोड़कर बन ही बन घूमने लगा और रोने लगा। जीते रहनेकी कुछ भी खाहिश नहीं थी। एक दिन देखा कि उस बनमें एक जगह आग जल रही है, मैं वहीं गया। वहाँ जाकर देखा कि एक योगी जी ध्यान लगाये बैठे हैं। तमाम रात मैं बड़ी भक्तिके साथ उन्हीके पास ठहरा रहा। सुबह होनेपर उनका ध्यान पूरा हुआ, उन्होंने बड़े आश्चर्य्यसे मेरी ओर देखा, लेकिन

कुछ बोले नहीं,बल्कि और भी घने जङ्गलकी तरफ रवाना हुए। मैं भी उनके पीछे पीछे चला। पीछे एक सरोवरमें स्नान करके ऊपर आनेके समय फिर मुझे देखर रंज हुए और बोले "मेरे साथ क्यों आता है रे?" मैं तब रोने लगा, उन्हें दया आई, अपने साथ ले चले। एक दूसरी राहसे वह चले और मैं उनके पीछे पीछे चला। पीछे उन्होंने मुझे एक पहाड़की गुफाके पास बैठाकर खुद गायब होगये। शामको मैंने फलमूल ढूंढ़के खाया। सात दिन ऐसे ही बीते। आठवें दिन उनसे फिर अचानक मुलाकात हुई, तब उन्होंने पूछा "तू कौन है और क्यों आया है?" मैं तब उनके पांवपर गिर गया और कहा "संसारकी किसी वस्तुकी मुझे चाह नहीं है। सिर्फ आपके साथ रहना चाहता हूं।" इस तरहसे मैं रहने लगा। एक बरसर बीत गया। एक दिन उनके साथ जंगलमें टहलता था। तीन घण्टे टहलते बीते, तब वह अचानक अदृश्य हो गये। मैंने उन्हें बहुत खोजा तब एक जगह मृगचर्म्मपर बैठे ध्यान किये मिले। हाथ जोड़के उनके सामने खड़ा रहा। इस बार जब उन्होंने आंखें खोली तो मुझसे कहा "बच्चा! मैं तुम्हें अपनी सब विद्या सिखला दूंगा।" इस तरहसे मैंने उनसे १२ बरस तक योग सीखा, एक दिन उन्होंने मुझसे कहा "मैं कहीं जाता हूं, तुम यहीं रहो और भगवानका भजन किया करो।" उस दिनसे मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा, तौ भी ३ बरस तक उसी जगह बैठकर मैंने तपस्याकी। उसके बाद मैं विन्ध्या चल पहाड़को चला गया। वहां कुछ

दिन ठहरनेके बाद मुझे इस शिष्यसे मुलाकात हुई, और मैंने इसे पूरा योगाभ्यास सिखलाया। तब ६ महीनेके बाद मैंने चोला छोड़ दिया। मरनेके बाद वहाँ बहुत से नये नये लोगोंसे जानपहचान हुआ, उन लोगोंके साथ मैं नई नई जगहोंको देखता फिरता था। कई जगहोंमें बड़े बड़े महर्षियोंको आत्माको ध्यानमें मग्न देखा। उनमेंसे एक ज्योतिमय महापुरुषने मुझे इशारेसे बुलाकर कहा कि पुण्यवान आत्माओंका यही स्थान है; इसको छठां स्वर्ग कहते हैं। उन्होंने इतना कहके मुझे भी ध्यान करनेको कहा और अन्य लोगोंने कहा कि संसारमें तुमने बहुत कष्ट भोग किया है सो यहाँ अब कुछ दिनों तक सुख भोग कर लो। उसी समय मैं भगवानके ध्यानमें मग्न हो गया। पीछे आंख खोल कर जगतपिताकी असीम दयाके चिन्होंको चारों ओर देखने लगा। चारों तरफ़ जो जो मनोहर पदार्थ देख पड़ने लगे और उनसे मेरा मन कैसा प्रेमानन्द पूरीत होता था सो वर्णन करना असम्भव है। ऐसा कोई पाषण्ड नहीं है जिसका मन वह सब देखकर भी न गले। हे जगदीश्वर! तुम्हारी दया असीम है। हे सर्व्वशक्तिमान! तुम्हारे चरणोंको प्रणाम करता हूं। मरनेके बाद पापपूर्ण पृथिवीपर मैं आज ही पहिले पहिल आया हूं।

इस समय मिडियमको बड़ी तकलीफमें देखकर विपरीत पासके द्वारा उसका तन्द्रा भङ्ग करके उसे होश कराया गया। पूछनेसे उसने कहा मुझे नींद आगई थी; और जिस समय साहबने मेसमेराइज किया

था उस समय मालूम हुआ था कि सामनेके आईनेके पास खूब लम्बे चौड़े शरीरवाले जटाधारी ज्योतिमान् अपरिचित दो आदमी खड़ें हैं, उन्हे देखकर मुझे डर हुआ था। उसके अलावें मैं कुछ नहीं जानता हूं।

मेसमेरिज्मकी दूसरी अवस्थाका नाम क्लेयारभो-आयन्स है। वह अवस्था जिसको प्राप्त हो जाती है, उसके कपाल वा पेटसे चिट्ठी वा पुस्तक सटा देनेसे वह उसे बखूबी पढ़ लेता है। मेसमेराइजरकी आज्ञा-नुसार उसकी आत्मा दूर दूर स्थानोंमें जाकर वहांकी खबर ला सकती है। १७ बरस हुए, मैंने इस सम्बन्धमें एक पुस्तक अध्यापक ग्रेगरी साहबकी लिखी पढ़ी थी। उसमें लिखा था कि इस दशाको प्राप्त होनेपर मेसमेरा-इज्ड अर्थात निद्राभाजन पीड़ित आदमीके पीड़ित अंग और उसकी मुनासिब दवाकी एक सूक्ष्म सुफेद चांदीके तारसे बंधा देखता है। उस समय मेरी स्त्रीको बड़ा दर्द होता था। डाक्तरोंने उसे असाध्य कहके छोड़ दिया था। मैंने तब उन्हे मेसमेराइज किया; जिस जगह दर्द होता था उसे थाम्हकर पूछनेसे उन्होंने कहा कि इस जगहसे निकलकर दो सफेद सूत पश्चिम तरफके घरमें टेबुलके दक्षिण किनारे तक गये हैं। तब उनकी तन्द्रा तोड़ दी गई और उस घरमें जाकर देखा कि टेबुलके दक्षिन किनारेपर दो शीशी होमियोपैथिक दवा रखी है। अब यह कैसे मालूम हो कि इन दोनोंमेंसे कौन दवा आराम करनेवाली है? इस लिये मैंने दोनो दवा उलट फेरके उन्हे दिया। तीन ही दिनोंमें वह अच्छी हो गई।

मेसमेरिज्मकी तीसरी अवस्थामें भविष्यत देख पड़ती है। चतुर्थ अवस्थामें दूसरे स्वर्गकी शोभा देख पड़ती है और मुक्तात्माओंके साथ बात चीत जान पहचानसे मन इतना खुश होजाता है कि वहांसे लौटनेको तबीयत नहीं होती है। एक बार एक क्रिस्तान मेसमेराइज किया गया था। वह अचैतन्य हो गया। पूछनेपर उसने कहा कि मैं एक ऊंचे पहाड़पर बैठा हूं और सामने एक सुन्दर नगर देख रहा हूं। वहांके सब आदमी ज्योतिमान हैं। यहांसे लौटनेकी अब मेरी खाहिश नहीं है। तब बड़ी बड़ी मुश्किलसे वह होशमें लाया गया।

रसायन शास्त्रके अद्वैत पण्डित विलायती प्रोफेसर ग्रेगरीकी पुस्तकसे एक बारकी घटना नीचे उद्धृत करते हैं।

एक बड़ी धर्म्मात्मा बीबी बीमार पड़ने पर काहगनेट डाक्तरकी दवा खाती थी। वह डाक्तरकी आज्ञा लेकर इस चौथी अवस्थाको प्राप्त कर ले सक्ती थी। एक दिन डाक्तरने उसे मेसमेराइज करके चौथी अवस्थामें जानेकी आज्ञा दी; किन्तु पीछे वह शरीर छोड़कर एक दम चली न जाय इस लिये उसके पास ही एक लड़केको भी मेसमेराइज करके उसकी आत्मापर निगाह रखे रहनेको कहा। बीबी पहिले अज्ञान हुई, तब देखते देखते उसका शरीर विवर्ण, कड़ा, ठंढा, नाड़ी रहित हुआ, फिर स्वास भी बन्द हो गई। इस समय लड़का चिल्ला उठा "आह! वह चली गई, उसकी आत्मा अब देख नहीं पड़ती।" अब तो डाक्तर साहबकी विपद पड़ी। उसे

फेर लानेके लिये बड़ी कोशिश करने लगे। जब किसी तदबीरसे वह नहीं फिरी तब डाक्तर साहब लाचार होकर बड़ी भक्तिसे भगवानका भजन करने लगे। तब धीरे धीरे उस बीबीका शरीर गर्म हुआ, श्वास भी चलने लगी। बीबीको जब होश हुआ तब उन्होंने इस सुखसे वञ्चित होनेके कारण डाक्तर साहबको बहुत गाली फजीहत और तिरस्कार करने लगी। डाक्तर साहबने उसे तब समझाया कि अगर आपको मैं वापस नहीं मगा लेता तो आप आत्महत्या करनेके पापसे दुखी होतीं। बीबी यह बात सुन कर शान्त हुईं।

हमने पहिले ही कहा है कि बहुतसे आदमी खुद बखुद क्लेआरभोआयण्ट होजाते हैं। किस कारणसे किस अवस्थामें वा किस प्रकारसे वह उस अवस्थामें पहुंच जाता है सो सब बातें वह नहीं बतला सक्ता है। होता है क्या कि उस दशामें पहुचनेके पहिले वह अचानक अन्यमना होकर बुद्धि रहित हो जाता है। उसे दशाको अगर "जगेमें स्वप्न" कहें तो कुछ हर्ज नहीं। प्रोफेसर ग्रेगरीहीको किताबसे नीचेकी कथा भी उद्धृत करते हैं।

एक भली विलायती औरत कभी कभी ऐसे ही "जगेमें स्वप्न" देखा करती थी। बीबीका बड़ा लड़का दूसरे-शहरमें रहता था। एक दिन शामके बाद बीबीने देखा कि मेरे लड़केके घरका दरवान हाथमें चिराग लेकर आहिस्ते आहिस्ते घरमें पैठ रहा है और उसके कोटके जेबसे तुरङ्गकी कुञ्जी निकालकर तुरङ्ग खोलरहा है। तब उस दरवानने उस तुरङ्गमेंसे एक पाकटबुक निकाल-

कर उसमेंसे ५०० रुपयेका एक नोट निकाल लिया और उस पाकट बुकको फिर ज्योंका त्यों पहिली ही जगहमें रख दिया। फिर तुरंगको बन्द करके उसने कुञ्जी चुपचाप कोटके पाकटमें रखदी और चुप चाप घरसे निकल आया। बीबीको यह सब देखकर बड़ा आश्चर्य्य हुआ, बड़ी घबड़ानी। दूसरे ही दिन बीबी अपने बेटेके यहां गई और कहा कि बेटा अपना नोट तो खोजो। बेटेने तुरंग खोलकर देखा तो नोट नहीं पाया। आगे अपनी माकी जबानी सब बातें सुनी, पर कहा कि इस सुबूतपर मैं उसके नाम नालिश नहीं करूंगा। परन्तु नोटका नम्बर जाना हुआ था, इस लिये उन्होंने बङ्कको चिट्ठी लिखकर उस नोटका रुपया बन्दकर दिया और सब अखबारोंमें इसकी खबर देदी। दरवानको जवाब देनेके कुछ दिन बाद एक दूसरी चोरीके मुकद्दमेमें उस दरवानकी खानातल्लाशी हुई। उसी समय यह नोट भी उसके बटुयेमेंसे उसकी कमरसे निकला।

हम लोगोंके देशमें इस तरहसे "जगेमें स्वप्न" देखनेके ४।५ उदाहरन हमलोगोंके सामने हुए हैं, उनमेंसे एकका जिक्र यहां करते हैं।

जेसोरके पास ही नीलगंज नामका एक छोटासा गांव है। १६।१७ बरस हुए, यहां एक सूंड़ीकी बूढ़ी लड़की रहती थी। उसे क्लेयारभोआयनसकी शक्ति थी इस लिये उसे लोग "हरि ठकुराइन" कहा करते थे। उस समय वह अन्न पानी सब छोड़कर सिर्फ एक शाम कभी कभी कुछ फलमूल आहार कर लिया करती थी।

मैं और वहांके डिपूटी मजिष्टर पण्डित श्रीचन्द्र विद्या-रत्न दोनों आदमी एक दिन दोपहरको उसे देखने गये। देखा कि वह एक बहुत ही सामान्य झोपड़ीमें रहती है। बहुत ही मामूली मैला कपड़ा, बिना तेलके केश उड़ते हुए और दिन रात सिर हिलता रहना है। विद्या-रत्न महाशयको देखते ही उसने उनकी गुप्त पीड़ाकी सब बातें कहके कहा कि यह बीमारी छुटनेवाली नहीं है। आश्चर्य्यकी बात यह कि वह मेरे बड़े दोस्त थे, कभी कोई बात मुझसे न छिपाते थे, खास करके मैं ही उनके घरके सब लोगोंकी दवा किया करता था। किन्तु इस बीमारीकी बात उन्होने मुझे भी कभी नहीं कही थी। मैं उस समय कोई खास बात पूछनेके लिये नहीं गया था, लेकिन उस बुढ़ीने मुझे देखते ही कहा "दक्षिन पश्चिम-तरफसे (ठीक जेसोर) आते हो। आहा! कैसा सुन्दर लड़का है—गोया राजपुत्र है।" मैंने यह कुछ नहीं समझा इस लिये कहा "आप क्या कह रही हैं सो मैं कुछ नहीं समझता हूं।" तब बढीने सिर हिलाते हिलाते कहा "बूझोगे क्या? अभी भी नौ महीना—नहीं नहीं आठ महीना—बाकी है। घर जाकर खोज करनेसे बूझोगे।" हम लोग वहांसे तब चले आये। रास्तेमें मैंने विद्या रत्न महाशयसे पूछा तब उन्होंने बड़े आश्चर्य्यके साथ अपनी बीमारी दिखलाई। घरआके दरियाफत करनेसे मालूम हुआ कि मेरी स्त्री महीनेसे गर्भवती है। उसी गर्भसे मेरे बड़े लड़केका जन्म हुआ। इस गर्भकी बात मैं कुछ भी नहीं जानाता था।

कलकत्तेसे १२ कोस दक्खिनको एक गांव है। वहां एक भले घरकी धनवान स्त्री भी इसी तरहसे यह शक्ति रखती है। इनकी उमर ५०।५५ बरस होगी विधवा है, उन्हे कोई लड़के बाले भी नहीं हैं। बड़ी धर्मात्मा है,—पूजा पाठ जप तपहीमें दिन रात लगी रहती है। यह कभी कभी सूक्ष्मात्माओंको देख भी सकती है और सैकड़ों बार उन सबके जरिये दवाई जानकर उन्होंने कितने ही आदमियोंको कठिन कठिन बीमारियोंसे आरोग्य किया है। दवाई पानेके बारेमें एक दिन पूछनेपर उन्होंने कहा कि जब किसीकी बीमारीके बारेमें मैं डूबके सोचने लगती हूं तब मैं अचेत हो जाती हूं और उसी समय न मालूम कौन आके मुझे दवा बतला देता है।

इस मेसमेरिज़्मके बारेमें एक और आश्चर्यकी बात कहेंगे। सुनते हैं कि मेसमेराइज होजानेपर कोई कोई भूत भविष्यत सब कुछ जान लेता है। उस अवस्थामें रहनेसे सिरका केश, हाथका रूमाल, बदनका गहना, वा और कोई व्यवहार किया हुआ पदार्थ पानेसे जिसका वह पदार्थ रहता है उसके बारेमें सब बातें कह देता है।

हम लोगोंके देशमें हाथ चलाना, नल चलाना, कौड़ी चलाना—सब ही मेसमेरिज़्मकी बदौलत होते हैं। और स्वभाविक अवस्थामें भी बहुतसे आदमी खुद बखुद मेसमेराइज होजाते हैं। इस देशमें उन लोगोंको "जान" कहते हैं। नीचे लिखा हुआ किस्सा "घोष्ट-लैण्ड" नामकी पुस्तकसे लिया गया है। कुछ दिन पहिले जर्मनी देशकी पुलिस मेसमेर-

जिसकी सहायतासे बहुतसी घटनाओंकी असली बातें जान लेती थी। एक बार एक धनवती विधवा अपने घरमें मरी पाई गई। मारनेवालेने उसके घरका सब सर्व्वस्व ले लिया, पर कहांसे आया, कहां गया, वह कौन था, ये सब बातें पुलिस कुछ नहीं जान सकी थी। उस समय बभेरिया देशका रहनेवाला जुइङ्गलर नामका "जान" वहां रहता था। उसके पास जाकर पुलिसने उसे सब बातें कही। खूनीका नाम किसीको मालूम नहीं था—स्त्री वा पुरुष था, सो भी कोई नहीं जानता था। मुरदेकी गरदनपर उंगलीका चिन्ह और उसके खूनसे रंगा पैरका बहुत बड़ा दाग जमीनपर देखकर लोगोंने खूनीको पुरुष समझा था। लोहूमें रंगे रूमालका आधा हिस्सा मुरदेके हाथमें था और दूसरा हिस्सा जमीनपर फटा पड़ा था। मालूम होता था कि मारे जानेके समय उस औरतने खूनीके हाथसे रूमाल छीन लेनेकी कोशिश की थी, इसीमें वह फट गया था। वह रूमाल भी किसी मर्दहीके हाथका मालूम होता था। जुइङ्गलरने रूमालको हाथमें लेकर ऊंचे उठाकर जो कुछ कहा वह मैं उसीके शब्दोंमें कहता हूं। जइङ्गलरने कहा 'हां, मैं देख रहा हूं, हत्याकारी एक अलेन्द्राज जातिका खिद्मतगार है। हाय! कैसा निष्टुर है, बूढ़ी हाथ पांव छटपटा रही है। फिर भी उसने धर दबाया। यह तन्द्रा हुआ, यह मरी। मैं यह सब बातें रूमालमें देख रहा हूं। मेरा जूता और घोड़ा लाओ तो, बहुत दूर जाना होगा। मेरी छड़ी भी देओ और बेगमें पानी पीनेका बर्त्तन रख देओ।' मेरा खाना उस समय तयार

था, पर मुझे भूख प्यास कुछ नहीं मालूम होती थी। फिर रूमाल हाथमें लेकर मैं बाहर हुआ, रास्तेमें सड़कके पासके बड़ पाकड़के फलको छोड़कर और कुछ खाना न मिलता था। कितनी नदियां, जलाशय, मानों होकर चले। उस रूमालमेंसे एक काला सूत आगेको निकला था और रास्ता दिखलाता जाता था। एक शहरमें पहुंचकर वहांके सरायमें गया। खाने-मालिकसे पूछा "इस तरहके चेहरेका आदमी यहां आया था?" वह और उसके सब लोग चकित हो गये, आपसमें एक दूसरेको ओर देखने लगे, तब कहा 'हां जुइङ्गर! आया था, पर चला गया।' मैं बहुत क्लान्त होकर रह रहकर मिट्टीपर सोके आराम करने लगा, परन्तु जिस राहसे हत्याकारी भागा था उस राहसे बाहर कभी नहीं जाता था। जब मैं सो रहता था, तब वह काला सूत मेरी चारों ओर फैला रहता था। इस तरहसे कितने गांव और टोलों होकर मैं चला। जिस जगह जानेसे सूत मोटा और ज्यादे काला देख पड़ता था वहां लोगोंसे जरियाफ्त करता था, तो वे सब कहते थे 'हां जुइङ्गलर! आया था पर चला गया।' एक दिन एक सरायमें खटियेपर मैं सोआ था। उसके एक रात पहिले खूनी वहीं उसी खटियेपर सोया था। उह! उस रातकी बात याद करनेसे इस समय भी रोवें खड़े होजाते हैं। उस बूढ़ीकी चिल्लाहट, गोंगियाहट, हाथ पांव पटकना—गोया मैं ही खून कर रहा हूं। दो पहरके बाद वह सूत मोटा होने लगा, फिर वह एक छायाकी तरह, तब ठीक आदमीकी शकलका होकर

मेरे आगे आगे १ हाथके फासलेपर दौड़ने लगा और रह रह कर मेरी ओर फिरकर देखने लगा। जब बहुत नजदीक आगया तब मेरे हाथसे रूमाल छीन लेनेकी कोशिश करनेकी खहिश करने लगा। इस तरहसे बहुत चोरानुकी खेलने लगा। आखिरमें उसके छिपे रहनेकी जगहपर जाकर मैंने उसे देखकर कह दिया 'यही खनी, यही खनी' तब और सब लोग आये और वह गिरफतार कर लिया गया।"

यह कथा सुनकर एक पुलिस कर्म्मचारीने कहा आश्चर्य्यकी बात तो इसमें यह है कि वह खूनी दिन दिन अपनी पुशाक बदलता था और जिस समय पकड़ा गया, उस समय वह सेलर पहने था।

यह बात सुनकर जुइङ्गलरने कहा "देखो कुत्ते व लेकर अपनी शिकारके पीछे चलते हैं। वैसे ही मैं उन लोगोंकी आत्माको देख लेता हूं। आत्मा एक बार जहां जाती है, वहां उसकी छाया पड़ जाती है। इसी लिये चाहे वह बादशाहकी पुशाक पहने वा फकीरकी, पहाड़पर जाय वा समुद्रमें, मुझसे बचा नहीं रह सक्ता, क्योंकि मैं उन लोगोंकी आत्माको देख लेता हूं, पुशाकपर हरगिज न जाता हूं।

मेसमेरिज्मके बारेमें अब इस पुस्तकमें और कुछ नहीं कहेंगे। जैसे कोई आंखमें उंगली भोंकके दिखला दें वैसे ही इसके जरिये मालूम हो जाता है कि शरीर और आत्मा अलग अलग पदार्थ हैं। दूसरे अध्यायमें स्वप्न और दिकारकी अवस्थाकी कथा कहेंगे। उन दोनों अवस्थाओंमें आत्मा शरीरसे अलग होकर

बहुत दूर चली जा सक्ती है, और कभी भविष्यत भी देख ले सक्ती है।

पाचवां अध्याय

स्वप्न और विकार।

मरजानेके बाद हमलोगोंके आत्मीय स्वजनकी मुक्तात्मा हम लोगोंके पास ही रहती है और विपत्तिसे बचाती है। बाबू प्यारीचन्द्र मित्रका नाम कलकत्तेमें किसने नहीं सुना है! विगत ५० वर्षोंमें इस शहरमें जितने देशहितके काम हुए हैं प्रायः सब ही उनके जरिये। देशके छोटे बड़े सब आदमी, और कहां तक, बड़े बड़े सरकारी वहदेदार भी इनका आदर मान करते हैं। कई बरस हुए, अपनी स्त्रीकी मृत्युके शोकमें बहुत कातर हो कर वह अध्यात्म विज्ञान शास्त्रकी चर्चा इतनी करने लगे कि सन १८६४ सालमें स्वयं मिडियम होगये। आजकल इनकी स्त्री इनके पास रहती हैं और अपने पतिकी यथोचित सेवा करती हैं। जब प्यारी बाबूकी इच्छा होती है तब वह प्रगट भी हो जाती हैं। इस समय वह संसारसे विरक्त, पर संसार हीमें रहकर, आत्माके मुक्तकालकी इन्तजारी कर रहे हैं, और ईश्वराधनामें नियुक्त रह कर दिन काट रहे हैं।

प्यारी बाबूकी पुतोहू सब भी मिडियम हैं। कोन्न-गर निवासी देशहितैषी बाबू शिवचन्द्र देवकी तीसरी लड़की उनकी मझली पुतोहू है। आज ७।८ बरस हुए, शिवचन्द्र बाबूकी दूसरी लड़की अचानक मर गई। उसी दिन उसने प्यारी बाबूके घरमें आकर कहा "बाबा! आप आज कोन्नगर चलिये।" प्यारी बाबू उसी समय उठे, कोन्नगर गये, शिवचन्द्र बाबू और उनकी स्त्रीको लेकर एक चक्रमें बैठ गये। उस रात शिव-चन्द्रकी स्त्रीने मिडियम होकर लिखा "मातः! मैंने आपका बहुत अपराध किया है, क्षमा कीजिये बहुत तर-हके कष्टसे बचकर इस समय मैं सुखसे रहती हूं, यह बात सुन कर आप भी अवश्य ही सुखी होंगी। स्वाक्षर—दासी" इससे मनमें बड़ा ही शोक और संताप हुआ। तमाम रात रोती रहीं, सुबहको प्यारी बाबूने समझाया कि साबिक दुखकी बात भूल जाइये और इस वक्ते वह सुखसे है सो ही बात खयाल कीजिये। इस तरहपर बहुत समझानेसे उनका दुख कुछ दूर हुआ उस दिनसे देवजीकी स्त्रीको अपनी बेटीके मरनेका दुख बहुत कुछ जाता रहा।

बड़े बजारके प्रियनाथ सेनको बहुत आदमी जानते हैं। छोटी उमरमें उनकी स्त्री जाती रही। लेकिन लड़के बाले मौजूद थे, इस लिये उन्होंने विवाह नहीं किया। प्रिय बाबूकी स्त्री सदा उनके पास रहती थीं और आपद विपदसे उनकी रक्षा करती रहती थीं। कई बार उनको मरनेसे भी उन्होंने बचा दिया था। आज १७।१८ बरसकी बात है, तब हावड़ा जानेका पुल

न बना था। कई आदमियोंको साथ लेकर प्रियबाबूको उस पार जानेकी जरूरत हुई थी। उस समय घाटपर कोई दूसरी नाव नहीं थी, इस लिये एक खुली डेंगीपर सब लोग सवार हुए। सुबहका वक्त, आंधी पानीका कोई चिन्ह न था। प्रियबाबूने नावपर चढ़नेके लिये एक पैर उठाया, कि इतनेहीमें मालूम हुआ जैसे कोई पीछेसे कपड़ा पकड़के खींच रहा है। पीछे फिरके देखनेसे अपनी स्त्रीकी करतूत समझके वह नावपर न चढ़े। नाव बीच धारमें जाकर एक दमसे डूब गई।

जब तमाम दिनकी मिहनतके बाद सोनेके समय शरीरके क्लान्त होजानेसे वाह्यिक इन्द्रिय सब अपने अपने कामसे थक जाते हैं तब आत्मा भीतरकी आंखसे सब कुछ देख सक्ती है और कभी कभी देहका परित्याग करके दूसरी दूसरी जगह भी चली जाती है। अवरक्रम्बी साहबने अपनी पुस्तकमें लिखी है कि एक सिपाही तमाम दिन लड़ाई करके शामको थककर एक घरमें जाके सो गया। नींद खूब गाढ़ी थी। उस समय उसने देखा कि वह घर फांक फांक होके गिर रहा है। झटपट वह आंख मूंदे ही उठा और वहांसे भागा। अलग जाकर उसने देखा कि बिना अन्धर बिना पानी, वह घर भड़भड़ाके गिर गया। इस तरहके उदाहरण हजारों दिये जा सकते हैं, परन्तु मुझे पूरी उम्मीद है कि इस तरहकी घटना प्रायः सब आदमीने देखी है। इस लिये अधिक दृष्टान्त देनेकी जरूरत नहीं। लेकिन ऐसा मत समझना कि जितना स्वप्न देखते हैं सब ही आत्माकी इस शक्तिके कारण। विज्ञान शास्त्र

वाले कहते हैं कि जगे रहनेपर हम लोग जो जो काम करते हैं उनके छाप हम लोगोंके मस्तिष्कमें पड़जाते हैं। और निद्रा वा पीड़ा होनेपर वेही सब छाप देख-पड़ते हैं, तब हम लोगोंको विश्वास होता है कि हमलोग उन्हो कामोंको फिर कर रहे हैं। पहिली अवस्थाके कामोंको स्वप्न और दूसरी अवस्थाके कामोंको विकार कहते हैं। दोमेंसे किसी अवस्थामें, स्थान और कालकी स्थिरता नहीं रहती है। ऐसा मालूम होता है कि अभी लड़कपन है और दिहाती लड़कोंके साथ वही पुराने खेल खेल रहा हूं और अभी यह भी मालम होने लगता है कि कचहरीमें मामला मुकद्दमा कर रहा हूं। इसमें दिहातसे शहरतकके बीचके स्थानका और लड़कपन और जवानीके बीचके समयका कुछ भी हिसाब नहीं रहता है। इस तरहसे, विकारकी अवस्थामें कई तरहसे विह्वल होना पड़ता है। कुछ दिन हुए, हमारे चिकित्साधीन एक पांच वरसके लड़केको हैजा हुआ। उसमें वह इसी विकारके पाले पड़ा रह रहके कह उठता था "तालव्य श देकर मध देकर खाओ"। पीछे खोज कर करनेसे मालूम हुआ कि वह बीमार पड़नेके पहिले गुरुजीकी पाठशालमें पढ़ता था और कविराजकी दवा खाता था। इसी गुरुजीका "तालव्य श" और कविराजका "मध अनुपान" इन्ही दोनोसे उसको विह्वलता हुई थी। लेकिन विह्वततासे आदमी ऐसी बे सिर पैरकी बातें बोलते हैं कि उसका कोई कारण नहीं दिया जा सक्ता। इसका भी एक दृष्टान्त सुन लीजिये। घटना २७ वरसकी है, उस समय मैं कालिजमें पढ़ता था। एक

छिन. रातको स्वप्न देखा कि बैलगाड़ीपर सवार होकर मैं देश भ्रमण कर रहा हूं। जिस घरमें डेरा पड़ा उसको तीन तरफ मिट्टीकी दीवार थी और चौथी तरफ खुली। इस तरहका घर इस देशमें कहीं नहीं होता है। घरके आगे एक बहुत बड़ा बड़का पेड़ था। अपरिचित स्थान देखकर मनमें बड़ा डर हुआ, पासके एक आदमीसे पूछा 'यहांसे थाना कितनी दूर है?" उसने उंगलीसे इशारा करके कहा "यही तो तीन घरोंके बाद ही थाना है।" तब घरमें गये। पीछे बड़ी रातको एक दल डाकू आके इस घरको लूटने लगे—मेरी भी सब कुछ लूटपाटके ले गया। डाकुओंके कोलाहलसे मेरी नींद छूट गई, कलेजा धड़ धड़ करने लगा। बहुत देर बाद होश हुआ, परन्तु स्वप्नमें जोकुछ देखा सो आंखोंके सामने ही धरे रहे। उसके ठीक ६ महीने बाद कालिज छोड़कर आब-हवा बदलनेके लिये पश्चिमको जाना पड़ा—गये मुज-फ्फरपुरकी तरफ। उस समय इस देशमें रेल नहीं बनी थी। एक बड़ी नाव भाड़ा करके धीरे धीरे एक महीनेमें बागमती नदी होकर पूसा गांवमें पहुंचे। वहां हिसाब करके देखनेसे मालूम हुआ कि बैलगाड़ीके जरिये दो दिनमें और नावके जरिये दो सप्ताहमें मुजफ्फरपुर पहुंचंगे, इसलिये एक बैलगाड़ी भाड़ा करके चले। रातको ८।९ बजनेपर एक जमीन्दा-रके घरपर पहुंचे, उसने हम लोगोंकी बड़ी खातिर दारी की, अपने घरमें रख लिया। मैंने गाड़ीसे उतरकर देखा कि पहिले स्वप्नमें जो घर देखा था उसी घरमें डेरा पड़ा है, उसके दरवाजेपर वही बड़का पेड़ है, और वहां

वेही सब लोग बैठे भी हैं। मैंने बड़ा चकित होकर पूछा "यहांसे थाना कितनी दूर है?" एक आदमीने उंगलीसे इशारा करके कहा "यही तो तीन घरोंके बाद ही थाना है।" मैंने देखा कि अब सिर्फ डकैती होनी बाकी है। सो झट पट फिर अपनी सब चीज गाड़ीपर रखके उसी समय उस गांवसे विदा हुए। उस समय मेरे बड़े मामा उस जिलेमें एक अच्छी नौकरी करते थे, और उस जमीन्दारके साथ उनकी दोस्ती थी, इसी लिये उन्होंने हम लोगोंकी इतनी खातिरदारी की थी। पर जब हम लोग किसी तरहपर रहनेको राजी न हुए तब उन्होंने खाने पीनेकी बहुतसी चीज साथ कर दी और रातको चोरोंसे हिफाजत करनेके लिये अपने रखवारको हम लोगोंके साथ कर दिया। दूसरे दिन शामको मुजफ्फरपुर पहुंचकर हम लोगोंने सुना कि उसी रात उस घरमें चोरी हुई, बिचारे जमीन्दारको चोरोंने एक चीज भी न छोड़ा।

विकारकी अवस्थामें भी आत्मा देहसे स्वतन्त्र होकर अन्य स्थानोंको जाती है और आन्तरिक आंखसे देखती है। स्वत राजा राधाकान्तदेव बहादुरके नाती बाबू आनन्द कृष्ण बसुका नाम बहुत लोगोंने सुना होगा। राजा बाहादुर वृन्दावनमें रहकर जब परलोक सिधारे, तब थोड़े ही दिन बाद आनन्द बाबूको ज्वर लगा। उसीमें एक दिन उनका पखाना पिशाव सब बन्द हो गया, उन्हे बड़ा कष्ट होने लगा। रातको करीब एक बजे उन्होंने अपने छोटे भाई बाबू जयकृष्ण बसुको नजदीक बुलाके कहा कि बड़े बजारके पास एक पक्के घाटपर

एक ३०।३५ बरसकी उमरवाले गोबर्द्धन सन्यासीके पास मेरे रोगकी दवा है। ५ बजते बजते उन्होंने अपने भाईके कानमें कहा कि सन्यासीने ढाई मिर्चके साथ दवा खिला दी है, पखाना पिशाब सब होता है, अब जल्द छूट जायगा। दूसरे दिन जगन्नाथ घाटपर वह सन्यासी मिले। वह आये और केवल आशीर्वाद देकर चले गये। उसी दिनसे उनकी बीमारी छूटने लगी। उस दिन सब लोगोंने समझा था कि राजा साहबकी मुक्तात्माने आकर उन्हे दवा खिला दी है।

चार बरसकी बात है—एक दिन वर्द्धमान चिकित्सा करनेको जाकर वहांसे फसली बुखार लेते आया। धीरे धीरे यह ज्वर बढ़ गया, विकार हो गया। ज्ञान रहित हो गया। देहमें दाह और प्यास इतनी हुई कि एक जरा भी कल नहीं होता था। जीनेकी कोई उम्मीद नहीं थी। उसी समय अचानक तन्द्रा हुआ। एक जानीसुनी मुक्तात्मा सामने आई और कहने लगी "बहुत दुख पा रहे हो, इसपर सो जाओ।" मैं सो रहा। देखते देखते वह मुझे समुद्रके किनारे ले गई। वहांकी समुद्री हवा लगनेसे दाह और प्यास एक दम जाती रहीं। पांच मिनटके बाद तन्द्रा छूटनेपर देखा कि शरीरमें अब कोई कष्ट नहीं है। बिछावनपर उठ-बैठे और आधसेर दूध पी गये। डाक्टर साहब और घरके सबलोग चकित हो गये।

स्वप्नमें दवा पानेकी बात बहुत लोग जानते हैं। बहुत दिन हुए, पण्डिताग्रगण्य श्रीयुक्त ईश्वर चन्द्र विद्यासागरके पिताके पैरमें घुरघुरा घाव हुआ था।

दवा करानेको कलकत्ते लाये गये, डाक्तरोंने कहा पर काट देना होगा। बूढ़े ब्राह्मणको काटखोंट पसन्द न हुआ, मरना ही निश्चय करके घर जा बैठे। उनकी स्त्री बड़ी पतिव्रता थीं, दिन रात अपने स्वामीकी सेवामें लगी रहती थीं, उन्हींकी चिन्ता सदा किया करती थीं। "ध्यान करनेसे महादेव भी प्रगट हो जाते हैं।" एक दिन सोतेमें ब्राह्मणने देखा कि दरवाजेपरके डबरेके उसपार एक पोटरीमें उनके घावकी दवा रखी है। उसी समय खोज की गई, एक पोटरी मिली, उसमें एक जड़ी थी; उस जड़ीको गंगाजलमें घसकर कुछ पीने लगे और कुछ घावपर लगाने लगे। तीन ही चार दिनमें घाव कहाँ गया सो पता न रहा, बाकी जड़ीसे गाँवके और कितने लोगोंका घाव छूटा। विद्यासागरजीके भाई पण्डित दीनबन्धु विद्यारत्नकी खास जबानी यह बात मैंने सुनी थी।

एक दृष्टान्त और देते हैं। उस समय मेरी उमर १२।१३ बरसकी रही होगी। मैं बरासतमें अपने ननिहालमें रहता था। मेरे मामाके घरके पास गंगाहरि नामका एक ब्राह्मण रहता था। दम्मा खांसी रोगसे गंगाहरि मरने पर हुआ। उस समय डाक्तरोंकी इतनी चलती नहीं हुई थी—कविराजजीने उसे असाध्य करके छोड़ दिया था। एक दिन उसकी दशा मरनेके समान हो गई, लोगोंने उसे तुलसीके तले निकाल दिया। उसके घरके सब लोग रोते पीटते जहाँ तहाँ मिट्टीपर पड़े थे। इसी समय एक आदमीने देखा कि गंगाहरिकी दहिनी मुट्ठी लतखी है बन्द होती है, खुलती है,

वन्द होती है। उसके पास जाके देखे तो उसके हाथमें एक जड़ी पड़ी हुई मिली। उस जड़ीको गंगाजलमें घसके कुछ उसको पिला दी गई और कुछ उसकी कमरमें लगा दी गई। गंगाहरि इसीसे जो गया और करीब २०।२२ वरस तक हट्टा कट्टा वना रहा। उस समय होश होनेपर उसने कहा कि भगवान वृद्ध ब्राह्मणकी शकल वनकर आये और यह जड़ी मेरे हाथमें रखकर चलते हुए।

ताड़केश्वरमें धरना देकर दवा पानेकी वात बहुत लोग जानते हैं। वहाँ मन्दिरके पास विना अन्नजल किये एकाग्रचित्त होकर धरना दिये पड़ा रहना होता है। पीछे उसी समय वा कुछ देर वाद किसीको दवा हाथमें आजाती है, किसीको दवा मिलनेका ठिकाना मालूम होजाता है, वा किसीको खवर हो जाती है कि तुम्हारी बीमारी न छूटेगी। मैंने देखा है कि कई कठिन कठिन वीमारीवाले इस तरहपर करनेसे आरोग्य हो गये हैं। कलकत्ता निवासी वाबू प्रियनाथ दत्त सरकारी एकाउण्ट सरिश्तेमें एक प्रधान अमला हैं। तीन वरस हुए उनकी स्त्रीको मूर्च्छा (हिष्टीरिया) वीमारी हुई। मैं और डाक्तर महेन्द्रलाल सरकार दोनो उनकी दवा करते थे। हम लोग विचार कर जो दवा देते थे उससे रोग घटनेके वदले बढ़ता ही जाता था। आखिरमें लाचार होकर प्रियनाथ वाबूने हम लोगोंको जवाव दे दिया और अपनी बहनको ताड़केश्वर भेज दिया। रास्तमें एक चट्टीमें डेरा करके वह सोई थी, उसी समय किसीने उसका नाम पुकारके कहींसे कहा

"फलानी! तु फलानीकी मूर्च्छा छोड़ानेके लिये ताड़के-श्वरमें धरना देने जाती है? अब वहां मत जा; ले, हाथ पसार मैं दवा देता हूं। उसके सिरपर दहिनी तरफ एक जगह धूकधुक कर रही है, उसी जगह यह जड़ी केशमें बांध देना।" बहिन घर लौट आई और देखा कि सचमुच रोगीके सिरमें वह जगह धुकधुक कर रही है और उसने यह बात कभी किसीसे नहीं कही थी। जड़ी बांधते ही उसके रोग जाते रहे।

कई तरहके रोगोंसे पीड़ित एक भले घरकी स्त्रीकी दवाके लिये एक मुक्तात्मासे कई बार कहा गया। पहिले तो तीन दिनों तक वह किसी तरहसे राजी नहीं हुई, पर बहुत कहने सुननेसे उसने कहा "मुझे अपनी तो कोई शक्ति नहीं है, पर आजसे छः रोज बाद ठीक इसी समय मैं एक ऊंचे दर्जेकी आरोग्यकारी मुक्तात्माको ले आऊंगा। अगर वह दया करेगी तो रोग छूट जायगा।" उस समय रात थी और घड़ी खोलकर देखनेसे मालूम हुआ कि नौ बजनेमें पांच मिनट बाकी था। जिस दिनका करार था उस दिन अर्थात ८ वीं सितम्बरको ८ बजे रातको मिडियम अचेत हो गया। ५५ मिनट तक मुरदेकी तरह पड़ा रहा, पुकारनेसे कुछ चालबोल नहीं देता था, सिर्फ ठहर ठहरके उसका समूचा शरीर थर थर कांप उठता था। ठीक ९ बजनेमें जब ५ मिनट बाकी रहा, तब मिडियमने उठकर रोगीको मेसमेराइज करना शुरू किया और कहा कि "आज जिस तरहसे चक्रमें बैठे हो वैसे ही सब आदमी ठीक इसी तरहसे इसी समय अपने ही अपने ही स्थान-

पर आजसे सात दिन तक बराबर बैठते रहो, हम लोग दूरहीसे आरोग्यकारी ज्योति प्रदान करेंगे। लेकिन देखना, कोई बाहरी आदमी इस चक्रमें वा इस घरमें न आजाय।"

दूसरे दिन जब हम लोग चक्र बनाके बैठे तब उसने कहा "परसों दस बजे रातको मैं एक जड़ी लाके तुम्हे दूगां। जबतक चक्र बैठे तब तक रोगी अपनी गरदनमें वा हाथमें इस जड़ीको बांधे रहे। और जब चक्र उठ जाय तो जड़ी खोलके रख दे।" जड़ी मिलनेका दिन रविवार ता ११वी सितम्बर ठहरा। पर तमाम दिनकी मिहनतसे थक कर मिडियम और चक्रके सब आदमी गाढ़ी नीदमें सो गये। सिर्फ रोगी कभी कभी दर्दसे आह! आह! कर उठती थी। करीब ९ बजे मैंने सब लोगोंको उठा दिया और कहा कि मामूली चक्रमें बैठ जाना बहुत जरूर है। नींदसे मिडियमकी आंखे खुलती ही न थीं, इस लिये चक्रमें बैठनेकी उसकी खाहिश ही न थी। सबसे पहिले जब भगवानकी प्रार्थना और भजनसे छुट्टी हुई तब मिडियम गाढ़ी नीदमें फिर सो गया। एक घण्टे तक कुछ बात चीत नहीं हुई, सब ही चुपचाप थे, सिर्फ चक्रके सरदार ठहर ठहरके भक्तिके साथ भगवानकी प्रार्थना करते थे। ठीक मुकर्रर वक्तपर मिडियम सरफड़ाके उठ बैठा और बोला "मैं आगया"। हम लोगोंने उसे परसोंकी बात याद कर दी, तब उसने कहा "हां, जरूर लादूंगा, तुम लोग बैठो।" इतना कहकर मुक्तात्मा चली गई और मिडियम फिर पहिलेहीकी तरह बिछावनपर लेटके नीदका

सुख भोगने लगा। करीब पांच मिनटके बाद वह फिर उठ बैठा और बोला "यह लेओ, जड़ी ले आया हूं। देखना, जैसे बतला दिया है ठीक उसी तरहसे इसका व्यवहार हो, दूसरी तरहसे व्यवहार न होने पावे," मैंने कहा "जड़ी कहां है?" उसने कहा "क्या अन्धे हो? देखते नहीं वह तो जड़ी है।" इतना कहकर उसने उंगलीसे इशारा करके बतला दिया। मेरे बड़े लड़केने वहां जाकर एक जड़ी पाई और उठाली और मेरे हाथमें लाके रख दी। मैंने मिडियमके हाथमें उसे रख दिया। मिडियम उस जड़ीको १५ मिनिट तक मेसमेराइज करता रहा और उसकी आज्ञासे हम लोग ३४ पृष्ठमें लिखा गीत गाते रहे। पीछे उस जड़ीको रोगीके हाथमें देकर उसने कहा "उन लोगोंने जो गीत गाया है उसमें जो बातें हैं वेही इसके अनुपान हैं, खाली जड़ीसे कुछ होना जाना नहीं है। दिन रात प्रेम श्रद्धा और भक्तिसे ईश्वरकी पूजा, उनके नियमोंका पालन और परोपकार करना एवं मनको आनन्दसे पूर्ण रखना बहुत ही जरूरी है। जड़ी केवल चक्रके समयमें बांधना।" चलते समय उसने कहा "एक और दवा भी बहुत जल्द ला दूंगा।"

चक्र उठ जानेपर भी रोगी बहुत देर तक जड़ी हाथमें लिये रही। उस वजहसे हो, वा और किसी वजहसे हो, उस रात रोगीको बड़ा कष्ट हुआ। किन्तु उसके बिहान होके बीमारी धीरे धीरे छूटने लगी। इसी समय रोगीको राय हुई कि मैं मन्त्र ले लूं। मुक्तात्मासे राय ली गई तो उसने बड़ी खुशीसे कही कि

"इसमें हर्ज क्या जरूर ले लेना।" वह बराबर कहा करती थी "भक्ति प्रेम और श्रद्धा ही मुक्तिकी जड़ है। एक दिन चक्रके समय रोगीको अचानक तन्द्रा हो गया। और उसने तब अपने स्वामीको बुलाकर कहा "देखो—न जाने कौन आकर मेरे कानमें भगवानकी भक्ति करनेको उपदेश देनेके लिये एक गीत सुना रहा है।" दूसरे दिन भोलानाथकी मुक्तात्मा जब रोगीको मेसमेराइज करर हो थी, तब उससे उस गीत गानेवाली मुक्तात्माका नाम पूछा गया। भोलानाथने उस गीतका शेष भाग लिख दिया, पर उसका नाम न बताया।

जो कुछ हो, इसके सम्बन्धमें और उदाहरन देकर किताब न बढ़ावेंगे। इस देशमें कुत्तेके काटकी, सांपके काटकी, दम्मेकी बहुतसी स्वप्न प्राप्त-दवा मशहूर हैं—वे सब मुक्तात्माओंकी दी हुई हैं। इस समय इतना कह-देना ही बहुत है कि आत्मा हम लोगोंकी देहसे अलग है, और जरूरत होनेसे स्वाधीनताके साथ काम भी कर सक्ती है। यह अमर है, चिरोन्नति करना ही इसका काम है। कालपानेसे इसकी अवस्था बदल जाती है परन्तु भावमें कुछ भेद नहीं मालूम होता है। बाहर हमारा जो चेहरा देख रहे हो वह केवल भीतरके चेह-रेकी एक नकल मात्र है। शरीर नष्ट हो जानेसे यह चेहरा भी नष्ट हो जायगा; परन्तु भीतरका चेहरा—जिसे देखकर यह नकल तयार की गई है, वह कभी न नष्ट होगा। इसी लिये परलोकमें भी जिसका जो चेहरा है वह कभी नहीं बदलेगा। पीछे कर्म्मानुसार आत्मा जितना ऊपर उठती जायगी उसका शरीर उतना ही

हलका और ज्योतिमय होता जायगा; किन्तु उससे चेहरेका कुछ भी भावान्तर नहीं होगा। अनन्त कालके बाद आत्मा शरीरके सम्पूर्ण तेजोमय हो जानेपर भी चेहरेका भाव नहीं बदलता है।

पृथिवीमें एक ही चेहरेके दो आदमी कभी नहीं देखे जाते हैं; इसी लिये समूचा परलोक खोजने पर भी एक ही तरहकी देह वाली दो आत्मा कभी नहीं मिलेंगी।

भूत और भूतोंका उपद्रव ।

हमने पहिले ही कहा है कि नीचे दर्जेकी मुक्तात्मा बड़ा उपद्रव किया करती हैं। बुरे आदमियोंकी आत्मा परलोकमें जाकर भी अपनी बुरी आदत जल्द नहीं भूल सक्ती है। भूत वा चुडैलोंसे पकड़ा जाना, घरमें ढेला फकना, लोगोंको भय खाने, वा किसीके मारे जानेकी बात जो हम लोग कभी कभी सुना करते हैं, सो सब इन्ही लोगोंकी बुजुर्गी है। मुक्तात्मा खुद कुछ नहीं कर सक्ती हैं अवलम्ब वा मिडियम न होनेसे वे कुछ नहीं कर सक्ती हैं। वे मिडियमके शरीरसे तेज खींच लेती हैं और तब देहवाली आत्माकी तरह काम करती हैं। परिक्षा करनेसे मालूम हुआ है कि मेस-मेरिज्मके द्वारा और चक्रमें बैठनेके जरियेसे ये निकाल बाहर की जा सक्ती हैं। बहुतसी मूर्च्छा मिर्गीकी बीमारी इसके द्वारा होती हैं, इसका भी उदाहरण हम दे चुके

हैं। ८८ वें पृष्ठमें जिस बौड़हीको मुक्तात्माकी बात कही है, उसने कई दिन आकर हम लोगोंके ऊपर और मिडियमके ऊपर बड़ा अत्याचार किया था। पर जब वह उपद्रव करने लगती थी तब भोलानाथको मुक्तात्मा आकर उसे निकाल बाहर करती थी। भोलाथसे पूछनेसे मालूम हुआ कि वह बौड़ही कालीघाटके हलधर नामक घरानेकी पुतोहू है, उसके स्वामी और दो पुत्र मोजूद हैं। बौड़हपन होनेका कारण बतलानेसे उसने मना किहा था इस लिये वह कारण भोलानाथने नहीं बतलाया। एक दिन भोलानाथने हंसते हंसते कहा कि "ये सब काम नीचे दर्जेकी मुक्तात्माओंके हैं उनको परलोकमें कोई काम नहीं, इस लिये मायासे खिंच कर यहां आती हैं और उपद्रव मचाती हैं। मुझे देखते ही वह इतने जोरसे चिल्ला उठी थी कि शायद आप लोगोंने समझा होगा कि मैंने उसे मारा है,. परन्तु सो सब कुछ बात नहीं है। मैंने उसे सिर्फ अपनी (मेस्मेरिक) ज्योतिसे घेर लिया था। वह उसी ज्योतिसे डर कर चिल्ला उठी थी। एक बात बतलादेता हूं, याद रखियेगा। अगर फिर कभी यह पगली वा और कोई अन्य मुक्तात्मा आप लोगोंको वा मिडियमको सतावे तो आप लोग मिडियमको बीचमें बैठा कर चारों ओरसे चक्र लगाकर बैठ जाइयेगा और भक्तिके साथ ईश्वरका भजन वा अन्य परमार्थिक गीत गाने लगियेगा, तब आप लोगोंके सिरसे (मेसमेरिक) ज्योति निकल कर उसे चारों ओरसे ऐसे घेर लेगी कि वह निकल न सकेगी और जोरसे चिल्लाती रहेगी।

इस देशमें भूत-ग्रस्त लोगोंको चंगा करनेके कई ढंग हैं। सब लोगोंको विश्वास है कि ओझा लोग जो मन्त्र पढ़ते हैं उसे सुनते ही भूत प्रेत भाग जाते हैं। नैहाटी गांवमें गंगा हलवाई विख्यात ओझा रहता था। उसके बेटेके साथ मुझे इन सब विषयोंपर बहुत बात चीत हुई थी। उन लोगोंने मेरे सामने कबूल किया था कि हां सचमुच वह सब काम मेसमेरिज्मके जरिये करता था। ओझा लोग कई उपायसे भूतोंको भगाते हैं। हांडीमें पानी रखकर वा आईना वा और कोई चमकीली चीज—यहां तक कि आदमीके हाथका नीह भी—मेसमेराइज करके रोगीको देखनेके लिये देता है। जब नीह इस तरहसे दिखाया जाता है, तब इसे नखदर्शन कहते हैं। फिर रोगीको पीढ़ेपर बिठला कर धूल वा पानी मेसमेराइज करके उसकी चारों ओर आर बांध देता है। इस समय रोगीके मुहके सामने हलदीका धूंआ देनेसे वा सरिसों उसके शरीरपर छीटनेसे, वह चिल्लाने लगता है और कहता है "जाते हैं जाते हैं"। ओझा लोग तब उससे उसका परिचय पूछते हैं। पहिले तो भूत परिचय नहीं देता है केवल "जाते हैं जाते हैं" कहता है, पर जाता भी नहीं। तब ओझा उसे कहता है कि "अच्छा जाता है तो जा, पर अपने जानेका कोई चिन्ह दिखला"! वह चिन्ह क्या दिखलावे? पासका कोई गाछ तोड़कर चला जाता है, वा पानी भरी कलसी दांतसे पकड़के कुछ दूर तक ले जाता है, उसके बाद छोड़कर चला जाता है। ज्योंही वह चला जाता है, वैसे ही रोगीको मूर्च्छा

आजाती है। तब उलटा पास देकर उसे आराम कर देता है।

ओझा लोगोंको भूत दूरहीसे आते देख सक्ते हैं। ८१ पृष्ठमें इसका एक उदाहरण दिया है। एक ऊंचे दरजेकी मुक्तात्माने हम लोगोंको कहा था कि चक्रके समयमें टेबलके नीचे एक लोटेमें पानी रखदेनेसे वह पानी मेस्मेराइज होजाता है। अगर कोई नीचे दर्जेकी मुक्तात्मा आकर मिडियमको दिक करे तब उसके ऊपर वही पानी छिड़क देनेसे भूत भाग जायगा। हम लोगोंने इस बातकी परीक्षा की तो सच्ची पाई।

उत्पाती भूतोंको कष्ट देनेके भी बहुतसे उपाय हैं। परन्तु उन्हे यहां नहीं लिखूंगा—अजब क्या है कि वह सब जान कर कोई भूतोंको दुख ही देनेमें प्रवृत्त हो जाय। अमेरिका देशमें एक भले आदमीके लड़केके ऊपर भूत आता था। उसको रेशमकी टोपी पहना कर उसको गरदनके नीचे उलटा पास देनेसे बहुत जल्द आराम होगया था। ऐसी नीच जातीकी मुक्तात्माओंसे परकालके सम्बन्धमें कोई उपकार न हो सक्ता है, पर इहकालके सम्बन्धमें उनकी सहायतासे कई आश्चर्य्य बातें दिखाई जा सक्ती हैं। हुसेन खां कहता था कि मेरा तावेदार तीन भूत है। बहुतसी पुस्तकोंमें भूत प्रेत पिशाच आदिको सिद्ध करके वशीभूत करनेकी विधि है—ये सब भूत प्रेत नीच जातिकी मुक्तात्मा होते हैं। उन किताबोंमें इन्हीं सबको उपसनाकी विधि है। शनीचर वा मंगलको, अन्धेरी अमावसकी रातमें, लाशके ऊपर वा समशानमें, मदिरा और सब तरहका मांस (मनु-

ष्यका मांस भी) आहार करते करते ओं ह्रीं ह्रां ह्रीं ओं हूं फट स्वाहा इत्यादि विकट विकट मन्त्र जपनेसे इस तरहकी मुक्तात्मा बुलाई जाती हैं और वे सब भी प्रसन्न होकर आती हैं और रुपया स्त्री आदि संसारिक वस्तु साधकको ला देती हैं। लोगोंका मन संसारी सुखमें इतना लिप्त रहता है कि इस क्रियाको भी धर्म्म कहते हैं।

प्रथम भाग समाप्त।

द्वितीय भाग।

पहिला अध्याय।

परीक्षा और विश्वास।

प्रथम भागमें जो कुछ लिखा गया है, उसे पढ़के शायद किसी महापुरुषके मनमें शंका होगी कि "अध्यात्म विज्ञान" केवल भूतविद्या वा ओझाईका एक नाम विशेष है। परन्तु वास्तमें अध्यात्म विज्ञानसे और ओझाई वा भूत विद्यासे बहुत ही कम सम्बन्ध है। अध्यात्म विज्ञानसे मुक्तात्माओंके विषयमें ज्ञान होता है और ओझाई वा भूत विद्यासे केवल भूतोंसे परिचय और दोस्ती होती है। सब भूत मुक्तात्मा हैं, परन्तु सब मुक्तात्मा भूत नहीं है। अर्थात साधारन लोग जिन्हें भूत कहते हैं, वे केवल नीच दर्जेकी मुक्तात्मा हैं। जैसे मनुष्य समाजमें चाण्डाल आदि पतित जाति समझे जाते हैं, और कभी भले आदमियोंसे सहवास नहीं करने पाते हैं; वैसे ही मुक्तात्माओंमें भूत लोग बड़े ही नीच जातिके होते हैं और कभी भली मुक्तात्माओंके साथ रहने नहीं पाते। भूत विद्या और अध्यात्म

विज्ञानका एक और भारी भेद समझ लेना चाहिये। ओझा लोग भूतविद्याके ज़रिये भूतोंसे जान पहचान करके अनेक सांसारिक लाभ उठाते हैं और इसी लिये उन भूतोंकी खुशामद भी उन्हे करनी पड़ती है। किन्तु भूत सब नीच दर्जेकी मुक्तात्मा होते हैं, इस लिये उन्हे खुश करनेके लिये ओझाओंको अति नीच और दूषित काम करने पड़ते हैं। स्मशानमें जाके मुर्देपर पूजा करना, लोहू आदि बुरी चीज खाना, मैले कपड़े पहनना, निर्जन स्थानमें अनेक कुकर्म करना, इतयादि कई प्रकारकी बातें ओझाओंके सम्बन्धमें आप लोग इसी कारण सुनते हैं। परन्तु अध्यात्म विज्ञानके प्रेमियोंके विषयमें ये बातें कभी नहीं सुनी जाती हैं। उच्च दर्जेकी मुक्तात्माके साथ प्रेम रखनेके कारण भूत प्रेतादि उनके वश रहते हैं। उन भूतोंसे इनका कोई उपकार नहीं होता है, बल्कि भूत लोग इनकी खुशामद करनेसे वा इनके वशमें रहनेसे बहुत लाभ उठाते हैं। अध्यात्म विज्ञानवाले ज्ञान प्राप्त करते हैं, मोक्ष तक पहुंचनेकी सीढ़ीपर चढ़ते हैं और भूतविद्यावाले अधम पतित होकर नरकगामी होते हैं। निदान, अध्यात्म विज्ञान और भूत विद्यामें प्रायः उतना ही भेद है, जितना किसी प्रतिष्ठित भले आदमीकी निश्छल दोस्ती और नीच डोमड़ेकी गुलामीमें।

आजकल अंगरेजी पढ़नेसे लोग यह कहना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं कि भूत प्रेत कुछ नहीं है, आत्मा सात्मा झूठी कल्पना है, परलोक है ही नहीं। यद्यपि इस तरहसे कहनेवालोंमें शायद ही कोई इन

बातोंमें पक्का विश्वास रखते होंगे, क्योंकि अन्धेरी रातमें अकेले कहीं जानेमें वा घरमें बैठे रहनेमें हम लोगोंने बड़े बड़े भूत-विरोधियोंकी टङ्गरी थरथराते देखी है, तथापि उन लोगोंको मुहतोड़ जवाब देदेना उचित है। परलोक है, आत्मा है, मनुष्योंके साथ सूक्ष्मात्माकी बात चीत होती है—इन बातोंपर सबको विश्वास हो जाय, इस लिये दो चार अकाट्य बातोंका उल्लेख यहां करना बहुत जरूरी मालूम होता है। किन्तु इस-कामके लिये अपनी जबानी दलील नहीं देकर अगर एक प्रतिष्ठित आदमीकी लिखित बातोंका उल्लेख करें तो अच्छा होगा।

यूरोपीय विद्या बुद्धिकी जैसी उन्नति आज कल अमेरिका देशमें हुई है, शायद वैसी और कहीं नहीं हुई है। जो कल बल अधिक आश्चर्य जनक और विचित्र मालूम हो उसे खास अमेरिका देशकी सम-झिये। उक्त अमेरिका देशमें जौन डबल्यू० एडमण्ड्स नामके एक महाशय रहते थे। यह साधारण पुरुष नहीं थे। यह वहां एक प्रतिष्ठित जज थे और इनके विचा-रकी बड़ाई सब लोग करते थे। यह भी पहिले अध्यात्म विज्ञानमें विश्वास न करते थे; परन्तु धीरे धीरे, देखते सुनते, परीक्षा करते करते, इन्हें इस शास्त्रमें पक्का विश्वास हो गया। यह न्ययोर्क शहरके एक प्रधान चक्रके प्रधान मेम्बर हो गये। इन्होंने "स्पिरिचुऐलिजम" अर्थात अध्यात्म विज्ञान नामकी एक पुस्तक सन १८५३ ई०में बनाकर छपाई थी। अपना अविश्वास रहनेका और धीरे धीरे विश्वास होजानेका उन्होंने उस

पुस्तकमें बहुत कुछ वर्णन किया है। हम उसी पुस्तमेंसे जज साहबके कायल होनेका कारण लिखते हैं; और आशा करते हैं कि हमारे पाठक भी उन प्रमाणोंको पढ़के कायल हो जायंगे। इस स्थानसे नीचे जो कुछ लिखा जायगा। उसमें अगर वाक्यके अर्थसे किसी दूसरे पुरुषका बोध न हो तो "मैं" से एडमण्ड्स साहब समझना और बिलकुल लेखको गोया उन्होंकी तरफ़से सन १८५३ ई०में लिखा जाना समझना।

जज साहबने लिखा है कि सन१८५१ ईमें किसी अफसोसके कारण मैं एकान्तहीमें अपना समय अधिक व्यतीत करता था और मृत्यु और मृत्युके बाद प्रिय लोगोंसे मुलाकात होती है वा नहीं, इन्ही विषयोंकी पुस्तकें अधिक पढ़ता था। इसी समयमें एक मित्रने * मुझे एक चक्रमें जानेका निमन्त्रण दिया। उस समय मैंने निमन्त्रण मन्जूर कर लिया, परन्तु मैंने केवल इसी अभिप्रायसे मन्जूर किया कि एकाध घण्टे तक जी लगी होगी। पर वहां जाकर मैंने जोकुछ देखा उससे मेरी आंखे बहुत कुछ खुल गईं; उस विषयमें खोज करनेकी इच्छा हुई। यद्यपि बहुतसे होशियारीकी दावी रखनेवाले लोग इस विषयको वाहियात और धोखेबाजी कहते थे और अखबारवाले इसपर तफरीह उड़ाया करते थे, तौ भी मुझे पहिले-

* यरोप और अमेरिकामें पुरुषोंको जैसे पुरुषसे दोस्ती होती है वैसे स्त्रियोंसे भी दोस्ती होती है, क्यों कि वहां स्त्रियां पुरुषोंकी तरह स्वतन्त्र रहती है। इस दोस्तीमें कोई बुरी बात नहीं रहती है। मूल-कर्ता-ग्रोफ्ल्? जज साहबको यह निमन्त्रण दिया था।

होसे निश्चय हुआ कि इसमें इनसानके खोज करनेके लायक कोई भेद अवश्य है। मैंने सोचा कि अध्यात्म विज्ञानमें विश्वास करनेवाले लोग इसे जैसा बतलाते हैं और इसे जैसा समझकर हजारों नये आदमी रोज रोज इसमें विश्वास करते जाते हैं, अगर सचमुच यह वैसा ही है, अर्थात अगर इसके जरिये आदमी और किसी छिपे वा अलख पुरुषके साथ बात चीत हो सक्ती है, तो वास्तवमें यह इनसानके लिये एक भारी बात है, इससे दुनियाका बड़ा फायदा हो सक्ता है, और इसकी पूरी खोज होनी चाहिये।

ऐसी ही बातें सोच कर मैं अध्यात्म विज्ञानकी खोज करने लगा। इस खोजमें मैं तीन बातोंपर ध्यान रखता था (१) मैं जो कुछ देख सुन रहा हूं सो वास्तवमें कोई सत्य पदार्थ है वा केवल धोखा वा भ्रम है; (२) इन खबरोंको कौन लाता है और किसकी रायसे वे जाहिर होती हैं; और (३) इनका क्या परिणाम होगा। यद्यपि मुझे इन तीनो विषयोंका पूरा जवाब मिल गया है और अब मैं अध्यात्म विज्ञानमें पक्का विश्वास रखता हूं, तौ भी आप लोग ऐसा न समझें कि मैं अध्यात्म विज्ञानके उत्साहसे उछलता हूं। कोई नई बात जाहिर करनेपर बहुतसे आदमी उसीके उत्साहमें दिन रात भूले रहते हैं, और सब किसीको उसका कायल करना चाहते हैं। पर मेरे साथ सो बात नहीं है। मैं किसीको कायल करनेके लिये नहीं लिखता हूं—सिर्फ इसी लिये लिखता हूं कि सब लोग इस

विषयकी खोज करनेमें प्रवृत्त हों और समझें कि मैं किन कारनोंसे इसका कायल हुआ हूं।

इसके साथ एक बात स्मरण रखनेके योग्य है। नीचे लिखी हुई बहुतसी घटनायें जाती हैं—अर्थात वे मेरे ही शरीरपर हुई हैं, इस कारण उनका जो असर मुझपर हुआ है सो और किसीपर नहीं होगा। जैसे, किसीको पास नहीं देखते हैं तो भी मालूम होता है कि किसीने मेरा बदन छूआ है। दूसरे लोगोंको यह कुछ न मालूम होगा, वे सिर्फ मेरी जबानी यह बात सुनेंगे। इस कारण इस घटनासे जो भाव मेरे चित्तमें उत्पन्न होगा, वह किसी दूसरेके चित्तमें नहीं होगा। सो अगर मेरी बातें सुनकर अगर सब लोग खुद ही इसकी खोजमें लगें और स्वयं मुक्तात्माओंसे बात चीत करना चाहें तो उनको इन सब बातोंकी सतयता जल्द मालूम हो जायगी।

पहिले पहिल मुझे "खटखट" करनेवाली मुक्तात्मासे मुलाकात हुई। इस बार मुझे तीन बातें आश्चर्य-जनक मालूम हुईं, एक तो यह कि उस जगह "खटखट" की आवाज इस तरहसे आती थी कि किसी आदमीके जरिये वह आवाज होनेकी शंका हरगिज नहीं की जा सक्ती थी। दूसरी बात यह थी कि जो प्रश्न मैं मन ही मन करता था और जबानपर नहीं लाता था, उसका भी उत्तर मिल जाता था। तीसरी बात यह थी कि उस समय जो कुछ होता था सो मैं लिखता जाता था, उस लिखनेमें एक गलती हो गई थी, पर किसीने सो गलती देखी नहीं थी। खटखटके द्वारा

यह गलती बतला दी गई और शोध देनेकी आज्ञा हुई।

एक बात अभी कह देता हूं। जबतक मैं इसकी परीक्षा करता था, अर्थात चार पांच महीनेतक, मैं इसमें जरा भी विश्वास नहीं करता था, सिर्फ परीक्षा ही करता था। चक्रमें बैठनेके वक्त मैं बहुत होशियारीसे रहता था, और इसी वजसे हर वक्त यही देखता रहता था कि किस तरहसे धोखे बाजी की जाती है। परन्तु जब मैं देखता था कि हरगिज किसी आदमीके जरिये कोई खास शब्द नहीं हो सक्ता है, तब तो मुझे कहना ही होता था कि किसी अज्ञात शक्तिके द्वारा वह शब्द होता है। सो कोई नहीं कह सक्ता है कि जिन शब्दोंको मैं किसी अज्ञात शक्तिके द्वारा उत्पन्न होते समझता था, सो किसी मनुष्यके द्वारा होते थे। जब मैं साफ देख रहा हूं कि मैं धूपमें खड़ा हूं और सूरज चमक रहे हैं, उस वक्त अगर कोई कहे कि घटा लगी है, सूरज छिपे है, सो मैं मान सकूंगा? वैसे ही इसमें भी समझिये। जहां तक होशियारी और चालाकीके साथ इन सब बातोंको परीक्षा करनी मुझसे मुमकिन थी उतनी होशियारीसे चक्रमें बैठता था। अगर मेरी होशियारीहीमें दोष हो, तो मुझसे भी अधिक होशियारी और बुद्धि रखनेवाले आदमी इसकी खोज परीक्षा करें और मुझे समझावें, परन्तु जब तक मैं अपनी आंखसे देख रहा हूं, कानसे सुन रहा हूं, तब तक जिसे मैं देख रहा हूं और सुन रहा हूं उसका न रहना मैं हरगिज नहीं स्वीकार करूंगा। संसारमें अगर कोई अपनी

आंख और कानका भी विश्वास न करे तो कैसे बने?

इसके बादके चक्रमें मैंने कई अजीब अजीब बातें देखी। मैंने एक प्रश्न भी जबानसे न पूछा - या तो प्रश्न लिख देता था, वा मनहीमें सोच रखता था, परन्तु सब ही प्रश्नका उचित उत्तर दिया गया। एक मरतबे मैं प्रश्न लिखने लगा, पर दो शब्द भी न लिखा होगा कि उत्तर ठीक ठीक मिल गया। इस मरतबे भी लिखनेकी भूल सुधारनेकी आज्ञा हुई थी। और एक मरतबेके चक्रमें आठ दस आदमी थे। पर मैं सिर्फ एक ही को जानता था। इसमें अजीब बात पहिले यह देखी कि आधे घण्टे तक सब कोई इन्तजार बैठे रहे पर कोई सूचना मुक्तात्माके आनेकी नहीं हुई। आखिरको खट खटकी आवाज आने लगी और पहिले उस मुक्तात्माने यही कहा कि फलानी औरत भी चक्रमें बैठे। जिस टेबलको चारों ओर हमलोग बैठे थे उससे बहुत दूरपर वह औरत घरके एक किनारेमें बैठी थी। वह सिर्फ तमाशा देखने आई थी, चक्रमें बैठनेको राजी न होती थी, पर आखिरमें आई। तब उसने मालूम किया कि उसके एक लड़केकी आत्मा आई थी, उस आत्माने बहुत ही ठीक ठीक उत्तर दिया—यहां तक कि अपने मरनेका कारण भी बतलाया। वह शफतालूकी गुठली कंठमें अटक जानेसे मरा था, पर कोई यह बात नहीं जानता था। एक आदमीने एक प्रश्न मन ही मन पूछा और उसका भी उत्तर मिला जिसे उसने ठीक कहा। दूसरे आदमीने खास अपने बारेमें एक प्रश्न

सोचकर पूछा—वह विषय भी किसीको मालूम नहीं था; पर उसका जो उत्तर उसने पाया उसे उसने ठीक कहा।

एक बार हम लोग चक्रमें बैठे थे, तब मालूम हुआ कि पांच सात आदमी एक ही बार खट खट कर रहे हैं पर सबके खट खटकी आवाज समान नहीं थी - किसीका जोरसे किसीका मध्यम। हम लोगोंके कहनेसे खट खट शब्द टेबलके ऊपर होने लगा, फिर टेबलपर जिस जगह उंगली रखके बतला देवें उसी जगह खट खट होने लगे। इसके बादके चक्रमें एक अजनबी बूढ़ा अचानक घरमें आगया और टेबलपर एक कागज लपेटके रखकर बोला कि इस कागजके प्रश्नका उत्तर चाहिये। तब जो जवाब मिला उसे सुनके वह चुप हो गया, बोला कि बहुत ठीक है, साठ बरसकी बातके बारेमें यह प्रश्न था।

एक दिन मैं अपनी लाइब्रेरीमें अकेले बैठा कुछ काम कर रहा था। उसी समय अकस्मात मेरे मनमें हुआ कि मुझे फलाने शख्सके पास जाना चाहिये और उसे मेसमेराइज करके एक बहुत ऊंचे दर्जेकी मुक्तात्मासे बातचीत करनी चाहिये, क्योंकि उससे मेरा बड़ा फायदा होगा। मैंने तब सोचा कि उस आदमीसे मुझे कभीका जानपहचान नहीं है, सिर्फ एक ही बार उसके साथ बात चीत हुई थी, सो भी मामूली साहब ही सलामत। इसके अलावे मैं मेसमेराइज करना भी नहीं जानता था, तमाम जिन्दगीमें एक बार एक आदमीको मेसमेराइज करते देखा था। इस लिये मैंने उस वक्त उस

खयालको दूर कर दिया। पर एक ही दो दिनके बाद फिर काम ही करनेके वक्ते अचानक फिर भी वही बात मनमें हो आई। तब मैंने एक खटखटानेवाले मिडियमसे इसका भेद पूछा। उसके जरिये एक मुक्तात्माने कहा कि वह तुम्हारी ही खयाल नहीं थी, तुम उसके मुताबिक काम करो बड़ा फायदा उठाओगे। तब मैंने उस आदमीको चिट्ठी लिखी, मुलाकातका वक्त ठीक किया। वह आदमी क्लेयारभोआयण्ट भी था, खटखट वाला मिडियम भी था और उसके रहनेसे मुक्तात्मा प्रत्यक्षकाम भी बहुतसा करती थी। जब मैं मुकर्रर वक्तपर उससे मिलने गया तो वहां ६ वा ८ आठ दूसरे दूसरे लोग भी थे, पर मैं उनमेंसे किसीको नहीं जानता था। वहां जानेपर मुझे एक बात कही गई जो मेरे मनकी दो तरहकी बातोंके बारेमें थीं। इनमेंसे एक तरहकी बात मेरे मनमें २५ बरसोंसे थी और दूसरी तरहकी बात दो तीन महीनोंसे थी, पर मैंने कभी किसी मर्द वा औरतसे उनकी चर्चा नहीं की थी। कुछ देर तक मुक्तात्माने इस ढङ्गसे कहना शुरू किया कि गोया मैंने उससे जाहिर ही प्रश्न पूछा हो। मैं तो चकित हो गया—क्योंकि यह एक ऐसा प्रमाण मिला कि जिसको मैं किसी तरहसे गलत नहीं कह सक्ता था। मेरे जीकी बात भी उस मुक्तात्माको मालूम थीं। इस प्रमाणसे जो बात साबित होती थी उसे मैं अस्वीकार नहीं कर सक्ता था। किसी तौरसे उसको सोचनेसे, कोई युक्ति लगानेसे भी मुझे कोई दूसरा कारण नहीं मालूम होता था। कहिये! जो मनकी बात भी जानले,

उसे क्या मनुष्य वा ठग कहेंगे? वहां पर और जो लोग बैठे थे वे उस मुक्तात्माकी बात चीन कुछ नहीं समझ सके। समझते कैसे? वे तो मेरे मनकी बात नहीं जानते थे।

सच पूछिये तो इस घटनासे मेरी बुद्धि चकरा गई, और जितना ही मैं इस विषयको सोचता था उतना ही और कठिन यह मुझे मालूम होने लगा। तब मैंने मेसमेरिज्मकी कई किताबें मोल लेके पढ़ी, परन्तु उस बातका असल भेद उसमें भी नहीं पाया। इसी वक्तमें एक और बात हुई, उससे मेरी अक्ल और हैरान हो गई। मैं एक मिडियमसे मुलाकात करनेको जा रहा था, रास्तेमें सोचा कि फलाना सवाल पूछूंगे। पर वहां जानेसे सवाल पूछनेका मौका न मिला, किन्तु तौ भी मुझे उसका जवाब साफ साफ मिलगया। कहिये वह सवाल कैसे किसीको मालूम हुआ?

एक बारके चक्रमें मिडियम क्लयारभोआयण्ट था, पर खटखटके जरिये भी बहुत बातें कही गईं। जब चक्र टटनेपर हुआ और सब लोग अपने अपने घर जानेकी तयारी करने लगे तब जो सब बातें हुईं सो मुझसे लिखा नहीं जाता है—डर होने लगा। खट-खटके जरिये ग० साहब और क० साहबको एक चौकठके पास खड़े होनेका आदेश हुआ और म० और क० को दूसरे चौकठके पास। जब वे लाग उक्त स्थानोंपर चले गये तब मालम हुआ जैसे जमीनपर कोई मुक्केसे धमधम करे। उसके जवाबमें घरके दूसरे हिस्सेमें भी वैसा ही धमधम हुआ। म० के हाथसे घण्टी ले ली

गई, कई बार बजाई गई और फिर ज्योंकी त्यों रख दी गई। उस रात जब तक हम लोग वहां रहे तब तकमें यह बात बार बार हुई। म० और क० के कन्धेपर किसी गायब शख्सने चपतें मारी, फिर दूसरी तरफ जितने लोग थे सबको चपतें लगीं। तब खट खटके द्वारा उन चारों आदमियोंको टेबुलके पास आनेकी आज्ञा हुई। उन लोगोंने वैसाही किया. टेबुलको एक तरफ दो और दूसरी तरफ दो आदमी खड़े हो गये। तब टेबल इधर उधर चलने लगा। टेबल बहुत लम्बा था, और मैं अपना हाथ उसपर रखे था, इस लिये मैं निश्चय जानता था कि आदमीके जरिये टेबल नहीं हिलता है। तब वे चारों खटखटकी आज्ञानुसार एक ही जगह खड़ हुए। इसके बाद उनके शरीरपर कितने अत्याचार हुए—लड़कियोंके हाथसे आलपीन छीन ली गई, उनके हाथ ऊपर उठ गये और तब एक जगह कर दिये गये इत्यादि। तब वे लोग टेबलके पास आये और खटखटके अनुसार उसको चारों ओर घूमने लगे, जब जहां खड़ा होनेको कहे वहां खड़े हो जाते थे। तब चपतियाना फिर शुरू हुआ, घण्टी फिर बजने लगी। बीबी र० के सिरसे कङ्घी निकाल ली गई और उनके बाल बिखड़े गिर गये। मेरी गरदनमें पहिले मालूम हुआ कि किसीने उङ्गलीसे धक्का दिया। ऐसा कई बार हुआ। तब मेरे सिरपर गोया किसी औरतने आहिस्ते हाथसे थप थप किया। मालूम हुआ कि किसीने आहिस्तेसे मेरे सिरपर हाथ रखा और सिरकी चारों तरफ वह हाथ फेर दिया। आखरमें मेरे बाजपर किसीने उंग-

लीसे तीन चार बार छूआ। पर मेरे बदनपर जो यह सब हुआ सो बहुत आहिस्तगीसे, किसी दूसरेने न सुना। किन्तु उन लोगोंको जो चपतें लगी थीं सो बहुत जोरसे और घरमें जितने लोग थे सबोंने उन्हें सुना। ग० और क० और म० के कपड़े कई बार आलपिनके जरिये एक जगह सी दिये गये। क० और म० के हाथ किसी गायब आदमीने रूमालके जरिये एक जगह बांध दिया।

ता: २८वींमार्च सन१८५१ई०-को मैं अन्य ८ आदमियोंके साथ चक्रमें बैठा था, तब खटखटके जरिये सुना गया कि कोठरीके बीचमें एक वृत्त बनाके खड़े हो जाते जाओ। तब हरेक आदमीको मुक्तात्माने छू दिया; कई आदमीको पकड़के उसने खटियेपर खींच लिया; एक आदमी जमीनपर करीब २ गिरा दिया गया; एक औरतका पांव पकड़के खींचा जिससे वह गिरने लगी; एक औरतके कन्धेपरसे दुशाला उतारके जमीनपर फेंक दिया गया; मेरे कई अंगोंमें उसने हाथसे छूआ; कुरसियां इधर उधर घसीट दी गईं और एक छोटा टेबल खुदब-खुद शतरंजी पर घसक गया।

ता: २३ अप्रैल सन १८५१ कों मैं आठ आदमियोंके साथ एक कोठरीके बीचवाले बड़े टेबलकी चारों तरफ चक्र लगाके बैठा था। टेबलपर एक बैठकी लम्फ और सामनेकी दीवालपर एक देवालगीर जल रहा था। उस वक्त सबके सामने टेबल जमीनसे उठा करीब एक फुट ऊपर आया और तब आगे पीछे हिलने लगा; कई आदमियोंने उसे अपने जोरसे जमीनपर रखे रह-

नेकी कोशिश भी की. परन्तु कुछ नहीं हुआ. टेबल ऊपर ही रहा। तब हम लोग कुछ पीछे हट गये और दोनो लम्पोंकी जोनसे साफ देखा कि वह कई मनका टेबल बिना आधारके शून्याकारमें खड़ा है। बहुत गौर करके देखनेसे भी हम लोगोंने टेबलका आधार नहीं देख सके। उस वक्त दो एक ऐसे आदमी भी इस घटनाको देख रहे थे जो अभी तक अध्यात्म विज्ञा-नमें विश्वास नहीं करते हैं, परन्तु वे भी कोई वजह नही बतला सकते थे।

ता० ७वीं मई सन१८५१ ई॰को आठ दस आदमि-योंके चक्रमें मैं भी था। टेबलपर कागजके कई कटे टुकड़े पड़े थे उसे उठाकर मुक्तात्माने हम लोगोंकी ओर फेंक दी। जब सन्नाटा हो गया तब मालूम हुआ कि जैसे कोई कलम लेकर कागजपर लिख रहा हो। हम लोगोंने उन गिरे कागजोंको उठा लिया, बखूबी देखा पर किसी पुर्जेपर लिखनेका चिन्ह नहीं देखा। तब खट खटके द्वारा हुक्म हुआ कि टेबलके नीचे देखो। वहां खोजनेसे एक टुकड़ा कागजका मिला, उस पर लिखा हुआ भी था, हर्फ कच्चे ही थे, परन्तु उस घर भरमें कहीं भी कलम दावातका पता नहीं था।

एक और घटनाकी बात कहूंगा। एक बारके चक्रमें हम लोगोंने कई बातें देखी सुनी, तब मिडियमने मुझसे कहा कि तुमने जोकुछ देखा है उसे छपवा देओ। मैंने कहा कि छपवानेसे मुझे अपनी राय लिखनी पड़ेगी, परन्तु जब तक मैं इसकी सचाईका पूरा प्रमाण न पाऊंगा और कायल न हो लूंगा तबतक मैं अपनी राय नहीं

लिखूंगा, क्योंकि आज तक मैंने जितनी तरहकी घटनायें देखी हैं उनमेंसे बहुतसी ऐसी भी थीं जो आदमीके जरिये हो सक्ती हैं। उसने तब मुझसे पूछा "आप कैसा प्रमाण चाहते हैं? आप किस बातसे कायल हो जयंगे?" मैंने कहा "सो मैं न बतलाऊंगा।" इसपर उसने प्रमाण देनेका और कायल करनेका वादा किया। यह वादा ता २१वीं मई सन१८८५ को पूरा हुआ। उस दिन उस मुक्तात्माने ऐसे प्रमाण दिये कि जीमें शुभा रहनेकी कुछ जगह नहीं रही। जो कुछ मैंने उस दिन देखा सो अकथनीय है। लेकिन तौ भी जहां तक हो सकता है उस दिनकी घटनाओंका मुखतसर वर्णन मैं करता हूं। जिस चक्रमें मैं बैठता था वह उस दिन शामको बैठने वाला था,इस लिये मैं शामको शहरके पूरब हिस्सेकी तरफ चला रास्तेमें देखा कि मिडियम, उसकी बहन और दो तीन अन्य आदमी शामिल चले आरहे हैं। उसने कहा कि खटखटके जरिये हमे हुक्म हुआ था कि शहरके पच्छिम किनारे पेट्रिज साहबकी कोठीमें जाओ। सो वे लोग वहीं जा रहे थे उन्होंने एक बात यह भी कही कि जब हम लोग चलनेको तयार हो गये तब फिर खट खटके जरिये हुक्म हुआ कि १५ मिनट ठहर जाओ। इस लिये वे सब ठहर भी गये। इन सब बातोंसे मैंने समझा कि अगर वे १५ मिनट वहां न ठहरते तो मुझे उन लोगोंसे मुलाकात नहीं होती। उस वक्त मैं उसीके घरको जा रहा था, इस लिये साफ मालूम हुआ कि मुक्तात्माकी राय हैं कि हम लोग सब आदमी पैट्रिज साहबकी कोठीपर जायं। पस, मैं

भी वहीं चला। वहां जानेसे देखा कि करीब बीस आदमी पहिलेसे मौजूद हैं, उनमें पाच मिडियम भी थे। दरियाफ्त करनेसे मालूम हुआ कि बिलकुल आदमी मुक्तात्माहीकी आज्ञानुसार वहां आये थे, किसीके वहां आनेकी बात उस दिन नहीं थी। वहां हमलोग तीन घण्टे तक ठहरे, पर उस अरसेमें वहां जो कुछ देखा उसे स्मरण करके कलेजा कांप उठता है। उन सब घटनाओंका करनेवाला बेशुभे अमानुष था और जो लोग वहां मौजूद थे उन लोगोंने हरगिज वह सब काम नहीं किया था और न कर सक्ते थे। कोई कहे कि किसीने हमलोगोंको ठगा था, तो उसका कहना फजूल है, क्योंकि हम लोग ठगे नहीं गये थे और वहां जितने आदमी थे सब लोगोंको ऐसा ही विश्वास हुआ था। अगर कहिये कि मिडियमोंने किया होगा, तो सो भी फजूल है, क्योंकि वे लोग भी हम तमाशबीनोंकी तरह थरथर कांपते थे और उन घटनाओंको रोक देनेके लिये कोशिश करते थे। उस समय हम लोगोंने देखा कि कुरसियां जमीनपर इधरसे उधर और उधरसे इधर दौड़ने लगीं; हम लोगोंके सिरके ऊपर घण्टी बजने लगीं; एक आदमीका मैं हाथ पकड़े था परन्तु उसे किसी गायब शख्सने बड़े जोरके साथ मुझसे छोड़ा लिया, हम दोनो आदमी कोशिश करते ही रह गये कि हाथ न छूटे, पर कुछ न होसका। एक मिडियमके जरिये तब हम लोगोंको कहा गया कि "दरवाजा खोल देओ और उन लगोंको आने देओ।" दरवाजा खोलके देखें तो उस मिडियमके अपरिचित तीन चार आदमी सीढ़ीपर

चढ़ना चाहते थे। मैं एक कोनेमें खड़ा था, मेरे नजदीक कोई आदमी नहीं था, पर मालूम हुआ कि किसीका हाथ मेरे जेबमें पड़ गया. जरेसेके बाद जेबमें हाथ देके देखें तो रूमालमें ६ गांठ पड़ गई थीं। इसके बाद एक तानपूरा मेरे पैरपर आबैठा, हांडी मेरे हाथमें आगई और तब तानपूरा खुदबखुद बजने लगा। ऐसे ही एक सारंगी मेरे दूसरे हाथमें आगई और बजने लगी। एक सितार तारके जरिये मेरे गलेमें पहना दिया गया और बांसुरीकी चोट कईबार मेरे बदनमें लगी। मेरे बदनको कई बार किसी गायब शखसने छूआ और एक मरतबे जिस कुरसीपर मैं बैठा था वह पीछेसे खींच ली गई। तब मुझे मालूम हुआ कि मेरे हाथको किसीने पकड़ लिया है, लेकिन इतने जोरसे पकड़ा कि मालूम होता था कि कोई देव मेरा हाथ थाम्हे है। आंखसे तो मैं कुछ नहीं देखता था पर उसके पकड़े रहनेका पूरा ज्ञान था— पकड़नेवालेके हाथकी उंगली, तरह्यी सब साफ उभरती थीं, दूसरे हाथसे मैंने धरे हुये स्थानको बखूबी टटोला तो कुछ नहीं पाया। लेकिन तो भी जैसे कोई फतिङ्गी मेरे हाथमें पड़नेसे बेवस हो जाती है वैसे ही मैं उस पकड़नेवालेके हाथमें बेवस हो रहा था। उससे छूटनेके लिये मैंने कितनी कोशिश की परन्तु एकभी न चली बनी। जब मैं लाचार हो गया और हृस्त होकर स्थिर हो गया, तब उसने मुझे छोड़ दिया।

कहिये? इन सबको मैंने साफ देखा कि ये किसी आदमीकी बदौलत नहीं हो सक्ती हैं, तब भी मैं उनमें

कैसे अविश्वास करता रहता? मैं तो पहिलेसे विश्वास नहीं करता था? और न अपने विश्वासको दृढ़ करनेके लिये इन सबकी खोजमें पड़ा था। इसी कोशिशमें था कि विश्वास न होने पावे; पर जब आखोंके सामने ये सब आश्चर्य्य बातें देखता था तब कैसे विश्वास न करता? इन सब कारंवाइयोंमें मुझे भ्रम न हो और न कोई मुझे धोखा देदे, इस अभिप्रायसे मैं जो जो यत्न कर लेता था उन सबका उल्लेख यहां नहीं किया है, सिर्फ इतना ही समझ रखिये कि जितनी होशियारीसे मैं काम कर सक्ता था उतनी होशियारीसे परीक्षा करता था। बात बातमें मैं बालकी खाल खींचता था; अगर कोई बात पूछनेसे मुझे कोई बेहूदा समझता था तो मैं उसका परवाह नहीं करता था, अगर किसी बातको खोज करनेसे कोई रंज हो जाता था तो मैं उससे भी नहीं डरता था। यहां तक कि मेरे बत-कट्टनपनकी वजहसे बहुतसे अध्यात्म विज्ञानमें विश्वास करनेवाले मुझसे मुलाक़ात करना पसन्द नहीं करते थे। मैंने जितनी बातें लिखी है वे सब एक ही मिडि-यमके साथ, एक ही दलके लोगोंके सामने, एक ही स्थानपर नहीं हुई थीं।

जब मैंने अपनी बुद्धिके अनुसार बहुत कुछ देख सुन लिया और अधिक परीक्षा करनी चाही तब एक वैज्ञानिककी सहायता ली। यह वैज्ञानिक बिजलीके कारवारमें बड़े पण्डित हैं और बिजलीकी बहुतसी कलें भी इनके पास हैं। उन्होंने आठ दस विद्वान चालाक

और तीक्ष्ण बुद्धिवाले लोगोंके साथ इसकी परीक्षा करके दो बातें ठहराईं (१) जितने आदमी वहां मौजूद रहते थे वा उसके आसपासमें रहते थे, उन लोगोंके जरिये वे शब्द नहीं होते थे ; और (२) जब हम लोग ख्वाहिश करते थे तब वे शब्द नहीं होते थे।

मैं एक होशियार और ईमान्दार आदमी होकरके ऐसी अवस्थामें क्या कर सक्ता था? मैंने अपनी आंखोंसे जो कुछ देखी थी उसको असत्य भ्रम कहनेका मुझे कुछ हक था? खास करके जब मैंने उन सबकी बखूबी खोज करली थी? मैं जानता था कि इन सब बातोंके सच्ची ठहरनेसे मेरी तबीयत खुश होगी, इस लिये मैं खुदं बखुद धोखेमें पड़नेसे भी बहुत होशियार रहता था। लेकिन तो भी जब मैं देखता था कि जिन लोगोंकी तबीयत इससे खुश नहीं होगी, वे लोग भी उन सब बातोंको देख सुनकर वैसा ही निश्चय करते हैं तब मैं उन सिद्धान्तोंमें अविश्वास कैसे करता? मनुष्य जिन-सब सबूतोंसे अपना सब काम निश्चय करते हैं और जिनके माननीय न होनेसे संसार पागलखानेकी तरहपर रहता उन्हें मैं कैसे असत्य कहता? अगर मैं उनका अविश्वास करता भी तो किस बुनियाद पर? क्या सिर्फ दूसरोंकी वेसमझी राय ही पर? नहीं; मैं अपनी समझका इतना तिरस्कार नहीं कर सक्ता था। इन प्रमानोंका अविश्वास करनेमें एक बड़ी ज़वाबदेही थी; इसी लिये जिस त्रिया बुद्धिके द्वारा मैं सब दिन हजारों आदमियोंकी जान माल और स्वतन्त्रताके विषयमें इन्साफ करता था उन्हीके द्वारा मैंने इन सब बातोंका भी विचार

किया। उन विषयोंका उन सबूतोंके अनुसार विचार करनेसे कोई दूसरी बात सिद्ध नहीं होती, इसी लिये मैंने उन सब घटनाओंको अमानुषी समझ लिया। और मुझे पूरा विश्वास है कि जो कोई ईमान्दार आदमी अपने मनका द्वेषादि भावका परित्याग करके निश्छल भावसे विचार करेगा वह अवश्य ही इन विषयोंमें मेरे समान विश्वास करने लगेगा।

इसके साथ एक बात और भी गौर करनेके लायक है। अगर मान भी लें कि खटखट करना, घण्टी बजना, टेबल उठना, कुरसी चलाना इत्यादि काम किसी धूर्त्त छिपे मनुष्यने किया था, और आज तक करता ही है; तो भी एक प्रश्न बहुत भारी और कठिन उठता है—उस आदमीको इतनी खबर कहांसे मिली? मसलन, जिस बातको मैंने १५ बरससे अपने जीमें बन्द कर रक्खा था और किसी मनुष्य जीव जन्तुको कभी नहीं जानने दिया था वह बात उस आदमीने कैसे जान ली! उस आदमीकी कैसी अजीब शक्ति थी कि ज्योंही मैं अपना प्रश्न तयार करता था त्यों ही वह जान जाता था? जिन बातोंको मैंने एकान्तमें चुपचाप लिख कर रख दिया था उन्हे वह कैसे जान सक्ता था? और मेरे मनकी बात दूसरोंको और दूसरोंके मनकी बात मुझे कैसे कह सक्ता था?

मैंने इन सब ख्यालोंको बखूबी गौरके साथ देखके और सब घटनाओंका बिचार करके निश्चय किया है कि प्रश्नोंका उत्तर देनेवाला वा मनकी बात जाननेवाला पारलौकिक पुरुष है। आप लोग भी इस विष-

यकी बखूबी समझ लें, इस लिये दो चार और उदा-हरण इस विषयका देता हूं।

गत वर्ष जाड़ेमें मैं यहांसे दो हजार मील पर मध्य अमेरिकामें था। उस समय मेरे दोस्तोंने चक्रमें मिडियमसे कई दिन पूछा कि मैं क्या करता हूं और कैसा हूं। उन प्रश्नोंका जो कुछ उत्तर उन मिडियमोंने दिया सो, मुझे अपना रोजनामचा देखनेसे मालूम होता है, बहुत ठीक था। कहिये यह कैसे हो सक्ता था? कोई मनुष्य ऐसा कह सक्ता था? तारके जरिये भी इतना शीघ्र उत्तर नहीं मिल सक्ता।

एक मिसाल और लीजिये। मेरी लड़की अपने छोटे बच्चेके साथ अपने ससुराली भाई बेरादरोंसे मिल-नेके लिये यहांसे ४०० मील पर ओगबन्सबर्ग नगरको गई थी, उसकी गैरहाजिरीमें करीब ४ बजे सुबहको मुझे एक मुक्तात्माने कहा कि तुम्हारा नाती बहुत बीमार हो गया है और सब लोग परेशान हैं। यह सुनकर मैं वहां गया, तो मालूम हुआ कि सचमुच उस वक्त लड़का बहुत बीमार हो गया था, घर भरके लोग उसके बचनेकी नाउम्मीदीमें तरद्दुद कर रहे थे। कहिये यह भी किसी आदमीने किया था, या मेरा भ्रम था? मैं तो उस समय दूसरी बात सोच रहा था, उस लड़केकी बात ही न थी।

एक मरतबे मैं अपने हाथमें बेयाला लिये गीत गा रहा था, बस बेयाला खुद बखुद बजने लगा। जहां मैं ताल तोड़ देता था वहां वह भी ताल तोड़ देता था और जब मैं फिर गाना शुरू करता था तब फिर बेयाला बजने लग जाता था।

एक मरतबे हम लोग ज्योंही चक्रमें बैठे त्योंही मिडियमने कहा "पहिले जज साहब! आपहीको तरद्दुदकी बात कहेंगे।" मैंने पूछा "मेरी कौन तरद्दुद?" तब उसने मुझे एक बात कही जो सचमुच कई दिनोंसे मेरे मनमें खटक रही थी। इस तरहसे हजारों लाखों बातें हुई हैं, उनकी चर्चा यहां करनेसे किताब बहुत बढ़ जायगी। एक दफेकी बात कहके मैं यह खतम करूंगा। मैं एक दूसरे आदमीके साथ एक जगह अकेलेमें बातें कर रहा था जब बातचीत खतम हो गई तब मैं घर लौट आया और यहां आनेसे मुझे एक मुक्तात्माने उन सब बातोंका प्रत्येक शब्द ज्योंका त्यों कह दिया।

मैं हरगिज नहीं विश्वास कर सकता हूं कि जो आदमी ये सब आश्चर्य्य बातें देखेगा वह मुक्तात्माओंमें अविश्वास कर सकेगा। ऊपरकी घटनाओंमें मैंने विशेष करके उन्हीं सबका उल्लेख किया है जो मेरे सम्बन्धमें हुई हैं; क्योंकि मैं उनके बारेमें सपथतक कर सकता हूं। परन्तु ऐसी ऐसी घटनायें प्रायः सब लोगोंको हुई हैं, और सब लोग इसकी परीक्षा कर सकते हैं।

इन सब घटनाओंको देखसुनके मेरे मनमें कई तरहके प्रश्न हुए। मैं जो सब घटनायें देख रहा हूं वे क्या हैं? यह सांसारिक नियमोंके अनुकूल हैं या प्रतिकूल? अगर यह जादू नहीं है और किसी निर्दिष्ट नियमानुसार होता है तो क्या आज कल लोगोंको पहिले यह मालूम होता है और इसके पहिले किसीको नहीं मालूम हुआ था?

इन प्रश्नोंके उत्तरमें मुझे कहा गया कि ये सब मनुष्यकी उन्नतिके फल हैं। यह सांसारिक नियमोंके प्रतिकूल नहीं है, अनुकूल है। और पहिले भी लोगोंको ये बातें मालूम थीं, आज पहिले ही पहिल नहीं ईजाद हुई हैं।

यह भी मालूम हुआ कि इसका गूढ़तत्व समझनेके योग्य शक्ति अभी तक मनुष्यको प्राप्त नहीं हुई है इस लिये इसको अमझना वा समझना बड़ा कठिन है। परन्तु मुझे एक बहुत पुरानी पुस्तकमें इस शक्तिका नाम "ओड" लिखा मिला था और "ओड" का वर्णन यों किया हुआ था—"अत्यन्त सूक्ष्म तरल पदार्थ जो शारीरिक आकर्षण और तड़ित शक्तियोंके साथ रहता है, अग्नि और ऊष्णतामें पाया जाता है और स्वासावरोध तथा पाचनादिके द्वारा मनुष्यके शरीरसे निकल कर चिनगारी और धूम सहित पीत ज्योतिके आकारमें ऊपरको उड़ जाता है, किन्तु इतना सूक्ष्म होता है कि विशेष प्रकारके नेत्रवाले ही उसे देख सक्ते हैं," मैंने वह ज्योति स्वयं दो चार बार देखी है, परन्तु मुझे ऐसे लोगोंसे भी मुलाकात है जिन्होंने कहा है कि मैं अक्सर देखता हूं।

मैं अब एक दूसरी बातकी चर्चा करता हूं। मुक्तात्मा कहिये वा धाखेबाज कहिये वा मनुष्य कहिये, जो कहिये, जो हम लोगोंसे बात चीत करता है वह आदिसे अन्ततक अपना स्वभाव इतनी स्पष्टता और दृढ़तासे एक तरहका जाहिर करता है कि अवश्य कहना पड़ेगा कि ये सब बातें एक ही शखसकी हैं। एक औरत मिडियम जो न बहुत पढ़ी लिखी, न बहुत छल प्रपञ्चवाली, सूधी

सरल स्वभावकी है उसके जरिये हम लोगोंने एक ही बैठकमें कई शख्सकी बात कई तरहसे सुनी है। उन बातोंको सुननेके समय साफ मालूम होता है कि किस समयसे किस समयतक कौन शख्स हम लोगोंसे बात-चीत कर रहा है। वह सूधी औरतकी बात तो दूर रहे बड़ा चतुरसे चतुर नाटक करनेवाला और नक्काल भी इतनी जल्दी और इतनी स्पष्टतासे अपनी बात चीत तौर तरीका सब कुछ एक दम नहीं बदल सक्ता है। इस लिये जबरदस्ती विश्वास जीमें आ बैठता है कि मिडियम स्वयं कुछ नहीं कहती सुनती है, ये सब काम उसके द्वारा दूसरे शख्स—चाहे वे शख्स कोई हों—कराते हैं।

एक बात और है। जितने आदमीकी बात चीत मिडियमोके जरिये मालूम होती हैं उतनी ही तरहके अक्षर भी उनकी तरफसे लिखे जाते हैं। लार्ड बेकन साहबकी* तरफसे जो कुछ लिखा जाता है वह एक तरहके अक्षरोंमें लिखा जाता है और स्वीडेनबोर्गकी तरफसे जो कुछ लिखा जाता है। वह दूसरी तरहके अक्षरोंसे। यद्यपि ये दोनो मुक्तात्मा हम लोगोंको जो कुछ कहती हैं सब डाक्तर डेक्सटर साहबके हाथसे लिखवाती हैं, तथापि इन दोनोके अक्षर डाक्तर साहबके अक्षरसे भिन्न भिन्न प्रकारके हैं। अर्थात डाक्तर साहबके अक्षर लार्ड बेकनके अक्षर और स्वेडेनबोर्गके अक्षर तीनो एक ही हाथसे

---

* यह विलायतके एक विख्यात विद्वान थे इनको मरे सैकड़ों बरस बीते होंगे।

लिखे जाते हैं, तो भी तीनों एकदम जुदे जुदे ढंगके हैं। जिस समय डाक्तर साहब मुक्तात्माओंके अधिकारमें रहते हैं, उस समय बहुत आसानीके साथ वह तीन चार तरहके अक्षर लिख देते हैं और तारीफ तो यह है कि कोई कोई अक्षर वह अपने खास अक्षरोंसे भी बढ़के तेजीके साथ लिखते हैं। पर जब वह मुक्तात्माके अधिकारमें नहीं रहते हैं, तब ऐसा नहीं कर सक्ते हैं। मैंने आज तक किसी आदमीको नहीं देखा है जो अपनी स्वाभाविक अवस्थामें एक ही बार बैठके इतनी आसानीसे चार पांच तरहके अक्षरोंमें वाक्यका वाक्य इस ढंगसे लिख डाले कि प्रत्येक ढंगके अक्षर दूसरे ढंगके अक्षरोंसे साफ भिन्न हों और किसी एक प्रकारके अक्षरमें कहीं नुक्ता, शोशा वा रेफमें भी जरासा फरक न पड़ने पावे। डाक्तर साहबका यह गुन सिर्फ उन्हो तक खतम नहीं है। प्रायः जितने लिखनेवाले मिडियमसे मुझे मुलाकात हुई है उन सबमें यह गुण पूरे तौरसे पाया है. जिससे साफ मालूम होता है, कि वे लोग किसी दूसरी शक्तिकी बदौलत वैसा आश्चर्य्यजनक काम कर सक्ते हैं।

ऊपर लिखी घटनाओंको देखकर और उन सब बातोंकी बखूबी, निष्पक्षपात, और निस्पृह आलोचना करके मैंने अध्यात्म विज्ञान सम्बन्धी इन कई बातोंमें दृढ़ विश्वास कर लिया है। मुझे पूरी आशा है कि जितने आदमी इन्साफकी नजरसे इस विषयको डबके देखेंगे वे सब भी इन बातोंमें अवश्य ही विश्वास करेंगे—

(१) इस पृथ्वीपर जिन्दगी समाप्त कर देनेके बाद भी मनुष्यकी स्थिति रहती है। मैंने बहुतसे ईमान्दार और इन्साफवर आदमियोंको इस विषयकी खोज करते देखा है, परन्तु उन सबको यही सिद्धान्त करते देखा है।

(२) जिन लोगोंको हम पृथ्वीपर प्यार करते हैं उन लोगोंसे हम लोगोंकी जुदाई मृत्युके द्वारा नहीं होती है। उन प्रियजनोंकी मुक्तआत्मा सदा हम लोगोंके साथ रहती हैं और हम लोगोंकी रक्षा करती रहती हैं। अगर हम लोग नीति और धर्मके साथ जिन्दगी बितावें तो अवश्य ही उन लोगोंसे मुलाकात होगी। अगर मैंही केवल अपने प्रियजनोंकी आत्मासे मुलाकात किये होता तो मैं यह बात नहीं लिख सक्ता, परन्तु जितने लोग चक्रोंमें इस इच्छासे बैठते हैं, प्रायः सबहीने अपने प्रिय लोगोंसे बात चीत की है।

(३) यह भी सुबूत हो गया है कि हम लोगोंके मनकी बहुत ही पोशीदी बातें भी उन मुक्तात्माओंको मालूम होजाती हैं और वे उसे ज़ाहिर भी कर सक्ती है। मैं नहीं समझ सक्ता हूं कि अध्यात्म विज्ञानमें विश्वास करनेवाला एक आदमी भी ऐसा होगा जिसने यह घटना अपनी उमरमें सैकड़ों बार नहीं देखा हो।

(५) ऐसे ही यह बात भी साबित हो गई है कि हम लोग इस जन्ममें जैसा काम करते हैं, वैसा ही भाग्य परजन्ममें पाते हैं। भविष्यत जन्ममें हम आनन्दसे रहेंगे, वा अनन्त दुःख सहते रहेंगे इस

बातका निश्चय हमारे धर्मके अनुसार नहीं होगा, हम क्रिस्तान हों वा मुसलमान हों; हिन्दू हों वा जैन हो, यदि हम यहां पवित्रतासे रह सकें, एक दूसरेसे प्रेमके साथ वर्त्ताव करें, और परमेश्वरको आज्ञाओंका पालन करते रहें तो अवश्य हो पर जन्ममें आनन्दके साथ रहेंगे। कोई प्रायश्चित्त करनेसे वा किसीके देनेसे पर जन्मका आनन्द नहीं मिलेगा—वह आनन्द प्राप्त करनेके लिये हम लोगोंको स्वयं काम करना चाहिये। इससे यह भी सिद्ध होता है कि पूजा पाठ वा धर्म्मात्मा होनेके लिये किसी समयकी प्रतीक्षा करनी नहीं चाहिये हर दम भगवानका गुनानुवाद करनेमें प्रवृत्त रहें, तब हो पर जन्ममें आनन्दसे रहसकेंगे।

(६) इसके द्वारा हम लोगोंको उन्नति साधनकी प्रकाण्ड प्रणाली सिखलाई जाती है। मालूम होजाता है कि मनुष्यकी आत्मा एक आदि-कारणसे निकलकर फिर उसी आदि-कारणमें मिलित होजानेके लिये चेष्टा करती रहती है। मनुष्यके ऊपर किसी जादूका अधिकार कभी नहीं होता है—अधिकार रहता है उसी एक मात्र प्रकृतिके नियमका जो आदि समयसे विद्यमान है और जिसका अन्त नहीं हैं; उस नियमका कभी परिवर्त्तन नहीं होता और न उसके विरुद्ध कोई कुछ कर सक्ता है, वा कभी कुछ हो सक्ता है। उस नियमके अनुसार, मरनेके बाद हो, मनुष्य न तो एक दमसे पूर्ण परिष्कृत और न अधम नीचतम हो जाता है; न सैकड़ों बरस तक निद्रामें मग्न होजाता है। मरनेके बाद

उसकी ऐसी दशा हो जाती है कि वह अपनी उन्नति साधनमें निर्विघ्न प्रवृत्त हो सक्ता है।

(७) और अन्तिम बात मैंने यही सीखी है कि मरनेके बाद मनुष्य किस शरीरको प्राप्त करता है और उसका अपने पूर्व्वजन्मके साथियोंसे क्या सम्पर्क रहता है।

ऊपर लिखी पहिली चार बातोंका प्रमाण पाठकोंको पहिले लिखी बातोंसे मिल गया होगा; परन्तु अन्तिम तीन बातोंका प्रमाण दूसरे अध्यायमें हम लिखेंगे। मुझे अब दृढ़ विश्वास हो गया है कि ये सब बातें भगवानने बड़ी कृपा करके अपने भक्तोंको बतलाया है, और जब उन्होंने बतलाया है तब उनकी अवश्य ही यही इच्छा है कि हम लोग इनका विश्वास करें और इनके द्वारा अपनी उन्नति साधनमें तत्पर हों।

एक ही बात और कहके मैं यह अध्याय समाप्त करूंगा। संसारमें मनुष्य सब तरहके होते हैं; कोई ईसा मसीहके पक्के भक्त होनेके कारण अपने घरका भी आटा गीला करके सर्व्व साधारणका उपकार करते हैं, और कोई ऐसे भी हैं जो ईसा मसीहका नाम बेंचके दूसरोंका पैसा ठगके स्वयं उड़ाते हैं। वैसे ही इस अध्यात्म विज्ञानके साथ भी है। कोई महाशय स्वच्छन्द भावसे इसकी खोजमें प्रवृत्त होते हैं और फल प्राप्त कर लेनेसे प्रेमानन्द होकर भगवानके भजनमें मग्न हो जाते हैं। बहुतसे ऐसे लोग भी हैं जो अध्यात्म विज्ञानको आधार करके लोगोंसे पैसे वा नामवरी वा अन्यान्य पदार्थ हासिल करनेके लोभसे अनेक धूर्त्तता

करते हैं और जो काम मुक्तात्मा उनके लिये नहीं करती हैं, वह वे अपनी चालाकीसे करनेकी कोशिश करके अन्तमें देखारे हो जाते हैं। परन्तु हमारे ज्ञानवान पाठक उन धूर्त्तोंकी धूर्त्तता देखकर अध्यात्म विज्ञान-हीको धूर्त्तता मात्र न समझ लें। बड़े बड़े शहरोंमें कुकर्म्मियोंके घरकी लीला देखकर कोई उस शहरको केवल कुकर्म्मियोंका स्थान नहीं कहता है; एक पाद-रीके शराबी ऐयाश होनेसे कोई समस्त क्रिस्तान समाजको नशेबाज और ऐयाश नहीं कहता है; वैश ही एक धूर्त्त धोखेबाजको देखकर आप लोग इस शास्त्रको धूर्त्तता ही मात्र मत समझिये। धीर गम्भीर चित्तसे बखूबी खोज कीजिये, एक दिन नहीं दस दिन, एक बार नहीं दस बार; एक जगह नहीं दस जगह, एक तरहसे नहीं दस तरहसे, आप इसकी खोज परीक्षा करें। अगर तब भी आप इसमें कुछ असलीयत न पाव, तब इसे जो जो चाहे कहियेगा। परन्तु मुझे पूरा विश्वास है कि इस तरहसे परीक्षा करनेपर आप लोग अवश्य ही मेरे ही तरह इसमें विश्वास करने लगेंगे।

दूसरा अध्याय ।

उपदेश ।

आप लोगोंने भूतविद्याकी बहुतसी लीलायें देखी होगी, पर ऊंचे दर्जेकी मुक्तात्मासे बात चीत जान पहचान करनेसे क्या अनुपम पदार्थ प्राप्त होता है और कैसा सुख मिलता है सो आप नहीं जानते होंगे। उन लोगोंके चक्रमें आनेसे जो कुछ बात चीत होती है, उसका एक दो उदाहरन पहिले भागमें दे चुके हैं ; पर इस अध्यायमें उसी विषयके बहुतसे उदाहरन देते हैं। ये सब उदाहरन भी उक्त अमेरिकन जज एडमण्ड साहबकी पुस्तकसे लिये गये हैं।

जज एडमण्ड साहब लिखते हैं कि एक बार चक्रमें बैठे रहनेपर कई तरहकी बात चीत हुई। अन्तमें हमने पूछा "तुम सदा आनन्द रहते हो, प्रेममें मग्न रहते हो, कहो तो यह सुख तुम्हे कैसे मिला?" तब उस मुक्तात्माने उत्तर दिया कि "मैं सबको प्यार करता था, सबपर कृपा रखता था, सबकी भलाई निश्छल भावसे करनेकी कोशिश करता था और तमाम जिन्दगी मैं कुकर्मसे बचा रहा था; इन्ही सब कारनोसे मैं इस समय आनन्दमय हो रहा हूं।"

एक मरतबेके चक्रमें एक मुक्तात्माने कहा "मेरे प्यारे मित्रो ! आज और दो मुक्तात्मा हम लोगोंके शरीक

होने आते हैं। इनमेंसे एकका मृत शरीर आत्माके मुक्त होजानेपर बड़ी बेशकोमती पुशाकोंमें लपेटके दफन किया गया था, और दूसरेका शरीर फटे चिटे कपड़ेके साथ एक पुरानी गाड़ीपर लादके कबरमें फेंक दिया गया था। इस गरीबके लिये किसी आदमीने एक बूंद आंसू नहीं गिराया था, पर उस अमीरके लिये बहुतसे प्यार करनेवाले लोग रोते थे और उसके मरनेसे शोक प्रगट करते थे। लेकिन इसका फरक अब तो देखिये! वह बेचारा गरीब अपने प्यार करनेवाली साथीसे आत्माभूमिमें आनन्द पूर्व्वक स्वागत किया गया, उसी भूमिसे उसके ऊपर दिनरात खबरगोरी करने वाली उसकी स्त्रीने उसे यहां आते ही उसे अपने कलेजे लगा लिया। पर उस अमीर आदमीके लिये यह स्थान नया, वह खुद यहां अजनबीसा हुआ, उसके एक भी दोस्त यहां न थे कि उसको सुस्रुषा करें। जिस भूखे और शीतसे कांपते फकीरको उसने अपने दरवाजे परसे निकलवा दिया था उसे उसने आत्मा-भूमिका सब सुख भोगते देखा और इतना भी उसका मजाल नहीं होता है कि उस फकीरके नजदीक जाय और क्षमा प्रार्थना करे।"

मैंने तब इस आत्मासे पूछा "उन लोगोंकी अवस्था आत्मा भूमिमें जाते ही इतनी तबदील क्यों हो गई?"

मुक्तात्मा। "संसारमें रह कर जिसने जैसा किया वैसा ही फल यहां आनेपर पाया।"

मैं। उस अमीरने क्या काम किया था कि उसने यह बुरा फल पाया?"

मुक्तात्मा।" वह हमेशे ऐश अशरतमें दिन काटता रहा और उसने कभी यह न समझा कि भगवानके लिये और आदमीके लिये भी कुछ करना आवश्यक होता है।"

एक बार एक मुक्तात्माने मुझे कहा "मनुष्यको कुछ साहस देना चाहिये। भयानक देह धारियोंने मनुष्यको राह बहुत दिन तक रोकी है। सर्व्व साधरन सदा भयसे कांपते रहे हैं और इसी लिये उनकी खाहिश होती है कि मरनेके बाद एक दम प्रलय होजाय, कुछ भी अवशेष किसी दशामें न रहे तो अच्छा। भयने उनका हौसला रोक दिया है, भयके कारन वे भविष्यतकी उम्मीद नहीं कर सक्ते हैं। परमेश्वरका भय बड़ा भय है। जिस भगवानको सर्व्वशक्तिमान कहते हो, अगर उसे तुम अपना अनिष्ट करनेवाला समझो तो मन डरके मारे भीतर ही भीतर सन्तापसे मरता रहेगा। जब जीमें होगा कि वह परमेश्वर तुमसे रंज है, तब अङ्ग कांप उठेंगे, प्राण रखे रहना भार हो जायगा। इसी भयसे बहुतसे लोगोंने कहा है कि भगवान न होते वा वह हमारी सृष्टि न करते तो अच्छा होता। इस भयने बहुत दिनोतक मनुष्यको नीच अवस्थामें रखा, अब इसे दूर कर देना चाहिये। देखो जज साहब! मूर्ख और अव्यवस्थित धर्म्मोपदेशकोंके प्रदान किये हुए इन मिथ्या भयोंसे तुम मनुष्यके जीवको मुक्त कर देओ। सबको उपदेश देओ कि भगवान निर्व्विकार निर्दोष दयामय हैं, वह किसीसे रंज नहीं होते, सबको प्यार करते हैं। मनुष्य जैसा कर्म्म करता है उसे वैसा ही फल देते हैं।"

एक दफे कहा गया था "अगर तुम स्वर्गकी बातें जानना चाहो तो आत्माभूमिकी बातें जाननेकी चेष्टा करो। अगर तुम अपना कर्त्तव्य कार्य्य करके आनन्द रहना चाहो तो सबसे प्यार और न्यायके साथ उचित व्यवहार करो। ऐसा करनेसे अच्छी अच्छी आत्मा तुम्हारे पास दिन रात रहेंगी और देवता लोग तुम्हारे पीछे पीछे चलेंगे।"

एक आदमीको मेरे सामने एक बार कहा गया था "जिन लोगोंको हम लोग पृथ्वीपर प्यार करते थे उन्हे खुश देखकर हम लोगोंकी खुशी यहां बहुत बढ़ जाती है।"

"हम लोग तुम लोगोंके सामने आते हैं और अनेक प्रकारका काम करते हैं, सो केवल इसी अभिप्रायसे कि तुम लोग आत्माके अमरत्वमें विश्वास करो और शरीरका परित्याग करके आत्माभूमिमें आनेके परिवर्त्तन (मृत्यु) से भय न करो, बल्कि खुशीके साथ उसकी प्रतिक्षा करो।

शुक्रवार ता० ८ वीं अप्रेल सन १८५३ई की सन्ध्या समय डाक्तर डेकस्ट साहब किसी जरूरत कार्य्यके लिये मेरे यहां आये थे, जब वह काम खतम हो गया तब हम लोग उसके एक दिन पहिलेके चक्रके बारेमें बात चीत करने लगे। उस चक्रमें स्वीडेनबोर्गने हम लोगोंको उपदेश दिया था। बातचीत करनेके समय हम दोनो आदमी लाइब्रेरीमें बैठेथे और तीसरा कोई आदमी वहां नहीं था। उसी समय मालूम हुआ कि कोई मुक्तात्मा आपहुंची। डाक्तर साहबने

खट खट शब्द सुना और उनकी कुर्सी खसक गई। फिर उनका हाथ कांपने लगा। और उन्हें मालूम हुआ कि कोई नई आत्मा पहुंची है। टेबलके पास जाकर पेन्सिल लेके बैठ गये। तब नीचे लिखी बातें उन्होंने लिखा।

"स्वीडेनबोर्गने जिस विषयपर आप लोगोंको इतना कहा है, उसी विषयमें मैं भी आप लोगोंको आज कुछ कहना चाहता हूं। मेरा नाम है बेकन।

लोकोंके विषयका ज्ञान बहुत कम लोगोंको है, और उस विषयमें जितनी बातें प्रगट हैं वे सब सोलह आने सच्ची नहीं हैं, क्योंकि मुक्तात्मा जिस लोकमें स्वयं रहती हैं उसके बाहरकी बात कुछ नहीं जान सक्ती हैं। मनुष्यके मरनेके बाद उसकी आत्मा उसी लोकमें लेजाके रखदी जाती है जिस लोकमें रहनेकी उसकी शक्ति और अवस्था रहती है। जैसी शिक्षा पाये रहती है, जैसे समाजमें जिन्दगी बिताये रहती है और जितनी उन्नति किये रहती है, उसी हिसाबसे उसके रहनेका लोक उसे मिलता है। मसलन, जो मनुष्य बहुत शिक्षित रहता है, विद्यालयोंकी पूरी शिक्षा पाये रहता है, प्रकृतिके नियमोंको जाननेकी चेष्टा बहुत किये रहता है और धर्म्म परायणता और स्वच्छतामें भी अधिक शक्ति-युक्त होता है वह ऐसे लोकमें लेजाके छोड़ दिया जाता है जहांके स्थान और गठन ऐसे होते हैं जिनके द्वारा उसकी मुक्तात्मा अपनी शक्तिकी उन्नति बहुत जल्द करके उस लोक तक पंहु-चनेके योग्य होजाती हैं जिसमें भगवानकी अनन्त

कृपा बहुत प्रत्यक्ष मालूम होती है। क्योंकि यद्यपि भगवानके निवासका कोई विशेष स्थान नहीं है, तो भी उनकी माया किसी लोकमें कम और किसी लोकमें अधिक देखी जाती है।

ऐसा समझना स्वाभाविक ही है कि भगवानके नियमोंका फल सब जगह समान ही होगा। यह बात मनुष्यके स्वभावके विरुद्ध होगी अगर वह समझे कि भगवान एक पवित्रात्माको ऐसी आत्माके साथ रख देते हैं जो सदा उस पवित्रात्माके स्वभावके विपरीत काममें प्रवृत्त रहती है। एक अच्छी और पवित्रात्माको ऐसी जगहमें रखदेना जहां उसकी अवनति होगी, संसारके प्रधान नियमके विरुद्ध होगा—उन्नति साधनके विरुद्ध होगा। कोई पवित्रात्मा अपवित्रात्मा साथ रह कर कैसे आनन्द प्राप्त कर सकेगी? शरीरके मरजानेपर आत्माको उत्तम और सत्य पदार्थ प्राप्त करनेका बड़ा हौसिला होता है तथा अपने स्वभावके मूल तत्वकी उन्नति करनेकी बड़ी इच्छा होती है। उसी हौसिला और इच्छाके अनुसार आत्माका वासस्थान निश्चय किया जाता है—उसका ऐसा वासस्थान निश्चय किया जाता है कि वह वहां जानेसे अपने गुण, अपनी इच्छा और हौसिलाकी उन्नति अच्छी तरहसे कर सके। इस कारण अच्छी और पवित्रात्मा पृथिवीके समीप नहीं वास करती हैं। कोई आत्मा पृथिवीसे करोड़ोंकोस दूर रहती हैं और कोई कोई पृथिवीके पास ही किसी अन्य लोकमें रहती हैं, परन्तु जिस लोक वा स्थानमें जो आत्मा जाती है वह उसी लोक वा स्थानके निवासियोंकी सी ही जाती है।"

इसपर मैंने पूछा कि उनका स्थान निश्चय होनेके समय मुक्तात्माके स्वभाव और उस स्थानके निवासियोंके स्वभावके सम्बन्धका कुछ लेहाज नहीं किया जाता है? इस पर लाट बेकनकी मुक्तात्माने लिखवाया—

"अवश्य लेहाज किया जाता है। जैसे आत्माका जन्म इस पृथिवीपर होता है वैसे ही अन्य पृथिवियोंपर अन्य लोकोंमें और अन्य ग्रहोंमें भी होता है। इन सबका वासस्थान और इन सबके बाद इनकी मुक्तात्माओंके वासस्थानका निश्चय उसी लिहाजसे किया जाता है।"

मैं। "जो आदमी इस तरहसे यहां मर जाते हैं और अन्य ग्रहोंमें चले जाते हैं वे क्या फिर उस ग्रहमें जाकर वहांके जीवधारियोंके समान जन्म लेते हैं?"

मुक्तात्मा। "जो आदमी बुढ़ापेतक इस संसारमें जीता है और अपने चित्तको स्वच्छ करनेमें उन्नति करता है और खाहिश रखता है, वह मर जाता है। तब जितनी आध्यात्मिक उन्नति वह किये रहता है, उतना ही उसकी आत्मा अपनी इच्छानुसार पदार्थवाले लोककी खोज करती है। क्योंकि शरीरके बोझसे मुक्त होजानेके कारण उसकी आत्माकी फुरती अधिक हो जाती है और जब तक वह अपनी इच्छानुसार पदार्थ न पावे तबतक उसकी आत्मा उस नई फुरतीके अनुसार आध्यात्मिक काम करनेमें कृतकार्य्य नहीं हो सकेगी।

जब वह आत्मा अपने निवासके स्थानपर पहुंच जाती है, तब उसकी देह उसी स्थानके निवासियोंकी सी

हो जाती है। बल्कि संसारके मनुष्योंकी देहसे वहांके लोगोंकी देह कुछ अधिक हलकी और अध्यात्मिक वायु वत होती है। पर सब मुक्तात्माओंका स्वभाव समान ही स्वच्छ नहीं होता है, इस लिये प्रत्येक मुक्तात्मा अपने समान शरीर, इच्छा और स्वभावके जीवोंके संगमें वहां रहने लगती है।

बहुतसे ब्रह्माण्ड, लोक और ग्रहोंके लोगोंकी देह मनुष्योंकी देहसे भी बुरी होती है। परन्तु स्वभाव और शरीरका सम्बन्ध जो ऊपर कह आये हैं वह सब-हीके साथ लगा रहता है। कुत्ते जितनी महब्बत एक आदमीके लिये दिखलाते हैं, उतनी दूसरे आदमीके लिये नहीं दिखलाते। प्रकृतिके साथ ऐसे पदार्थ मिले रहते हैं जो इतने शक्तिवान होते हैं कि घटसे घट वजनके होनेपर भी एक दूसरेसे मिल ही जाते हैं।

मुझे बहुत लिखनेका समय नहीं है; इन्हीं सब बातोंको गौर करके समझिये, तब उन लोगोंकी बातें और बखूबी समझोंगे।——दस्तखत, बकन।"

उस दिन लाट बेकनने खास अध्यात्म विज्ञानके विषयमें केवल इतनी ही बातें लिखी। पर सोमबार ता० २६ वीं मई को जब हम लोग फिर इकट्ठे हुए तो फिर उनसे बात चीत हुई। इस दिन अपनी स्त्रीके साथ स्वीट साहब भी मौजूद थे। तब मैंने पूछा।

मैं। आपने कहा है कि मुक्तात्मा जिस लोकमें रहती हैं उसके बाहरकी बात नहीं बतला सक्ती हैं। तो क्या अपने लोकसे ऊपर नीचे कहींकी बात वे नहीं जान सकती हैं? हमने सुना है कि कोई कोई मुक्तात्मा

शरीर त्यागनेके बाद सीधे उस लोकको चली जाती है जिसके उपयुक्त उसकी अवस्था हो चुकी है, और जिस लोकमें वह रहेगी उसके नीचके लोक उनके पीछे छूट जाते हैं, यह क्या सत्य है?

लाट बेकनकी मुक्तात्माने डाक्तर साहबके हाथसे लिखवाया—

"जिन लोकों होकर वे जाती हैं उनकी सब बातें जान सकती हैं। पर अपने लोकसे ऊपरके लोकोंकी बातें वे कुछ भी नहीं जान सकती हैं। जो मुक्तात्मा स्वच्छ और पवित्र रहती हैं, वे एक दम सब लोकोंको पीछे छोड़कर उस दिव्य लोकमें चली जाती हैं जो वैकुण्ठके पास है। परन्तु इस तरहकी आत्मा बहुत ही कम है।"

मैं। ऐसी आत्मा भी हैं जिन्हें अपने लोकसे नीचेके लोकोंसे सम्बन्धका काई काम नहीं है?

बेकन। नहीं।

मैं। क्या मुक्तात्मा जान सकती है कि उसके नीचेके लोकमें क्या हो रहा है?

बेकन। अवश्य।

मैं। ऐसी मूर्ख मुक्तात्मा भी हैं जो अपनेसे ऊपरके लोकोंकी कोई बात नहीं जाननेके कारण अपनेको सबसे उत्तम लोकमें समझती हैं?

बेकन। "हां, सोही क्यों? ऐसी मुक्तात्मा भी हैं जो अपनेको स्वर्गहीमें समझती हैं और कहती हैं कि अन्य कहीं स्वर्ग हो भी नहीं सकती। वे सब बद आत्मा नहीं हैं वे सब अच्छी हैं; पर वे अनुमान करती हैं (एक

तरहके घमण्डके कारण) कि जहां मैं खड़ी हूं वही स्वर्ग है. उसका कारण यही है कि पृथिवीमें रहनेके समय उन्होंने अनेक विषयोंके बारेमें ऐसा समझ रखा है कि उनकी वह समझ अब जल्द बदल ही नहीं सक्ती है।

मैं। क्या हम लोगोंकी पृथिवीपर ऐसी ऐसी आत्मा भी आके रहती हैं जो इससे बुरे लोकमें रहती थीं? और क्या ऐसी भी आती हैं जो इससे ऊचें दर्जेके लोकमें रह कर भी अपनी दशाकी अवनति की है और इस कारण उस ऊंची अवस्थाके योग्य नहीं रहती हैं?

बेकन। "पहिले प्रश्नका उत्तर, "नहीं" क्योंकि उनका लोक उनके लिये यथोचित बुरा है; और दूसरे प्रश्नका उत्तर "हाँ"।

मैं। मैं सो नहीं कहता हूं। मेरा मतलब यह है कि इससे बुरे लोकमें रहनेके कारण उन्नति करनेसे इस लोकमें आती हैं कि नहीं!

बेकन। शायद तुम्हारा अभिप्राय यह है कि ऊपरके लोकमें रहनेके योग्य नहीं होनेके दण्डके तौरपर यहां आती हैं कि नहीं? खैर मैं समझता हूं कि अगर कोई इस तरहसे आती भी है तो बहुत कम समय तक ठहरती है।

मैं। भगवानके नियमोंका समान ही फल सब जगह होनेकी उम्मीद करना स्वाभाविक क्यों हैं?

बेकन। क्योंकि मन (हृदय) की क्रियाको छोड़ कर, संसारमें और किसी पदार्थ वा विषयको उस नियमके प्रतिकूल करनेकी चेष्टा करते नहीं पाते हैं। शारीरिक वा अशारीरिक किसी प्रकारकी जिन्दगीमे किसी

पदार्थको उस अवस्थाके विरुद्धकाम करते नहीं पाते हैं जिस अवस्थामें वह अपनी शक्तिका अच्छी तरहसे व्यवहार कर सक्ता है। परन्तु मन (हृदय) जिस अवस्थामें वा जिस अवस्थाके अधीन रहता है उसके विषयमें युक्ति लगा सक्ता है और इसी लिये वह (मन) उस अवस्थाके द्वारा उत्पन्न अपनी दशाका उचितानुचित पर विचार करता है। परन्तु इसमें भी भगवानके नियमोंके फलकी समानता मनके काम करनेमें अनिश्चयता रहनेसे और इस बातसे साबित होती हैं कि जहां मन उसके प्रतिकूल भी चलता है तो वहां भी कोई प्रतिकूल नियमके अनुसार नहीं; बल्कि स्वच्छन्द-बेनियमके।

मैं। आप कैसे कहते हैं कि किसी पवित्र आत्माको अपवित्र आत्माके साथ रखना भगवानके नियमके प्रतिकूल होगा, क्योंकि मैं तो देखता हूं कि संसारमें भले बुरे सब एक ही जगह रहते हैं?

बेकन। अगर भगवानने पृथिवीपर भले लोगोंको बुरे लोगोंके पास ही रख दिया है, तो वे दोनो एक दूसरेके साथ रहनेको प्रेरित नहीं किये जाते है; इस लिये, भली मुक्तात्माको बुरी मुक्तात्माके साथ रखकर उसके सुखका नाश कर देना अनुचित होगा।

मैं। आप कहते हैं कि "किसी पवित्रात्माको ऐसी जगहमें रख देना जहां उसकी अवनति होगी, सृष्टिके आदि नियमके विरुद्ध होगा।" पर मैं देखता हूं कि इस पृथिवीपर दिन रात ऐसा ही होता है; तब अन्य स्थानोंमें भी ऐसा क्यों नहीं होता है?

बेकन। नहीं ; ऐसी बात न तो यहां हो सक्ती है और न कहीं दूसरी जगहमें हो सक्ती है, क्योंकि आत्मा कभी ऐसी जगहमें नहीं रखी जायगी जहां उसके उन्नति करनेका मौका नहीं मिले। ऐसी अवस्थामें आप हरगिज नहीं कह सक्ते हैं कि कोई आत्मा ऐसी जगहमें भी रखी जाती है जहां उसकी अवनति होती हो, क्योंकि परमेश्वरने आत्माको जो स्वभाव दिया था यह उसके एकदम विरुद्ध होगा। नीचसे नीच आत्मा भी ऐसी अवस्थामें नहीं रखी जाती हैं जहां उसकी उन्नति होनी एक दम असम्भव हो।

वृहस्पति वार ता० २१ वीं अप्रैल सन १८५३ई० को डाक्तर डेक्सटरके घरपर चक्र बैठा। डाक्तर साहबके हाथपर तब स्वीडनवोर्गकी आत्माने असर की, तब डाक्तर साहबने लिखा "अगर जज साहब सब लोगोंकी तरफसे आज मुझसे प्रश्न पूछें और मैं उन प्रश्नोंका उत्तर दें दूं तो हम लोग आपसकी और बातें अच्छी तरहसे समझ सकेंगे।

मैंने तब पूछा "क्या इसी समय प्रश्न पूछना चाहिये? क्योंकि मैंने आपसे पूछनेके लिये जो प्रश्न लिख रखा है, वे सब मेरे ही घरपर हैं"। इसपर मुक्तात्माने लिखा कि इसी समय पूछलेते तो अच्छा होता। तब मैं वहांसे उठा और प्रश्नपत्र ले आनेके लिये अपने घर गया। जब तक मैं लौट कर आऊं, तब तक उस मुक्तात्माने लिखवाया—

"जब तक जज साहब नहीं आये हैं, तबतक मैं आप लोगोंको दो एक बात कहता हूं, सो खब ध्यानके

साथ सुनिये। ऐसा न समझिये कि सर्कलमें बैठ जानेहीसे मुक्तात्मा पहुंच जायगी और आप लोगोंसे बात चीत करना आरम्भ कर देगी, क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि सर्कलके साथ मुक्तात्मा बातचीत कर ही नहीं सकती। चक्रमें सब चीजोंका एक मेलमें रहना इतना जरूरी है कि अगर कहीं जरासा भी तड़ित-शक्तिका प्रवाह रुक जाय * और मिडियमका चित्त एकदम पराधीनकी तरह न रहे तो मुक्तात्मासे बात चीत नहीं हो सकती; बल्कि इससे एक ऐसी शक्तिकी उत्पत्ति होती है जो मुक्तात्माकी शक्तिका नाश कर देती है। एक बात यह भी जरूरी है कि सर्कलके लोग उसी विषयको सोचते रहे जिसके बारेमें मुक्तात्माके साथ अक्सर बात चीत होती है; क्योंकि ऐसा करनेसे कभी न कभी मिडियम अवश्य बेसुध बैठेगा और उसी समय वह मुक्तात्मा उसके ऊपर आपहुंचेगी। जब चक्रके लोगोंका मन और मुक्तात्माका मन एक तरहका हो जाता है तब एक ऐसी शक्ति पैदा होजाती है, जिससे दोनोंका उपकार होता है।"

---

* अंगरेज विद्वान लोग कहते हैं कि जैसे शरीरमें सर्दी गर्मी है वैसेही बिजली भी है। जब दो आदमी एक एक हाथ मिला लेते हैं तब एकके शरीरकी बिजली दूसरेके शरीरमें जाने लगती है और जब दोनो हाथ मिला लेते हैं तब दोनोंके शरीरकी बिजली आपसमें आने जाने लगती है। जब टेबलके पास चक्रमें लग बैठते हैं और एक आदमीका शरीर दूसरेके शरीरमें सटा रहता है, तब सब लोगोंके शरीरकी बिजली आपसमें घूमने लगती है। इसी घूमनेको "शरीरकी तड़ित-शक्तिका प्रवाह" कहते हैं। जबतक शरीर जबतक सटे रहते हैं तभीतक यह प्रवाह रहता है।

मैं तबतक वापस आने पर यह प्रश्न पूछा "गत बृहस्पतिवारको आपने कहा था कि जितने दिनोंमें पृथ्वीपर लड़के बढ़ते हैं उससे कम दिनोंमें यहां नहीं बढ़ते हैं। शुक्रवारके दिन मैंने एक मुक्तात्माका कहा बहुत अच्छा उपदेश सुना था जिसमें लिखा था कि लड़के वहां बहुत जल्द बढ़ जाते हैं। तब इन दोनोंमेंसे किस बातको मैं सत्य मानूं, और यह पूर्वापर विरोध क्यों हुआ?"

स्वोडेनबौर्ग। मैंने आप लोगोंसे जितनी बातें कही हैं, सब भगवानके उन्हीं नियमोंके अनुसार हैं जो पृथिवी और आत्माभूमि दोनो जगह प्रत्यक्ष देखे जाते हैं। इस लिये जब कभी मैं आपको कोई ऐसी बात कहूं जो उन नियमोंके अनुसार नहीं मालूम हो और जो आपकी समझसे पृथिवीमेंके प्रत्यक्ष परमेश्वरी नियमोंके विरुद्ध मालूम हो, तो आप अवश्य ही मेरी उस बातके बारेमें प्रश्न कर सक्ते हैं। परन्तु मैंने आपको समझा दिया है कि भगवानने जिन नियमोंको प्रचलित किया है वे उन्हीकी तरहकी हैं; इसी लिये भगवान स्वयं भी उनके विरुद्ध कुछ नहीं कर सक्ते हैं। अब सुनिये कि जैसे आप लोगोंको देह है वैसे हम लोगोंको भी देह है, जैसे आपलोंगोंकी देहके बढ़ने और पुराने होनेके नियम हैं वैसे ही हम लोगोंकी देहोंके भी बढ़ने और पुराने होनेके नियम हैं। न तो आप लोग उन नियमोंसे विरुद्ध देह रख सकते हैं और न हम लोग। हां इतना सच है कि हम लोगोंकी देह आप लोगोंकी देहकी तरह स्थूल नहीं

है और इसी लिये उस स्थूलताके कारण आपलोग जो कष्ट भोग करते हैं वे कष्ट हम लोगोंको भोगने नहीं पड़ते। परन्तु इसके सिवाय और कुछ भेद नहीं है। आत्मा-भूमिके लिये भगवानने कोई विशेष नियम नहीं बनाया है और न यहां कोई काम जादूकी तरह आश्चर्य रूपसे होता है। हम लोग भी वैसेही काम करते हैं, जीते हैं, मिहनत करते हैं, और बढ़ते हैं. जैसे आपलोग संसारमें काम करते हैं, जीते हैं. मिहनत करते हैं और बढ़ते हैं, केवल एक बात यही है कि आन्तरिक पदार्थ जो भगवानका अंश मात्र है वह शरीरसे जल्द बढ़ता है। इस लिये जो बात आपके तजवीजसे ठीक नहीं मालूम हो उसमें आप विश्वास कभी मत करें; और एक बात खूब ख्याल रखिये कि जब कभी आपको कोई अजीब बात कही जाय जिसमें कोई गूढ़ भेद मालूम हो तो समझजाइयेगा कि या तो वह बात मिडियमके ख्यालसे पैदा हुई है या कोई झूठ बोलनेवाला भूत आपके साथ शैतानी करता है। मुझे अच्छी तरहसे मालूम है कि आप भी इतनी बात समझते हैं और आपके मनमें इसका वास्तविक सन्देह नहीं था।"

मैं। आपका कहना सच है, मेरे मनमें सन्देह नहीं था, परन्तु मैंने इस लिये प्रश्न पूछा था कि इस बातपर किसी दूसरेको भी सन्देह न रहे। अब मेरा दूसरा प्रश्न यह है कि सब ही मनुष्य स्वामी स्त्रीके सम्बन्धके साथ ही पैदा किये जाते हैं, इसी लिये आत्माके अन्ततक यह सम्बन्ध बना रहता है?

स्वोडेनवौर्ग। आप सबसे पहिले यह समझ-लीजिये कि मनुष्य की आत्मा परमेश्वरका एक अंश मात्र है, पर परमेश्वर कोई देह धारी व्यक्ति नहीं है, वह अलख अगोचर एक नियममात्र हैं, इस लिये उनमें लिङ्गभेद नहीं है। न उन्हे पुरुष कह सक्ते हैं और न उन्हे स्त्री कह सक्ते है। सो जब परमेश्वर हीमें लिङ्ग-भेद नहीं रहा, तब आत्मामें लिङ्गभेद कैसे हो सकेगा? आप लोग जो मनुष्यमें लिङ्गभेद देखते हैं सो केवल मनुष्य शरीरका विकार मात्र है।

मैं। तो क्या आपका मतलब यह है कि स्त्री पुरुषका विचार केवल इसी शरीरमें है, आत्मामें नही है? मैं यह पूछता हूं इस लिये कि मैंने सुना हैं कि जितने पुरुष वा स्त्री हैं सबके लिये एक स्त्री वा पुरुष बनाया गया है और अगर उन दोनोसे इस लोकमें सम्बन्ध नहीं होता है तो उन लोगोंमें दूसरे जन्ममें अवश्य सम्बन्ध होता है और तब वे धीरे धीरे एक साथ उन्नति करते हैं और अन्तमें दोनो एकत्र सम्मिलित होजाते हैं।

इस प्रश्नका उत्तर आज नहीं दिया गया। पर रवि-वार ता २४ वीं अप्रैलको मैंने फिर यही प्रश्न पूछा तब उन्होने जवाब दिया "जब पृथिवीपर दो मनुष्योंमें प्रेम-होजाता है, चाहे वह प्रेम स्त्री पुरुषमें हो वा दो पुरुषमें वा दो स्त्रीमें हो, तब वह प्रेम मृत्युके द्वारा अन्त नहीं हो जाता है। आत्मा भूमिमें आनेके बाद भी वह प्रेम बंधा रहता है। तब अगर उन दोनोका काम काज, पाप पुण्य सब समान रहा हो और स्वभाव भी दोनोका एक

हो तरहका रहा हो तब वे साथ ही साथ उन्नति करने लगते हैं—समानताके कारण वे एक अवस्थामें रहते हैं और प्रेमके कारण एक दूसरेके पास रहता है। इसी प्रकार उन्नति करते करते वे स्वर्ग तक पहुंच जाते हैं, परन्तु दोनो आत्मा उतनी उन्नति करनेपर, उतना साथ रहने पर, उतना समान होने पर भी साफ साफ अलग देखी जाती हैं।

मैं। मैंने कहीं पढ़ा है कि मनुष्य तीन पदार्थोंसे बना है—शरीर, ब्रह्म और आत्मा। इन तीनोंका क्या काम है?

स्वीडेनबोर्ग। शरीर आत्माके रहनेके लिये एक स्थान मात्र है, और ब्रह्मके द्वारा कार्य्यमें तत्पर रहता है।

मैं। इन तीनोंमेंसे शरीर क्या हो जाता है सो हम लोग जानते हैं; आपने हम लोगोंको यह भी समझा दिया है कि आत्माका क्या होता है; पर जरा यह तो बतलाइये कि उस ब्रह्मका क्या होता है?

स्वीडेनबोर्ग। क्या तुम कह सक्ते हो कि अन्धेरी रातमें सूर्य्यकी ज्योति कहां चली जाती है? क्या तुम कह सक्ते हो कि उस ग्रहकी ज्योति क्या होजाती है जो साल-बसाल शून्याकारमें घूमता फिरता है और हजारों बरसके बाद एक बार अपनी ज्योति पृथिवीतक पहुंचा सकता है और उस समय आप उसे पहचान जाते हैं? इतनी बात समझ रखिये कि शारीरिक कोई पदार्थ नाश नहीं हो जाता है। जब शरीरकी शक्ति जाती रहती है, तब वे सब पदार्थ अलग अलग होजाते

हैं. परन्तु फिर समय पाकर और भी उन्नतिके साथ दूसरे शरीरमें प्रगट होते हैं।

रविवार ता० २ रीं मई सन १८५३ई० को हम लोग फिर डाक्तर डेक्सटरके घरपर मिले। मैंने वहां पूछा कि आपकी बातचीतसे मालूम होता है कि स्वर्ग तथा आत्माभूमि कोई स्थान है; उनका भी कोई ठिकाना है। तो जरा यह तो बतलाइये वह स्वर्ग कहां है?— पृथ्वीपर है वा हवामें? वहांके लोग जो कुछ खाते हैं सो कहां पैदा होता है, वह मिट्टी कैसी है, वा वे चीजें हवामें पैदा होती हैं?

स्वोडेनबोर्ग। पृथिवीमें रहनेके समयमें मैंने अध्यात्म विज्ञानके सम्बन्धमें बहुत कुछ लिखा पढ़ा था, परन्तु अब मालूम होता है कि मैंने उन लेखोंमें बहुत कुछ भल की थी। तथापि संसारमें रहकर मैंने कोई बुरा काम नहीं किया था, इस लिये मरनेके बाद मैं यहांके छठें लोकमें रख दिया गया। पर यहां आनेसे नई नई चीजें देखनेसे मेरी राय बहुत बदलने लगी, इस लिये मैं अन्य लोकोंमें भी घूमने लगा। इस प्रकार घूमनेसे और अन्यान्य मुक्तात्माओंसे बातचीत करनेसे मैं आत्माभूमिको बहुतसी बातें जान सका हूं।

इसके सम्बन्धमें आप दो बात समझ रखें। एक तो यह की आत्माभूमिमें सब आत्मा ही रहती हैं; मर्द औरत लड़के सयाने सबकी आत्मा यहां रहती है और अपनी अपनी उन्नति करके आदिकारणके समान बन जानेकी चेष्टा करती रहती है। दूसरी बात आप यह समझ रखें कि मैं जिसे लोक कहता हूं वह केवल उन्न-

तिको हुई मुक्तात्माका परिमित और निर्द्दिष्ट वासस्थान है; जितनी आत्मा नीचेके लोकमें रहती हैं वे सब अपनेसे ऊपरके लोककी आत्मासे शरीरकी सूक्ष्मता तथा आत्माकी विद्या और भलमनसाहतमें कम होती हैं।

जब मैं छठें लोकमें पहुंचा तो देखा कि जिन सम्बन्धियों और मित्रोंसे मैं पृथिवीपर प्रेमके साथ रहता था उन्होंकी आत्मायें मेरे पास आईं। इस प्रकार मैं वहां एक ऐसे समाजका सभ्य होगया जिसमें केवल मेरे सम्बन्धी और मित्रोंकी आत्मा थी; सब चीजोंका नयापन देखकर मुझे बड़ी खुशी होती थी। हवा बहुत साफ थी और आकाश हद्दसे ज्यादे निर्म्मल, पृथिवीके आकाशसे इस आकाशका केवल चमक और स्वच्छतामें भेद था। वहांकी जमीनकी ओर नजर करनेसे मैंने पृथिवीकी जमीनसे कुछ भेद नहीं देखा-हां, यहां स्वर्गिक सौन्दर्य्य और स्थानोंकी सजावट बहुत अच्छी देखी। नदी, जङ्गल पहाड़ सबही पृथिवीकी तरहका देखा केवल उनकी सुन्दरता और सजावटमें भेद मालूम हुआ पहाड़ ऊंचे नीचे और कन्दरादार नहीं, चिकने गोले आस्मानसे बातें करते हुए। पुरुष, स्त्री और लड़कोंकी आत्मा मेरे सामनेसे आती जाती थीं। मैंने उन सब सुखोंको देखकर भगवानकी अपूर्व्व शक्तिकी तारीफ और बन्दना की।

हम लोग भी जमीनहीपर रहते हैं—वैसी ही जमीन जैसी आप लोगोंकी जमीन है। पर हम लोगोंकी आत्माकी और स्थानकी उन्नति बहुत हुई रहनेके कारण हम लोगोंको अपना आहार पैदा करनेके

लिये बहुत परिश्रम करना नहीं पड़ता है। हम लोगोंके शरीरको रक्षाके लिये जितनी पदार्थोंकी जरूरत होती है उनमेंसे बहुतसे पृथिवीपर खुद-बखुद पैदा होते हैं। और एक बात-जितने ऊपरके लोकोंकी आत्मा हैं वे नीचेकी आत्माके हिसाब से कम भोजन करती हैं। जैसे जैसे मुक्तात्मा ऊपरके लोकोंको उठती जाती है, वैसे वैसे उसके शरीरकी स्थूलता घटती जाती है। और वह आदि-आत्माकी तरह होती जाती है। यहां पेड़, फल, फूल सब कुछ मौजूद हैं।

ऐसा कहना कि शरीरधारी आत्माका वासस्थान केवल इसी पृथिवीपर है, बहुत भारी भूल है। आप अपने ही संसारकी पदार्थोंको देखकर समझ सक्ते हैं—जड़ चेतन सब पदार्थोंमें आप भिन्न भिन्न श्रेणी देखते हैं। ये सब काम उसी एक बड़े बनानेवालेकी कारीगरीके सूचक मालूम होते हैं, क्या इन सबको भी देखकर क्या आप निश्चय नहीं कर सक्ते हैं कि इन सबके ऊपर भी कोई श्रेणी अवश्य है?

ऐसा खयाल करना कि यह जगत वा मनुष्य भगवानकी उस इच्छासे विरुद्ध जा रहा है जिससे उन्होंने इसकी सृष्टि की थी, एक दम बड़ी बेवकूफी होगी और इससे यह कहना होगा कि जिस भगवानने इतना बड़ा ब्रह्माण्ड रचा था वह इसके चलते रहनेके लिये कोई पक्का और अचल नियम नहीं बना सके। जब आप देखते हैं कि अनन्त ग्रह अपने अपने मार्गमें नियमानुसार चल रहे हैं और कभी उस नियम वा उस मार्गसे बाहर नहीं जाते; जब आप देखते हैं कि सूर्य्य और

चन्द्रमा अपने२ कामपर सदा नियमानुसार मौजूद रहते हैं कभी इधर उधर नहीं जाते हैं ; जब आप देखते हैं कि पृथिवी नियमानुसार सोना चांदी पेड़ पानी पैदा करती है,—निदान आप जितनी चीजोंको देखते है सबको नियमानुसार काम करते देखकर आपको इतना ज्ञान नहीं होता है कि संसारमें जितनी बातें होती हैं सब उसी भगवानहीके बनाये नियमोंके अनुसार ? आप इतना नहीं समझ सक्ते कि उसके नियमोंके अतिरिक्त कोई चीज कोई काम नहीं कर सक्ता ? तब आप कैसे कह सक्ते हैं कि मनुष्य भगवानकी इच्छासे विरुद्ध चल रहा है ?

मैंने तब कहा कि मेरे सब प्रश्नोंका तो उत्तर हो गया, पर उस लोकका स्थान नहीं मालूम हुआ।

स्वोडेनबोर्ग। मैं नहीं समझता हूं कि मैं उसके स्थानका ठीक ठिकाना दे सक्ता हूं वा आप उसे समझ सक्ते हैं। अगर वृहस्पति लोक, सूर्य्य लोक कहें तो आप कुछ समझें,लेकिन अगर इस छठे लोकका ठिकाना आपको बतलाऊं तो आप भी घबड़ा जायंगे। इतना ही समझ जाइये कि आप जितने ग्रह और तारे देखते है इन सबसे भी दूर यह लोक विद्यमान है।

मैं। जितने ही नीचे दर्जेकी मुक्तात्मा होती हैं इस पृथिवीके उतना ही समीप रहती हैं, यही बात न है ?

स्वोडेनबोर्ग। हां ; सबसे नीचे दर्जेकी मुक्तात्मा इस पृथिवीपर बहुत आती हैं और इस पृथिवीपर जैसा काम करती थीं प्रायः उसी तरहका करती रहती हैं।

है। आप लोगोंमें भी क्या समाज सब आपसमें मेल करती हैं और राजा प्रजा मुकर्रर करती हैं ?

स्वौडेनबौर्ग। एक समाजके चारों ओर समाज है, इसी तरहसे बढ़ते बढ़ते सबसे अन्तके समाजके चारों ओर भगवान ही व्याप्त हैं।

मैं। आपके लोकके ऊपरभी कोई ऐसा लोक है जिसमें रहनेवाली मुक्तात्माओंको आप लोग वैसे ही नहीं देख सक्ते हैं जैसे हम लोग आप लोगोंको नहीं देख सक्ते है ?

स्वौडेनबौर्ग। हां,पर मैं यह भेद नहीं समझा सक्ता हूं।

ता: १० वीं जूलाईके चक्रमें मैंने स्वौडेनबौर्गसे पूछा कि मुक्तात्माका शरीर कपड़ेसे ढका रहता है। तब आप लोग लेबास पुशाक लिये किसी कठिन पदार्थके भीतर कैसे जा सक्ते हैं? इसके उत्तरमें उसने कहा कि आप लोग ऊंचे दर्जेकी मुक्तात्माके विषयमें बहुत कम ज्ञान रखते हैं। हम लोगोंका शरीर है, परन्तु वह शरीर छूनेके लायक नहीं है; हम लोगोंकी पुशाक भी उसी तरहकी है। हम लोग कहीं जाते नहीं केवल इच्छा करते हैं। इच्छा करने हीसे वहां मौजूद हो जाते हैं। अभी ख्वाहिश हुई कि दश हजार कोसपर जाऊं, बस वहीं मौजूद हो गये ; अभी इच्छा हुई कि कोई कठिन पदार्थके भीतर जाऊं,बस वहां पहुंच गये। जैसे बिजलीकी असर किसी पदार्थमें हो जाती है; जैसे सब चीजोंमें सर्दी गर्मी सदा मौजूद रहती है; वैसे ही हम लोग भी कठिन पदार्थोंके भीतर विराजमान हो जाते हैं। अलबत्ते नीचे दर्जेकी मुक्तात्मा अपने शरीरहीसे कहीं आती जाती हैं।

तीसरा अध्याय।
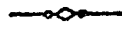
मुक्तात्मासे मुलाकात।

उक्त जज एडमण्ड साहबने अपनी किताबमें जितनी बातें लिखी हैं, उन सबका सारांश देना यहां असम्भव है। परन्तु जो कुछ गत दो अध्यायोंमें दिया गया है, उससे पाठक लोग समझ गये होंगे कि मुक्तात्मा सत्य हैं और वे लोग साधारन भूतोंकी तरह शैतानी करनेमें ही अपनेको संसारमें प्रगट नहीं करते हैं, बल्कि उनके द्वारा अनेक ज्ञानोपदेश मिलता है। उक्त ही जज एडमण्डसाहबने अपनी पुस्तकके अन्तके एक उपसंहारमें फौलर साहब और मुक्तात्माओंकी मुलाकातका वर्णन किया है। यह वर्णन फौलर साहबने स्वयं किया था। और उसकी नकल जज साहबने अपनी पुस्तकमें दी थी। उस वर्णनके पढ़नेसे पाठकोंको मुक्तात्माके विषयमें बहुत कुछ मालूम होजायगा, इस लिये उनका सारांश भी देदेना हम मुनासिब समझते हैं। इस अध्यायमें हम पहिले वही वर्णन देंगे। फौलर साहब लिखते हैं—

पहिली मुलाकात।

ता: २१ वीं नवम्बर सन १८५१—आज रातको १२ बजे तक मैं टेबलके पास बैठा पढ़ता रहा, तब सोने गया। जब मैंने चिराग बुझा दिया तब देखा कि

मेरे पलङ्गपर एक ज्योति विराज रही है। यह ज्योति गोली और करीब एक फुट मोटी थी। यद्यपि यह ज्योति कुछ अधिक तेज थी, तथापि मैं इससे घबराया नहीं, क्योंकि मैंने ऐसा पहिले कई बार देखा था।

करीब पांच मिनट तक पलङ्गपर पड़े रहनेके बाद मुझे किसी आदमीके घरमें आनेका शब्द सुन पड़ा। पर दरवाजा बन्द था। इस वर्णनको समझनेके लिये नीचेका नकशा देख लीजिये; यह नकशा मेरे सोनेके घरके भीतरी भागका है—
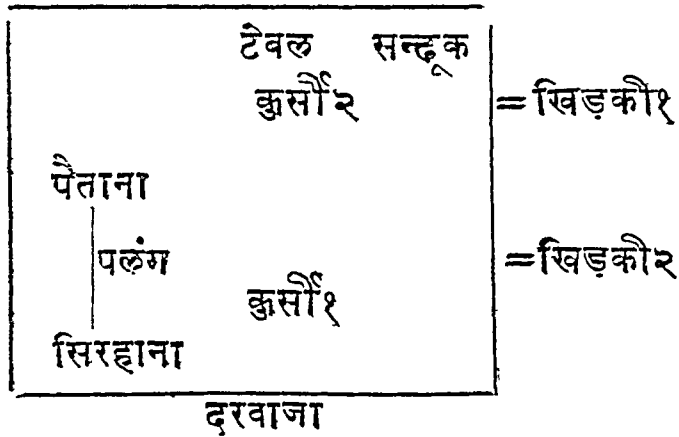
जिस वक्त वह शब्द सुनपड़ा उस वक्त मेरा चेहरा दीवालकी तरफ था, परन्तु शब्द सुनकर मैं खिड़कीकी ओर फिरा और देखा कि सवा चार हाथका एक आदमी घरके बीचसे खिड़की १ की तरफ जा रहा है। वहां एक दूसरे आदमीसे उसे मुलाकात हुई। यह आदमी उसी खिड़कीकी राहसे आया हुआ मालूम हुआ, यद्यपि मैंने उसे आते नहीं देखा; खिड़कीसे दोतीन फुट-पर पहिले पहिल देखा। यह आदमी पहिले आठ

मीसे कुछ नाटा था। दोनोमें दो चार मिनट तक बात-चीत हुई, फिर दोनो मेरे पास आये और लम्बे आद-मीने मुझे कहा "उठो और कहता हूं सो लिखो।"

इतना सुनके मुझे कुछ भयसा हुआ, तबीयतमें हुई कि भाग जाऊं कोशिश भी की, परन्तु उठ नहीं सका। मैं अपना हाथ पांव कुछ भी हिला नहीं सक्ता था, कण्ठ मानो एक दम बन्द हो गया। मैं लाशकी तरह पड़ा रहा। एक सर्द हवा बह गई, और भी मिजाज सन्नाटा होगया। मेरे प्राण गोया सूख गये।

वे दोनो मेरे पास मेरा तमाशा देखते खड़े रहे, फिर टेबलके पास चले गये और वहां एक तीसरा भी दूस-रेकी तरह आ मिला। तीसरा सबसे छोटा और पतला दुबला था। यह करीब ६० बरसकी उमरका मालूम हुआ और उसके हाथमें कोई चीज थी जिसेमें बखूबी देख नहीं सक्ता था। ये तीनो कुछ देर तक वहीं बात चीत करते रहे। तब एक चौथा भी आगया। रङ्ग रूप डौल डौलसे मुझे शुभा हुआ कि चौथा प्रसिद्ध बेन्जा-मिन फ्रैङ्कलिन था, परन्तु फ्रैङ्कलिन साहबसे यह हंस-मुख कुछ ज्यादे था। यह चौथा एक बक्स एक हाथ लम्बा और आध हाथ चौड़ा और गहिरा बगलमें दबाये था। टेबलके पास आकर उसने बक्स उसपर रख दिया। इतनेमें पहिला आदमी कुर्सीपर बैठ गया और दूसरा सन्दूक पर। आधे घण्टेतक चारोंने वहीं बात चीत की; तब पहिला और दूसरा मेरे पास आये। मेरे नजदीक ये लोग आधे घण्टे तक बोलते रहे। मैंने उनका कहना उस समय बखूबी समझ लिया था, परन्तु

मुझे वे बातें याद एक भी न रहीं। इस वक्त नाटा आदमी और बक्सवाला दोनो टेबलके पास रहे। मुझसे कह सुनके वे दोनो फिर टेबलके पास चले गये और चारों कुछ देर तक बात चीत करके घरसे चले गये। वे लोग तीन घण्टे तक ठहरे, तीन बजे वे लोग चले गये। पहिले सबसे लम्बा आदमी गया और बक्स-वाला सबसे पीछे गया। उन लोगोंको घरसे निकलते मैं नहीं देख सका। खिड़कीके दोफुट इधर ही वे लोग नजरसे गायब हो गये।

मुझे पूरा विश्वास है कि मैंने ये सब घटनायें अपनी आंखोंसे देखी, स्वप्न नहीं था, क्योंकि घटनाके आरम्भके पहिले मुझे नींद नहीं आई थी और उसके आरम्भ हो जानेपर घरके बाहर जितने शब्द होते थे सो सब ही मैं बखूबी सुनता था। पासके गिरजा घरकी घड़ीमें १२, १, २, ३, ४ जो बजा था सो मैं सुनता था।

दूसरी मुलाकात।

ता: २२ वीं नवम्बर। कल मुझे तमामरात गाढ़ी नींद नहीं होने पाई थी, इस लिये आज मैं सवेरे ९ बजे सोने गया। १२ बजे तक मुझे गाढ़ी नींद आई, तब न मालूम क्यों मेरी नींद छूट गई। फिरके घरमें देखा तो किसीको नहीं पाया तबीयत बहुत खुश हुई। पर बारह-बजनेके पांच ही सात मिनट बाद पहिले फिर वही लम्बा आदमी पहुंचा और उसके बाद पांच आदमी और भी कलहीकी तरह आगये। बक्सवाला सबसे पीछे आया। वे लोग आज बहुत खुश थे, खास करके बक्सवाला आदमी

तो मारे खुशीके फूले अङ्ग न समाता था। बक्सको टबल पर रखके वे लोग आपसमें बातचीत करने लगे, कभी मेरी ओर देखते थे और कभी उस बक्सकी तरफ।

आखिरकार,बक्सवाला आदमी बक्सके पास गया, उसे खोला और तब उसका ढपना गिरा दिया गया। घण्टों-तक वे लोग उस बक्सको कलका इन्तजाम करते रहे। जब दुरुस्त हो गया तब उसमेंसे एक ज्योति निकलने लगी। परन्तु उसी टेबलपर एक छुरी रखी थी, वह छुरी बिजल बहुत खींच सकती थी इसलिये वह ज्योति उसी छुरीकी तरफ जाती थी। उन लोगोंने उस छूरीको फेंक दिया, तब उस बक्समेंसे अनेक रङ्गकी ज्योतियां निकलने लगीं! ये सब ज्योतियां एक लोहके कलमपर असर करने लगीं एक टुकड़ा कागज उस बकसपर लाकर रखा गया और वह कलम ज्योतिके द्वारा उठ कर उसी कागजपर खड़ा हुआ। साफ मालुम होता था कि उस ज्योति होके जोरसे कलम उठा, दावातमें डुबा और कागजपर लिखने लगा। लिखनेमें पाच मिनटसे कम न लगा। इसके अनन्तर वह बक्सबन्द कर दिया गया, ज्योति गायब हो गई और वे लोग कुछ बातचीत करके चले जाते रहे। पहिले आज भी लम्बा आदमी गया और बक्स-वाला सबसे पीछे गया।

सुबहको उठकर देखनेसे मालूम हुआ कि उन लोगोंने सचमुच एक असल कागजपर लिखाथा; पर अङ्गरेजीमें नहीं, हेब्रू भाषामें। हेब्रू जाननेवाले एक प्रधान अध्यापकसे अनुवाद करानेपर मालूम हुआ कि उन लोगोंने बाइबल मेंसे पांच पंक्तियां लिखी थी।

पहिले भागमें हमने मुक्तात्माओंके विषयमें केवल साधारण बातें दी थीं। उन बातोंसे मुक्तात्माओंके सम्बन्धकी बहुत ही थोड़ीसी बातें पाठकोंको मालूम हुई होंगी। दूसरे भागमें उनके विषयमें और भी गम्भीर बातें कही गईं। परन्तु इस अध्यायके पहिले जितनी मुक्तात्माकी बात लिखी थीं प्रायः सबहीमें मुक्तात्मा अदृश्य ही रूपसे प्रगट हुए हैं। किन्तु इस अध्यायकी घटनाओंको पढ़कर पाठकोंको मालूम हो गया होगा कि वे अपनी इच्छानुसार प्रत्यक्ष रूपमें भी प्रगट हो सकते हैं। उनके प्रत्यक्ष होनेके सम्बन्धमें भी अनेक आश्चर्यजनक बातें बड़े बड़े प्रतिष्ठित लोगोंने लिखी हैं। मुक्तात्मा अपना सांसारिक स्वरूप धारण करके सब लोगोंके सामने प्रगट होती हैं, बात चीत करती हैं, भूत वर्त्तमान और कभी कभी भविष्यत बातें भी कहती हैं, उनका शरीर छूनेसे कभी कभी स्पर्श हो जाता है। परन्तु इन सब बातोंकी चर्चा हम तीसरे भागके लिये रख छोड़ते हैं।

द्वितीय भाग समाप्त।

लार्ड बेकन—सन् १५६१ ई०में पैदा हुए और सन् १६२६ ई०को ९वीं अप्रैलको मरे वह महारानी एलिजबेथके विश्वासी मन्त्री सर निकोलास बेकनके पुत्र और सब लोगोंके प्रसिद्ध प्यारे लार्ड बर्लेके भतीजे थे। उनका जीवन विद्या और दार्शनिक चर्चाओंमें व्यतीत हुआ था। वह इङ्गलण्डमें न्यायके अनुमान-खण्डके प्रवर्त्तक हुए। प्रथम जेम्सके राज्यकालमें वह पहिले सालिसिटर जनरल और पीछे आटारनी जनरल बनाये गये और सन् १६१७ ई०में इङ्गलण्डके लार्ड चेन्सेलर हुए। जबतक अङ्गरेजी भाषा जीती रहेगी, तब तक उनके लेख तथा "नोवम ऑरगानम" ग्रन्थ कायम रहेगा।

लार्ड बेकनका यह हस्ताक्षर लार्ड बेकनकी मृत्युके प्राय: २२७ वर्ष बाद सन् १८५३ ई०को अमेरिकामें डाक्टर डेक्सटर और जज एडमण्डस्‌के चक्रमें लिखा गया था; लेकिन उनके जीवित कालके हस्ताक्षरसे हुबहू मिलता है। प्रकाशक।

तृतीय भाग।

परलोक

पहिला अध्याय ।

एण्डो मिडियम ।

थियोसोफिकल सोसाइटीका नाम आजकल बहुत लोग जानते हैं। इसकी प्रधान सभा तो मन्द्राजमें है, परन्तु इसकी शाखा सभायें भारतवर्षके प्रायः बिलकुल प्रधान शहरमें हैं। थियोसोफिकल सोसाइटीसे सम्बन्ध रखनेवाले लोग अध्यात्म विज्ञानमें कुछ भी विश्वास नहीं करते हैं, इस लिये पाठक लोग सहजहीमें समझ सक्ते हैं कि उस सोसाइटीके सभापति कर्नल औलकट साहब अवश्य ही इसके बिरोधी होंगे। परन्तु कर्नल औलकट साहबने भी इस शास्त्रके सम्बन्धमें जो कुछ लिखा है वह अध्यात्म विज्ञान वालोंके पक्षहीमें है।

पहिले ही लिख चुके हैं कि अध्यात्मविज्ञानकी जैसी चर्चा अमेरिकादेशमें है वैसी और कहीं नहीं है। इस लिये इस शास्त्रके आधुनिक प्रमाणोंकी खोज कर-

नेसे पहिले अमेरिका ही देशमें जाना पड़ता है। कर्नेल ओलटका हिन्दुस्तानमें आनेके पहिले अमेरिका देशके वासी थे। आजकल यह जैसे सुविख्यात, धार्म्मिक, सज्जन और सत्यवक्ता कहके परिचित हैं, अमेरिका देशमें भी यह वैसे ही परिचित थे। इस कारण, जब उस देशमें अध्यात्म विज्ञान सम्बन्धी खबर बहुत जाहिर होने लगीं और उनको अद्भुत समझकर जैसे जैसे आधुनिक वैज्ञानिक लोग उनमें अविश्वास प्रगट करने लगे वैसे वैसे वे खबरें और भी बहुतायतसे और और भी विचित्रतासे प्रकट होने लगीं। तब अमेरिका देशके प्रधान नगर न्यूयार्कके दो प्रधान दैनिक समाचार पत्रोंने उन खबरोंको सत्यताकी परीक्षा करनेके लिये ओलटका ही साहबको मुकर्रर किया।

उस समय ये सब खबरें खासकर चिट्टेण्डेन गांवसे उठती थी। यह गांव यूनाइटेड ष्टेटसके रटलैण्ड शहरके पास है और यहां एड्डी नामके एक साहबका वंश रहता था। इस खान्दानमें होरेशियो एड्डी और विलियम एड्डी नामके दो भाई रहते थे। ये दोनो बड़े भारी मिडियम थे—खास करके विलियम। उन्ही लोगोंके सामने मुक्तात्मा प्रगट होती थीं उनके विचित्र समाचार आसपासके लोगोंमें फैलता था और इन्ही लोगोंके द्वारा अध्यात्म विज्ञान सम्बन्धी आश्चर्य्य और अद्भुत घटनायें घटित होकर सम्पूर्ण अमेरिका देशमें फैलती थीं। न्यूयोर्कके समाचार पत्रोंकी तरफसे मुकर्रर होकर ओलटका साहब इसी लिये चिट्टनण्डेन गांवको गये।

होरेशियो और विलियम एड्डोकी मिडियमगरीके सम्बन्धमें एक बड़ी भारी विचित्रता थी। इन लोगोंने मिडियमगरी खुद-बखुद कोशिश करके वा सर्कलमें बैठके नहीं सीखी थी, और न किसीके सिखलानेसे वा मेसमेराइज करनेसे इन लोगोंको यह विद्या प्राप्त हुई थी। इन लोगोंको यह विद्या पुस्तानी थी। इन दोनो भाइयोंकी मांके नैहरमें यह शक्ति बहुत लोगोंको जन्महीसे होती थी। इनकी मां भी कुमारी रहनेके समय इस शक्तिसे सम्पन्न थी और यद्यपि शादी होनेकी बात चीत होनेके बादसे उसने इसकी कोई कार्रवाई जाहिर नहीं की थी, तौ भी पहिली सन्तान हो जानेके बाद फिर भी यह शक्ति अपने पूर्व्व रूपसे प्रगट हुई। सबसे बड़ा लड़का तो अपने बापके समान हुआ, परन्तु शेष सब लड़के लड़कियां इस विषयमें अपनी मांहीकी तरहकी हुईं। जन्महीसे वे सब मिडियम हो गईं और पालनेपर अबोध पड़ी रहनेके समय भी उनके पास मुक्तात्मा प्रगट होती थीं और अद्भुतकार्रवाइयां किया करती थीं।

मुक्तात्माओंकी सहायतासे बोबी एड्डो भविष्यतमें होने वाली घटनाओंकी सूचना दे सक्ती थी और मुक्तात्माओंको प्रत्यक्ष भी देखती थी। उन लोगोंसे वह बात चीत करती थी और होनेवाली विपत्ति वा खुशीकी खबरें पहिले ही कह दिया करती थी। उसका स्वामी एड्डो साहब इसमें कुछ भी विश्वास नहीं करता था, और जब उसकी कहीं बात वास्तवमें होजाती थीं, तब वह कहता था कि यह सब "शैतान" (माया) का काम

है। एड्डो साहब हमेशे इसी कोशिशमें रहता था कि उसकी स्त्री और लड़कोंको "शैतान" से बात चीत करनेकी आदत छूट जाय। बच्चे पालनेपर सोते रहते थे तब उनके पास खट खट शब्द होने लगें, चीज सब खुद-बखुद इधरसे उधर चली जांय और अनेक प्रकारके आश्चर्य्य काम होने लगें। इन घटनाओंको देखकर एड्डो साहब बहुत रंज होने लगा; बच्चोंको मारने पीटने लगा, उनके शरीरसे खून निकलने लगता, तो भी वे उपद्रव बन्द न होते। ऐसे होते होते, आखिरमें मुक्तात्मा मूर्त्तिमान होकर सबके सामने प्रगट होने लगीं। जब एडडो साहब अपने सब लोगोंके साथ घरमें बैठा रहे और उन उपद्रवोंके लिये रंज होता रहे, या, उस समय कोई मुक्तात्मा प्रत्यक्ष सामने खड़ी हो जाय। एड्डो साहब उसपर भी रंज होकर उसे मारने पीटनेके लिये दौड़ता था, परन्तु वह इनके हाथ नहीं आती थी। इस प्रकार कई तरहसे परेशान होकर एड्डो साहब यद्यपि अपनी स्त्री और लड़के लड़कियोंसे रंज ही रहा तौ भी मुक्तात्माओंके प्रगट होनेपर उस घरसे भाग जाने लगा। यह माजरा एड्डो साहबको तमाम जिन्दगी होता रहा।

एड्डो साहबके लड़के स्कूलमें भी पढ़ने नहीं पाये। जब वे स्कूलमें पढ़नेको बैठते थे, तब उनकी चारों ओर खट खट शब्द होने लगते थे और कई प्रकारके उपद्रव होते थे, जिससे माष्टरलोग लाचार होकर उन लड़कोंको स्कूलसे निकाल देते थे। स्कूलके और लड़के इसी कारण उनपर ताली बजाते थे, हंसी करते थे, पत्थर

झांकते थे। एड्डी साहबके लड़के इसी कारण जाहिल और छुश दिहानी किसान हुए। जब होरेशियो और विलियम दोनो लड़के कुछ सयाने हुए तब, एड्डी साहबने रुपयेको लालचसे इन दोनोंको तमाशावालोंके हवाले किया; ये तमाशावाले अपने अन्य तमाशाओंके साथ इन दोनो लड़कोंको भी दर्शकोंके सामने ला रखते थे और इनके आनेसे मुक्तात्मा लोग आकर जो कारखाना करते थे उससे रुपया पैदा करते थे। इस अवस्थामें इन लड़कोंको बड़ा कष्ट सहना पड़ा था। दर्शक लोग इन मुक्तात्माओंकी कारवाइयोंकी परीक्षा करनेके लिये इन छोटे मिडियमोंको अनेक प्रकारकी यन्त्रणा देते थे। कभी इनके हाथ पैर सिर सब एक जगह कसके बांधकर घण्टों छोड़ दिये जाते थे; कभी एक लकड़ी गाड़कर उसमें इनके हाथ, देह, पांव सब मजबूतीसे बांध दिये जाते थे, और इसी अवस्थामें पहरों छोड़ दिये जाते थे। जब ये मुक्तात्माओंके आनेपर कभी कभी बेहोश हो जाते थे, तब इन्हे फिर होशमें ले आनेके लिये कोई इन्हे मारता था, कोई चूंटी काटता कोई घूसा लगाता था, कोई गरम पानी देहपर छिड़कता था और एक बार एक आदमीने विलियनके सिरपर जलती अङ्गार रख दी थी। इस तरह कष्ट सहनेके बाद, एक बार एक मुक्तात्माने इनसे कहा कि इस तरहसे तमाशेवालोंके साथ फिरनेसे तुमलोगोंको हानि होती है, इस लिये अपने घर ही पर मुक्तात्माओंके साथ बातचीत करनेका बन्दोबस्त कर लेओ। तभीसे इन लोगोंने चिट्टिण्डेन गांवमें स्थिर रहना, वहीं मुक्तात्माओंके साथ

बात चीत करना और उन्हे सबके सामने प्रगट कर देना निश्चय किया। जिस समय औलकट साहब इनके घर गये थे, उस समय बूढ़े और बुढ़ी एड्डी परलोकको चली गई थीं और होरेशियो और विलियम एड्डी सब दिन मुक्तात्माओंसे बात चीत किया करते थे।

जब मुक्तात्माओंसे बात चीत करनेका कोई नियमित प्रबन्ध नहीं किया गया था, तब इन दोनों भाइयोंके पास जब न तब, सबही जगह, सबही कोठरीमें, मुक्तात्माओंकी कार्रवाइयां देखी जाती थीं; परन्तु जबसे इन दोनों भाइयोंने तमाशावालोंका सङ्ग छोड़कर अपने घरमें सब दिन मुक्तात्माओंसे मिलनेका प्रबन्ध किया, तबसे वे मुक्तात्मा केवल एक ही खास कोठरीमें और सन्ध्याके बाद रातको प्रगट होती थीं और अपनी अद्भुत लीला दिखलाती थीं। होरेशियो वा विलियम एड्डी उस समय उस कोठरीमें अवश्य ही जाके बैठता था; उस खास कोठरीमें मुक्तात्माओंके प्रगट होनेके सुबीतेके लिये कुछ विशेष प्रबन्ध भी किया गया था।

यह खास कोठरी दूसरे महलपर थी। इसके एक किनारे एक ही दीवारमें सटा हुआ एक चबूतरा था। इस चबूतरेके किनारेपर जंगला लगा हुआ था, जिससे चबूतरेके नीचे बैठे लोग कूदकर सामनेसे उस चबूतरेपर नहीं जा सक्ते थे, इस चबूतरेसे जिस तरफ लोग बैठ सक्ते थे उस तरफ जङ्गलेके पीछे चबूतरेपर कुछ जगह खाली पड़ी थी और शेष जगह एक कोटरीसे घिरी

थी। (नीचेके चित्रसे उस कोठरीकी बनावट साफ़ मालूम हो जायगी। यह चित्र बड़ी कोठरीकी है राह इसमें जानेकी सिर्फ एक ही (ज) है। (घचङक) चबूतरेपर की कोठरी है; इस कोठरीमें (क) एक खिड़की है जो नीचे जमीनसे बहुत

ऊंची और खुले मैदानमें देखती है; (च) इस कोठरीका दरवाजा है, और (घ) से (ङ) तक जो सीधी सम्सूची लकीर है वही चबूतरेके किनारेका जंगला है। उस चबूतरेपर जानेके लिये सिर्फ (घ) और (ङ) स्थानोंमें सीढ़ी बनी हुई है। (ख) और (ग) दो खिड़कियां हैं और छोटी कोठरीसे कुछ सम्बन्ध नहीं रखती हैं।) (छ) स्थानमें लोग सब बेञ्चपर वा कुर्सीपर बैठते हैं। सब लोग जब (छ) स्थानके बेञ्चोंपर वा कुर्सियोंपर बैठ जाते थे तब मिडियम आकर (घ) वा (ङ) राहसे (च) दरवाजे होकर भीतरकी छोटी कोठरीमें पैठ जाता था और (च) दरवाजा बन्द कर देता था। इसके बाद मुक्तात्मा प्रगट होती थीं। (च) दरवाजेके ऊपर एक सूराख होकर एक परदा दरवाजेपर लटकता था। मिडियम भीतरकी कुर्सीपर बैठा रहता था, पर मुक्तात्मा अनेक प्रकारकी कारवाई करती थीं, जिसका वर्णन नीचे किया जायगा।
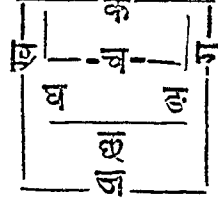
लोगोंको शुभा हो सक्ता है, कि मिडियम ही चबूतरे परकी कोठरीमें बैठकर बिलकुल कारवाई करता था और मुक्तात्माका नाम बदनाम करता था। परन्तु औलकट साहबने लिखा है कि उन्होंने इन सब बातोंको

बखूबी खोज करके निश्चय कर लिया था कि मिडियम उतनी कार्रवाई हरगिज स्वयं नहीं कर सक्ता। वहां किसी दूसरेकी सहायता भी उसे नहीं मिल सक्ती थी। क्योंकि कोई आदमी कोई सहायता (छ) स्थानसे नहीं दे सक्ता था, वहांसे और सब लोग देख लेते। (ग) और (ख) खिड़कियां इतनी दूरपर थीं कि उस तरफसे अगर एक पतला तार भी चलाया जाता तो दर्शकोंको देख पड़ता। (क खिड़कीके बारेमें भी शुभा करना उचित नहीं, क्योंकि वह खिड़की पहिलेसे नहीं बनी थी। चबूतरा बन जानेके बहुत दिन बाद उसपरकी कोठरीमें बन्द बैठे रहनेसे मिडियमको एक बार गर्मी चढ़ गई थी, मूर्छा आ गई थी, इस लिये हवाके आते रहनेके लिये वह खिड़की बनवा दी गई थी। अलावे इसके ओलकट साहबने मच्छड़से बचानेवाले जालसे उस खीड़कीको बन्द कर दिया था और उसके इस तरह बन्द रहनेपर भी सब घटनायें बराबर होती थीं। चबूतरा वा चबूतरेपरकी कोठरीमें एक तखता भी ऐसा नहीं था जो नीचे वा ऊपरसे उठ सके सब मजबूतीके साथ लोहेकी कांटियोंसे जड़े थे। इस लिये कहींसे मिडियमको सहायता पहुंचनेका खयाल एक दम दूर ही कर देना चाहिये।

तो जब न मिडियम स्वयं कुछ कार्रवाई करता था और न बाहरकी कोई सहायतासे ये होती थीं, तो क्या सचमुच मुक्तात्मा ही ये काम करती थीं? क्या ओलकट साहबको भी मुक्तात्माओंकी सत्यतामें विश्वास होगया? कुछ नहीं, ओलकट साहबको न तब कुछ विश्वास हुआ

था और न अब कुछ विश्वास है। उन्होंने लिखा है कि मैंने अपनी आंखोंसे जो कुछ देखा वही लिखता हूं; इन घटनाओंमें मैं किसी मनुष्य वा यन्त्रकी कार्रवाई नहीं पकड़ सका और न मैं इसको किसी मानुषी क्रियाका फल कह सक्ता हूं, तब यह क्या है सो विद्वान लोग विचारें। जिन विद्वानोंने पृथ्वीकी आकर्षण-शक्तिकी खोजकर डाली है, साधारण पदार्थोंसे एक शक्ति पैदा करके रेल चला दी है, तार दौड़ा दिया है, समुद्रको ष्टीमरोंसे जीत डाला है, जिन लोगोंने हृष्ट जङ्गली अवस्थासे बढ़ाकर संसारको सभ्य बना डाला है, वेही विद्वान लोग उसकी खोज करें, देखें कि इसमें क्या सत्य और क्या असत्य है। वास्तवमें मनुष्य मरनेके बाद मुक्तात्मा होता है वा नहीं सो बात वेही विद्वान लोग निश्चय करें।

औलकट साहबने लिखा है कि मिडियम लोग कभी कभी कोई बात अपनी चालाकीसे भी दिखलानेकी कोशिश करते हैं और मुक्तात्माके नामपर खेल जाते हैं। अगर कोई विद्वान बुद्धिमान उस बातकी खोज करेगा तो अवश्य ही मिडियमकी वह धूर्त्तता समझ लेगा, परन्तु एक वा दो ऐसी घटनाओंको देखकर ऐसा न समझना चाहिये कि मुक्तात्माके नामकी बिलकुल कार्रवाइयां धोखेबाजी ही हैं। एक दो नकली रूपयेके प्रचलित हो जानेसे कोई नहीं कहता है कि असल रुपये प्रचलित नहीं है—बल्कि उससे यही मालूम होता है कि असल पक्के रुपये प्रचलित हैं। वैसे ही एक दो धोखेबाजी देखकर मुक्तात्माओंकी सब कार्रवाइयोंको धोखे-

बाजी कहना अनुचित होगा। विद्वानोंको चाहिये कि इस विषयकी आद्योपान्त पूरी खोज करके संसारको अवगत करें। क्योंकि अगर यह बात सच्ची ठहरे तो संसारका बड़ा उपकार होगा, अगर झूठी निकली तो सब लोग एक बड़ी बलासे बच जायंगे।

अब दूसरे अध्यायमें हम ऑलकट साहबके सामनेकी दो चार घटनाओंका उल्लेख करेंगे। उनके उल्लेख करनेमें यद्यपि हम ऑलकट साहबके वाक्योंका अविकल अनुवाद नहीं करेंगे, तौ भी आलकट साहबके लिये उत्तम पुरुषका "मैं" लिखना और उन वाक्योंका उसीके अनुसार काल दशा देना अच्छा होगा। सो, इसके बादके अध्यायोंको पढ़नेमें पाठकोंको इस बातका बखूबी खयाल रखना चाहिये।

दूसरा अध्याय।

प्रत्यक्ष दर्शन।

ओलकट साहबने लिखा है—

जो सब बातें एड्डी साहबके घरमें जाकर सब लोग देखते हैं वे इन तरहोंकी हैं (१) पहिले अध्यायमें वर्णन की हुई सर्कल-कोठरीमें मुक्तात्माओंका सदेह प्रगट होना।

(२) मुक्तात्माओंका केवल हाथ साफ़ देख पड़ना; बच्चे हाथमें अंगूठी पहरा दिया जाना; कार्डपर मरे आदमियोंका नाम लिखा जाना जिसमें लिखनेवालेका केवल हाथ देख पड़ता है; रोशनीमें बाजाओंका स्वयं बजना।

(३) बाजा बजना; गायब मनुष्यकी बोली सुन पड़नी; नाचनेकी आहट मालम होनी; भारी शरीर-वालोंके चलनेकी आवाज आनी; हवामें बाजाओंका इधर उधर दौड़ना; दो लड़नेवालोंमें लड़ाई होनेकी और तलवार चलनेकी आवाज आनी, बिना बत्तीकी रौशनी होनी; गायब हाथोंसे दर्शकोंका शरीर छुआ जाना; पांच सात अदृश्य आदमियोंका एक ही बार कई तरहका बाजा बजाना; दर्शकोंकी आज्ञानुसार विशेष विषयपर अदृश्य पुरुषोंका गीत गाना; सीटी बजना; इत्यादि इत्यादि—ये सब काम अन्धेरी कोठरीमें होते हैं।

ऊपर लिखी तीनो तरहकी घटनाओंको मैंने खुद कई बार देखा सुना और मालूम किया है।

इन घटनाओंके सम्बन्धमें लोगोंको शुभा हो सक्ता है कि अन्य लोगोंकी सहायतासे मिडियम यह तमाशा कराता है। परन्तु मैंने सर्कल-कोठरी और उसके आस-पासकी कोठरियोंको देखकर बखूबी निश्चय कर लिया है कि और लोगोंकी सहायता मिडियनको वहां हरगिज नहीं मिल सक्ती है। तब यह बात निकलती है— कि मान लिया जाय कि सर्कल-कोठरीके चबूतरेपर जाहिरा भिन्न भिन्न आकार, रङ्ग, पुशाक, उमर और लिङ्गके मनुष्य प्रगट होते हैं; तब इसका कारण दोही हो सक्ता है—याता ये सब रूप एक ही मिडियमके हैं जो किसी चालाकीसे कई तरहका होके नजर आता है, वा किसी अज्ञात शक्तिके द्वारा ये प्रगट होते हैं। इन दो से तीसरी कोई बात नहीं हो सक्ती। इन घटनाओंमें कोई करामात हो वा जो कुछ हो, उस चबूतरेसे बाहर कुछ नहीं है। जैसा मानसिक परिश्रम मुझे चिट्टेण्डनमें रहनेके समय हुआ था वैसा कभी किसी विषयके लिये और कहीं नहीं हुआ था। जितनी तरहसे अविश्वास करना सम्भव है, मैंने किया था। मैं सदा इसी खोजमें रहता था कि इन घटनाओंके विषयमें मैंने जो राय की है उसके विरुद्धकी कोई बात मेरे तजवीजसे छुट जाने न पावे। और मैं सदा इसी ताकमें था कि कोई कारण ऐसा मिलजाय जिससे मैं धोखेबाजोंके पाले पड़ा हुआ साबित हो जाऊं और मुझे अपने मुह अपनेको बञ्चित कहना पड़े। परन्तु लाचार होकर

मुझे अन्तमें कहना पड़ा कि इन घटनाओंके कारणके विषयमें और जो कुछ कहा जाय, परन्तु उनके होनेमें चालाकी धूर्त्तता वा धोखेबाजीका नाम भी नहीं कहा जा सक्ता है। किन्तु तौ भी मैं इनसान हूं। ऐसा हरगिज नहीं कहूंगा कि मैं धोखा खाही नहीं सक्ता हूं। मुझसे भी बड़े बड़े बुद्धिमान और विद्वान लोग धोखा खा चुके हैं। मुझसे भी बढ़के चालाक लोगोंको धूर्त्तोंने धोखा दे दिया है। ऐसी अवस्थामें मैं इस विषयमें जिद्द कैसे करूं कि एड्डी साहबकी सर्कल-कोठ-रीमें मुक्तात्माओंको छोड़कर और कोई चबूतरेपर कार्र-वाई नहीं करता है? इस लिये मैंने यथार्थमें जो कुछ देखा सोही कहता हूं। मुझमें जितनी सत्यता, जितनी निष्पक्ष-पातता और न्याय परायणता है, सबको सहायता लेकर मैं अपने आंखकी देखी और सामने कानकी सुनी घटना-ओंका उल्लेख करता हूं। अगर मेरे लिखनेसे किसी एक भी बुद्धिमान विद्वानका चित्त इस ओर फिरे और वह इस विषयकी खोज करके मुक्तात्माओंकी सत्यता प्रगट कर दे तो मैं बड़ा खुश होऊंगा; और अगर वह विद्वान महाशय इसे केवल भण्ड चरित सबूत कर दें तौ भी संसारको एक विशाल धोखेकी टट्टीसे बचानेमें सहायता देनेका खयाल मुझे निरन्तरमें आनन्द देता रहेगा।

एड्डी साहबके मकानमें सर्कल कोठरी बहुत थोड़े दिनोंसे बनी है। ता० १ली जनवरी सन १८७४ ई० को इस चबूतरेपर मुक्तात्मा पहिले पहिल प्रगट हुई थीं। उस दिन कोठरी अन्धेरी कर दिये जानेपर और विलियम एड्डीके चबूतरेपरकी कोठरीमें बैठ जानेपर, जौर्ज

डिक्स नामक एक जहाजीकी मुक्तात्मा पहिले आई और दर्शकोंको बहुत कुछ समझा बुझाके अन्तमें कहा कि इस चबूतरेपर प्रायः सब दिन मुक्तात्मा आया करेंगी। कोठरी फिर उजियाली किये जानेपर मिडियमकी माकी मुक्तात्मा, एक बीबी एटनकी मुक्तात्मा एक बीबी ब्वीलरकी मुक्तात्मा, एक डाक्तर हौर्टनकी मुक्तात्मा, अपने दो बच्चोंको लिये, आई और दर्शकोंके सामने सदेह, प्रगट होकर कई बातें कह गई। उस तारीखसे एतबारको छोड़कर और सब दिन शामको विलियम एड्डी चबूतरेपरकी कोठरीमें बैठता है और मुक्तात्मा सदेह प्रगट होती हैं। विलियम एड्डीकी मिडियमगरीके बारेमें एक विशेषता यह है कि यह मुक्तात्माओंके प्रगट होनेसे जरासा भी सुस्त नहीं होता है। बड़े बड़े मिडियमोंके बारेमें भी कहा गया है कि मुक्तात्माओंके अदृश्य रूपसे भी प्रगट होनेपर वे बहुत सुस्त होजाते हैं—दुबला पतला होना अधिक सोना, आदि, बातें तो उनके लच्छन ही हैं। परन्तु विलियम एड्डी सब रोज मुक्तात्माओंको सदेह प्रगट करता है तौभी हृष्टपुष्ट, तरोताजा रहता है और अपने अन्य कामोंमें उचित परिश्रम करनेके साथ किसी तरहसे सुस्त वा आलसी नहीं मालूम होता है। सोता भी बहुत नहीं।

ता० १७वीं सितम्बर सन १८७४ ई०को मैं चिट्टेनडेनमें पहुंचा और उसी दिन उस सर्कल कोठरीमें तमाशा देखा। उस दिन बड़ी आंधी और मूसरोंधार पानी पड़ रहा था, बाहरके झर झरसे भीतर सब लोग

झिल्लाते थे, इस लिये दर्शक लोग बाजा बजाने लगे। थोड़ी देरके बाद चबूतरे परके (च) चौकठके परदेके भीतरसे एक बूढ़ी औरतकी सुरीली आवाज आई। उसने कहा कि आजकी रात बहुत बुरी है, इस लिये बड़ी साहसी और दिलेर मुक्तात्माओंको छोड़कर और कोई मुक्तात्मा आज यहां नहीं आ सक्ती है। यद्यपि यह आवाज बूढ़ी औरतकी तरह थरथराती थी और स्वर भी कुछ भिन्न था तौ भी शब्दोंके उच्चारण करनेका ढंग चिट्टेण्डेनके लोगोंकी तरहका रहनेसे उस समय मुझे विश्वास हुआ था कि कुछ नहीं एड्डी साहब ही आवाज बदलके बोल रहा है। परन्तु इसके बाद कई दिन यह बूढ़ी औरत मेरे सामने जाहिर हुई है, बातचीत कर चुकी है, इस लिये मुझे पीछे मालूम हुआ कि यह एड्डी साहबकी आवाज नहीं थी। यह बूढ़ी बीबी एटन थी, जिसका जिक्र मैं पहिले कर चुका हूं।

बीबी एटनकी आवाज बन्द होनेपर परदा कुछ हिलने लगा और हण्टोंकी मुक्तात्मा सदेह सामने आई। आजकल अमेरिका देशमें सिर्फ गोरे अङ्गरेज फ्रानसीसी मिलते हैं; परन्तु इन लोगोंके यूरोपसे जाकर वहां बसनेके पहिले उस देशमें एक जातिके लोग रहते थे जो देखनेमें काले होते थे और अङ्गरेजोंसे वे इण्डियन कहे जाते थे। जैसे जैसे अङ्गरेज लोगोंकी शक्ति वहां बढ़ने लगी वैसे वैसे काले इण्डियनोंकी शक्ति कम होती गई, अन्तमें उनकी जाति ही संसारसे अलक्षित हो गई; आज कल एक भी काले

इण्डियन अमेरिकामें नहीं पाये जाते हैं। इराटो उसी काली इण्डियन जातिकी एक औरत थी।

इराटोकी शकल सब तौरसे काली इण्डियन जातिकी मालूम होती थी। उमिर उसकी कम ही थी, रङ्ग काला, चलने फिरनेमें बड़ी चुस्ती और चालाकी दिखलाती थी, खेलवाड़ी, बहुत खोज पूछ करनेवाली पर उसके सब काम स्वाभाविक ही मालूम होते थे। ऊंचाई ५ फिट ६ इञ्च मालूम हुई, क्योंकि चबूतरेपरकी कोठरीकी दीवालमें सटाकर मैंने नम्बर दी हुई रंगीन छड़ी अड़ा दी थी। बावजूदेके कई ऊपर ऊपर देखनेवालोंने लिखा है कि मिडियम विलियम एड्डी ही इराटोकी शकल बनके आता है, परन्तु मैंने बखूबी तजवीज करके देखा तो साफ मालूम हुआ कि विलिलम एड्डीसे इराटोकी कुछ भी मुशाहवत नहीं थी। इराटोको मैंने घटसे घट ३० बार देखाहोगा, परन्तु तो भी मैं उसे विलियम एड्डीका रूपान्तर कहनेको प्रस्तुत नहीं हूं।

चबूतरेके ऊपर (घ) और (ङ) सीढ़ीके पास अलवनी स्थानकी रहनेवाली बीबी आर क्लेभलैण्ड और वहींके रहनेवाले ई॰ भी॰ प्रिचार्ड साहब कुर्सीपर बैठे थे। इस स्थानमें प्रायः सब दिन दो आदमी बैठते हैं। इराटोने कोठरीके बाहर निकलकर एक दुशालेको एक ओर बीबी क्लेभलैण्डके हाथमें थम्हा दिया और दूसरी ओर ख़ुद थाम्हकर दुशालेको फैला दिया और सब दर्शकोंको दिखला दिया। इसके बाद उसने उस दुशालेको (घ) और (ङ) के बीचवाले जङ्गलेपर रख दिया। फिर एक

काला कपड़ा उसी तरह सबको दिखला कर दोनों कप-ड़ोंको कोठरीके भीतर फेंक दिया।

इस समय दर्शकोंमेंसे किसीने कहा कि अगर हरटो अपने कलेजेकी धड़धड़ी देखने देती तो अच्छा होता। इस पर उसने झट अपना सीना खोल दिया और बीबी क्लेमलैण्डके पास आगई। बीबी क्लेमलैण्डने उसके खुले सीनेपर हाथ दिया। धड़धड़ी कुछ धीमी थी, पर ठीक ठीक चलती थी। बदन एक दम सर्द और तर—मुरदोंकी तरह मालूम होती थी। सीना सचमुच औरतोंकासा था, जिससे साफ मालूम हुआ कि विलियम एड्डी साहब अपनी सूरत ऐसी हर-गिज नहीं बना सक्ता था। जैसी धड़धड़ी कलेजेपर मालूम होती थी, वैसी ही हाथकी नाड़ीमें भी थी। हरटोका हाथ न तो बहुत बड़ा और न बहुत छोटा था, पर बहुत कड़ा था, उंगलियां चौड़ी पर ठूठी नहीं—रंग सबका काला।

हरटोके चलेजानेके बाद काली इण्डियन ही जातिकी एक दूसरी औरत आई इसका नाम "ब्राइट ष्टार" (चमकीला सितारा) कहा गया। ब्राईटष्टारके बाद "डेब्रेक" (सुबह) नामकी तीसरी काली इण्डियन जातिकी औरतकी मुक्तात्मा आई। इसने चबूतरेपर बहुत देर तक नाचा। डेब्रेकके चलेजाने पर सैण्टम नामकी चौथी मुक्तात्मा पहुंची। यह भी काली इण्डियन जातिकी थी। सैण्टमके बाद उसी जातिके दो पुरुषोंकी मुक्तात्मा पहुंची। इन सबके बाद अंगरेजोंकी मुक्तात्मा आई।

अङ्गरेजोंमें सबसे पहिले विलियम एच० रेनोल्ड्स-की मुक्तात्मा पहुंची। रेनोल्डस साहब जूता-फरोश था। अमेरिका देशके उत्तर खण्ड और दक्षिण खण्डके निवासियोंमें जो घोर घराऊयुद्ध हुआ था, उसमें रेनो-ल्डस साहब कर्नैल था और लड़ाईके समय ही उसे बुखार हुआ था जिससे वह ६ठीं मई सन १८७४ ई०को मर गया था। यह मुक्तात्मा काली पुशाक पहिने थी और दाढ़ी रखे थी। इसके बाद इसीका भाई पहुंचा और उसके भी चले जानेपर ष्टीफन आर होपकिन्-सकी मुक्तात्मा चबूतरेपर पहुंची। रेनोल्डस साहबका सबसे छोटा भाई जौर्ज रेनोल्डस उस समय दर्शकोंके साथ बैठा था, और उन्होंने होपकिन्सकी मुक्तात्माको देखते ही पहचान गया, होपकिन्स उसका भान्जा था। इन सबके बाद विलियम ब्रौनकी मुक्तात्मा आई। विलियम ब्रौन विलियम एड्डीके बहनोई एडवार्ड ब्रौनका बाप था।

एडवार्ड ब्रोन अपने मित्रोंकी मुक्तात्मासे मिलनेके लिये बहुत दिनोंसे हैरान था। एक मिडियमके चक्रमें यह एक बरस तक सब दिन बैठता रह गया था। परन्तु उसे किसी परिचित लोगकी मुक्तात्मासे मुलाकात नहीं हुई थी। विलियम एड्डीके चक्रमें आनेपर भी चार पांच हफ्ते तक उसे किसीसे मुलाकात नहीं हुई थी, पर उस अरसेके बाद उसके बापकी मुक्तात्मा सामने आई थी। थोड़े दिनों तक वह मुक्तात्मा चुप चाप आती थी और चुप ही चाप चली जाती थी, जबान नहीं खोलती थी। पर इसके बाद वह धीमी

आवाजसे बोलने लगी थी। जिस दिनका जिक्र मैं कर रहा हूं उस दिन वह बड़ी जोरसे साधारण आदमियोंकी तरह बोलती थी और जो कुछ उसे कहना होता था सो वह बखूबी सबको समझाके कहती थी। एक बार लण्डन शहरका एक चक्रको एक मुक्तात्माको छोड़कर मैंने आजतक किसी मुक्तात्माको जबानसे बोलते नहीं सुना था। लोग कहते हैं कि मुक्तात्मा बोल नहीं सक्ती हैं, केवल उनके इच्छा करनेसे बाहर हवापर असर पहुचती है और उसीसे लोगोंके कान तक उनकी इच्छा शब्दाकार मालूम होती है। परन्तु मैंने जिस सफाईसे विलियम ब्रौनको बोलते सुना उसे देखकर इस रायका समर्थन करनेको प्रस्तुत नहीं हूं। मैंने साफ देखा कि ब्रौनकी मुक्तात्माका होठ हिलता था—ठीक जैसे कोई साधारण जीवित आदमी बोले वैसे ही वह बोलती थी।

विलियम ब्रौनके चले जानेपर मुक्तात्मा इस रात सिर्फ एक ही बार और आई। पर इस बार एक नहीं तीन मुक्तात्मा एक साथ ही पहुंची। इन तीनोंमेंसे एक सिर्फ बरस डेढ़ बरसका बच्चा था और दूसरी १२।१३ बरसोंकी लड़की थी। तीसरी बड़ी बढ़ी औरत थी। यह बूढ़ी एक हाथसे चबूतरेपरकी कोठरीके मुहपरका परदा हटाये थी और दूसरे हाथसे उस बच्चेको थाम्हे थी। आजके दर्शकोंमें जर्मनी देशका गवैया मैक्स लेञ्जबर्ग साहब अपनी स्त्री और लड़कीके साथ बैठा था। विलियम एड्डीके अनुरोधसे लेञ्जबर्ग साहबने उस रात बेयाला बजाया था, इस कारण वह सपरिवार दर्शकोंके सबसे आगेकी पंक्तिमें बैठा था। ज्योंही वे लड़कियां

चबूतरेपर जाहिर हुई' कि लेञ्जवर्ग साहबकी स्त्री अक-चकाके अपनी देश-भाषामें बोल उठी "हैं! ये तो मेरी ही लड़कियां मालूम होती हैं! सच तो,वेही हैं!"इतना सुनकर चबूतरेवरसे खटखटकी आवाजके जरिये बीबी लेञ्जवर्गकी बातोंकी सचाई जनाई गई। लेञ्जवर्ग साहबकी लड़की अपनी मांके पाससे कूदककर आगे बढ़ गई, जङ्गलेके पास जाकर देखने लगी और अपनी बहिनोंको देखकर बड़ी खुश हुई और अपनी ही देश-भाषामें उन लोगोंसे प्रश्न पूछने लगी जिसका उचित उत्तर उन लोगोंने खटखटके द्वारा दिया।

एड्डी साहबके घरकी इस तरहकी घटनाओंका कारण बतानेमें मुक्तात्माओंकी कुछ भी सहायता न स्वीकार करनेवाले कई महापुरुषोंने लिखा है कि तकियेमें वा अपने घुठनेके नीचे पैरमें कपड़े लपेटकर एड्डी साहब बच्चोंकी शकल जाहिर करता है। मुझे पूरा विश्वास है कि ऐसा कहनेवालोंकी सिर्फ जिद है। वे बच्चे सचमुच मुक्तात्मा हैं वा क्या हैं, सो मैं नहीं कह सक्ता हूं, परन्तु इतना तो मैं अवश्य कहूंगा कि वे बच्चे तकिया वा कपड़ेसे लिपटे पैर नहीं होते हैं। मैंने कई बार मुक्तात्माओंको गोदमें बच्चा लिये उसकी गरदनमें लगाये और उसके हाथ उनकी गरदनमें लिपटे देखा है। एक बच्ची लड़कीको मैंने एक बार देखा कि उसने अपना हाथ निकालकर मेरे लिये अपनी तरहथी चूमी। दूसरी बार यही लड़की आधी छाती खुली गरदनीवाली नीमेअस्तीन कूरती पहनकर सामने आई थी और कमरमें रेशमी कमरबन्द बाधें थी।

मुक्तात्माओंके शरीरके गायब होनेके बारेमें कई आदमियोंने लिखा है कि वे गायब होनेके समय धीरे धीरे गायब होती हैं, उनका शरीर सूक्ष्मानुसूक्ष्म होने लगता है, अन्तमें एक झीने परदे कीसी शकल मालूम होती है और तब एक दम गायब हो जाती हैं। परन्तु मैंने, और कई आदमियोंने, देखा है कि मुक्तात्मा धीरे धीरे गायब होती हैं सच, पर उस तरहसे नहीं। अन्त समयतक उनका कोई न कोई अङ्ग पूरा पूरा देख ही पड़ता है। एक बार हम लोगोंने देखा था कि हराटो नाचते नाचते चबूतरेपर गिर गई और कमरसे नीचे एक दम गायब होगई। पीछे उसकी कमरसे ऊपरके अङ्ग भी धीरे धीरे गायब होने लगे, अन्त समय तक सिर साफ दीखता रहा और तब सिर भी परदेके भीतर चला गया। एक बार ऊपर कही हुई बीबी क्लेमलैण्डका हाथ पकड़के हराटो नाचने लगी। नाचते नाचते बीबी क्लेमलैण्डने हराटोका हाथ पखुरेसे नीचे पकड़ना चाहा, पर मुट्ठीमें सिर्फ कपड़ा आगया—मालूम हुआ कि हराटोंका समूचा हाथ साकार नहीं हुआ था; पहुंचा साकार हुआ था, कपड़ेकी आस्तीन साकार हुई थी, पर समूचा हाथ साकार नहीं हुआ था। इस बातसे भी मालूम होता है कि मुक्तात्मा अङ्गअङ्गके हिसाबसे साकार होती हैं। सदेह होनेके विषयमें चबूतरेपरकी मुक्तात्माने भी स्वयं कहा था कि साकार होना सहज बात नहीं है—यह भी एक विद्या है—और क्तात्माओंको यह विद्या सीखनी पड़ती है। कहां तक वे सीख सकी

है सो मिडियमकी शक्ति पर निर्भर करता है। किसी किसी मिडियमके सामने मुक्तात्मा सदेह होही नहीं सक्ती है, किसी किसीके सामने वे सिर्फ अपना हाथ साकार बना सक्ती हैं; किसीके जरिये सिर भी साकार करती हैं, और समूची बदन साकार करनेमें सहायता देनेवाले मिडियम बहुत ही कम हैं। परन्तु मुक्तात्मा-ओंके लोप होनेके सम्बन्धमें जब तक कोई कड़ी परीक्षा नहीं की जाय, तब तक मैं कुछ रांय नहीं दे सक्ता हूं।

तीसरा अध्याय।

घटनाओंकी आलोचना।

इस भागके दूसरे अध्यायमें लिखा गया है कि एड्डी साहबकी सर्कल कोठरीकी बनावट और उस चबूतरेकी बनावट ऐसी है कि बाहरी सहायता मिडियमको कुछ भी नहीं मिल सक्ती है। इसपर यह भी लिखा गया है कि बाहरी सहायताकी आशंका दूर हो जानेसे इन अद्भुत घटनाओंके सिर्फ दो ही कारण बतलाये जा सक्ते हैं। एक तो यह कि मिडियम खुद-बखुद चबूतरे-परकी कोठरीके भीतर अपना रूप बदलके जाहिर होता है और लोगोंको धोखा देता है; और अगर यह बात न हो तो अवश्यही किसी अज्ञात शक्तिके द्वारा ये काम किये जाते हैं—वह अज्ञात शक्ति मुक्तात्मा है वा क्या है सो बिचार करने की कोई जरूरत नहीं;

इन दो कारणोंको छोड़कर तीसरा कोई कारण नहीं हो सक्ता है। यहां पहिले इसी बातकी आलोचना करना उचित मालूम होता है कि मिडियम स्वयं सर्कल कोठरीके भीतरसे रूप बदल कर जाहिर होता है कि नहीं।

जो आदमी दूसरोंका रूप धर कर सबको पूरा धोखा दे सक्ता है उसमें कौन कौन गुण होने चाहिये, सो बात थियेटरके मनेजर लोग अच्छी तरहसे बतला सक्ते हैं। गौर करनेसे मालूम होगा कि वह आदमी (१) स्वभावहीसे नक्काल होगा; (२) नकल बनानेकी विद्या बखूबी सीखे रहेगा; (३) न बहुत लम्बा होगा और न बहुत नाटा होगा, जिससे किसीका रूप बनानेसे दर्शकोंको उसकी ऊंचाईपर शुभा न होने पावे; (४) उसके पास थियेटरके समान भण्डार रहेगा, जिसमें सब तरहके कपड़े, पुशाक, जूता, बाल आदि मौजूद रहेंगे; (५) चेहरा बदलने, कालेसे सुफेद, स्त्रीसे पुरुष, बननेके लिये कुछ समय जरूर लगावेगा; (६) भेष बदलनेके लिये आईना रखेगा और जहां भेष बदलेगा वहां रोशनी जरूर रखेगा; (७) पुशाक बदलेनके लिये जगह रखेगा; (८) मुलायम मिजाज, बातूनी, और सबके साथ मिलनसार होगा। इन गुणोंके अलावे एड्डी साहबके चबूतरेपर की मुक्तात्माओंका भेष बनानेवाला (९) अनेक जबानका भी पण्डित होगा, अन्ततः कई जबनोंमें बात चीत करनेके लायक लेयाकत रखेगा।

अब इन बातोंको ध्यानमें धरके अगर कोई आदमी विलियम एड्डीकी सूरत देखे तो वह कभी नहीं कहेगा

कि इन (९) गुनोंमेंसे एक भी उसमें पाया जाता है। न तो उसके मिजाजमें और न उसकी बदनकी बनावटमें स्वाभाविक अभिनय-कर्त्ताका एक भी लच्छन पाया जाता है। मुलायम मिजाजके बदले वह एक दम भद्दा है; उसने अपनी जिन्दगीमें कभी किसी नाट्यालयमें वा आपसके खेलमें कोई अभिनय नहीं किया; पांच फिट ९ इञ्च (चार अंगुल कम चार हाथ) ऊंचा, और वजनमें १७९ पौण्ड (दो मन साढ़े आठ सेर) है; नाटकवालोंकी तरहका एक चिथड़ा भी उसके घरमें नहीं था—नकली बाल, जूता इत्यादि कुछ भी नहीं थे, एक मुक्तात्माके जानेके बाद दूसरी कभी आधे मिनटमें और कभी ५ मिनटमें आजाती थी, जिससे एक ही आदमीके भेष बदलनेकी कोई शंका नहीं की जा सक्ती है। काली इण्डियन जातिकी मुक्तात्माके बाद ही गोरे अङ्गरेजोंकी मुक्तात्मा पहुंचती थी और गोरे अङ्गरेजोंकी मुक्तात्माके बाद ही काली इण्डियन जातिकी मुक्तात्मा आती थी; मरदके बाद औरत और औरतके बाद मरद, लड़केके बाद सयाने और सयानेके बाद लड़के; लम्बेके बाद नाटे और नाटेके बाद लम्बे; एक तरहकी देहवालेके बाद ठीक उसकी उलटी तरहकी देहवालेकी मुक्तात्मा आध आध मिनटके अभ्यन्तर चबूतरेपर जाहिर होती थीं। चबूतरेपरकी कोठरी बहुत ही अन्धियाली रहती थी, उसका दरवाजा कभी बन्द नहीं किया जाता था, केवल एक ऊनी परदा उस दरवाजे पर लटकता रहता था। वह परदा भी ऐसा था कि अगर कोठरीके भीतर कोई एक बत्ती एक बार जल्दीसे

इधरसे उधर भी लेजाता तो बाहरके दर्शकोंको उसकी ज्योति साफ मालूम होती। चबूतरेपरकी कोठरी दो फिट (सवा हाथ) चौड़ा और सात फिट (पौने पांच हाथ लम्बा) है। कोठरीके भीतर न तो कोई आलमारी और न सन्दूक, बक्स वा कपड़ा आदि रखनेकी कोई और चीज थी और जो खिड़की है उसे मैंने मुहर देकर कपड़ेसे बन्द कर दिया था, उस होकर कोई आदमी बाहरसे नहीं आसक्ता था। मिडियम कच्चे मिजाजका है चलने फिरनेमें बहुत सुस्त, जरा भी फुरतीला नहीं है, आखें उसकी सदा उदास रहती हैं और जो काम औरतें करती हैं घरके वैसे कामोंमें वह चबूतरेपर चढ़नेके समय तक लगा रहता था। मिलनसार तो वह नामका भी नहीं है, सदा लोगोंसे अलग और अपने कामोंमें सुस्तीके साथ लगा रहना पसन्द करता है।

भाषाके बारेमें यह बात है कि वह सिवाय अपनी ग्रामीण भाषाके और कोई न बोलता और न जानता है। इसके अलावे, दो महीने तक मैं उसके साथ रहा उसकी हरएक मिनटकी बातचीत तौर तरीका देखा, काम धाम सब कुछ भली भांति जान लिया। इससे मुझे साफ मालूम हुआ है कि विलियम एड्डी स्वच्छ मिजाज और हृदयका सरल आदमी है, बहुत ही मुहब्बत दार, सच्चा और दयालु है, गरीबोंको देनेमें अपना अन्तिम पैसा भी छिपाकर नहीं रखने चाहता। कोई ऐब, धोखेबाजी, पोशीदगी वा घमण्ड उसमें नहीं है। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि विलियम एड्डीको देखकर कोई

भी इसकी जातसे किसी तरहकी धोखेबाजीकी उम्मीद नहीं कर सक्ता है। ऐसा सूधा, सरल और भद्रा आदमी बड़ा भारी मक्कार और धोखेबाज हो, यह कभी सम्भव नहीं। लेकिन इसके साथ साथ उसका स्वभाव ऐसा बुरा है कि वह किसीके साथ दील मिला नहीं सक्ता है।

कई बार मैं सुबहसे शामतक डिलियम एड्डीके साथ हर मिनट रहा हूं, यहां तक कि जबतक दर्शकोंका चक्र सर्कल—कोठरीमें बन रहा था तबतक मैं उसे लिये नीचे बबुरची खानेमें बातचीत कर रहा था और जब लोगोंने उसे चबूतरेपरकी कोठरीमें प्रवेश करनेके लिये बुलाया तब मैं भी उसीके साथ साथ सर्कल—कोठरी तक गया। लेकिन इतने अर्समें मैंने उसे किसी तरहकी तयारी करते नहीं पाया। न तो किसी समय उसने कोई कपड़ा सम्भालके रखा और न कभी किसी दूसरे बातकी तयारी मुक्तात्माको जाहिर करनेके लिये किया। चबूतरेपरकी कोठरीमें भी मैं उसके साथ गया और वहां जाकर देखा कि मिडियमके बैठनेकी कुर्सी हण्टोकी टोपी और सैण्टनका सिक्का छोड़कर और कोई चीज उस कोठरीमें पैसे भरकी भी नहीं थी। वह टोपी और सिक्का एक दर्शकने उक्त नामकी मुक्तात्माओंको दिया था और वे सदा उसी कोठरीमें रहते थे।

जिस रात मैं वहां पहिले पहिल गया था उस रात ज्योंही आखिरी मुक्तात्मा चबूतरेपरकी कोठरीके भीतर पैठी कि बौबो एटनकी मुक्तात्माकी आवाज आई। बौबो एटनकी मुक्तात्मा ही इन घटनाओंका इन्तजामकार है।

उसने मुझे पुकारकर कहा कि रौशनी लिये आईये और मिडियमकी दशा देखिये। मैं भी झटपट बत्ती लिये भीतर गया, देखा सब कुछ साबिक बदस्तूर है। कोई कपड़ा इधर-उधर पड़ा नहीं पाया; कोई चिन्ह ऐसा न देखा जिससे वहां किसीके कुछ तयारी करनेकी शङ्का हो। कोठरीकी खिड़की (क) काले शाल और कम्बलके जरिये एक दम बन्द की हुई थी। पाठकोंको याद होगा कि इस दिन सबसे अन्तकी मुक्तात्मा लेनृज-बर्गके दोनो लड़केकी थीं जो सुफैद कपड़े पहने जाहिर हुई थी। परन्तु यद्यपि उनके गायब हुए ३० सेकेण्ड भी नहीं हुए थे, तौ भी जिस समय मैं उस कोठरीमें पहुंचा उस समय उनके कपड़ेका नाम निशान भी न देखा। मिडियमको बेखबर सोता पाया—नीद खूब गाढ़ी थी। चेहरा पिंधुचा था, श्वास बहुत धीमी थी, बदनपर पसीना नहीं था, और सब लच्छ-नोंसे मालूम होता था कि मिडियम दुनियेसे एक दम गाफिल था। मेरे पांवकी खटखटाहटसे वा बत्तीकी रौशनीसे उसकी नींद नहीं टूटी जब मैंने उसका हाथ पकड़के हिलाया और नाम लेकर पुकारा तब वह जागा और मुझे अपने पास देखकर घब राना। मैंने बहुत आदमियोंको असली नीदसे और बहुतसे को नकली नीदसे जागते देखा है। परन्तु मैं कह सक्ता हूं कि उस समय जिस नीदसे विलियम एड्डी जागा था, वह न तो असली नीद थी और न नकली—वह एकदम अचैतन्यसे चैतन्य होना था।

एड्डी साहबकी सर्कल कोठरीके चबूतरेपर जो अनेकानेक मनुष्योंके शरीर प्रगट होते हैं उनके विलियम एड्डीका रूपान्तर न होनेके सम्बन्धमें मैंने ऊपर जो कुछ कहा है, उससे पाठकोंको अवश्य ही मालूम होगया होगा, कि वास्तवमें उन मनुष्योंके शरीरसे और विलियम एड्डीसे कोई जाहिरा सम्बन्ध नहीं हो सक्ता है। अब इस बातके विषयमें कुछ आलोचना करेंगे कि ये सब किसी गुप्त अज्ञात शक्तिके द्वार चबूतरेपर प्रगठ की जाती हैं वा नहीं।

गुप्त अज्ञात शक्ति कई तरहकी हो सक्ती है। कल काँटेके जरिये, मन्त्र मसालेके जरिये, बिजली बारूदके जरिये वा चुम्बक चालाकीके जरिये उत्पन्न कर देना भी गुप्त अज्ञात शक्तिहीके द्वारा पैदा करना कहा जायगा। आजकल यूरोप और अमेरिकाके बड़े बड़े वैज्ञानिक लोग साधारण साधारण विषयोंकी ठीक परीक्षा करनेमें यन्त्रोंके अभावसे कृतकार्य्य नहीं होते हैं; यूरोप और अमेरिकाके समस्त धन बुद्धि विद्याके द्वारा भी एक मामूलीसे मामूली कीड़ेकी रचना नहीं हो सकी है। तिसपर भी इन अदने दिहाती किसानोंको, जिनके घरमें एक रत्तीकी कल नहीं; एक कौड़ीका मसाला नहीं, जिन्हे बातचीत करनेकी भी बुद्धि नहीं, उनका हवाके अदेख और अभेद पदार्थोंपर इतना अधिकार रखना कि समूचे मनुष्यका शरीर बातकी बातमें पैदा कर देवें, क्या कोई सम्भव कहेगा? सो भी केवल मनुष्यका शरीर ही नहीं, बल्कि उसे ऐसा बना देवें कि सब देखनेवाले उसे जीवधारी कहें? कोई महापुरुष कह सक्ते

हैं कि इस तरहके नकली मनुष्योंके शरीरमें एड्डी लोग सुनने; बोलने और देखनेकी शक्ति कैसे दे सक्ते हैं? जीवित आदमीकी तरह उन्हे टहला सक्ते हैं, फ़ोटो खिचवा सक्ते हैं, गीत गवा सक्ते है, बात कहला सक्ते हैं और घण्टोंतक गप्पशप्प करवा सक्ते हैं? और सबसे बढ़कर, उन्हे समझने बूझने, प्रश्नोत्तर करनेकी भी शक्ति दे सक्ते हैं? साफ जाहिर है कि विलियम और होरेशियो एड्डी ये सब काम हरगिज नहीं कर सक्ते हैं। इस लिये निश्चय जान लेना चाहिये कि चबूतरे परके मनुष्य किसी कलकांटे वा असाले मसालेके जरिये झटपट नहीं बनते हैं।

कोई कह सक्ता है कि विलियम एड्डी दर्शकोंके चित्त-पर मेसमेरिजम वा किसी अन्य विद्यासे ऐसी शक्ति फैला लेता है कि वे लोग अपने मित्रके पिता, वा माता वा परिवारकी मूर्त्ति चबूतरेपर देखते हैं। परन्तु गौर करनेका मुकाम है कि किसी आदमीके चित्तपर ऐसा विश्वास हो जानेसे वह जो शरीर देखेगा, वा समझेगा कि मैं देख रहा हूं, वह सचमुच कोई शरीर नहीं होगा—सिर्फ आंखके सामने भ्रम वश ऐसा मालूम होगा। तब हाथसे छूनेपर उन शरीरोंका स्पर्श क्यों होता है? फिर अगर मिडियम किसीके चित्तपर ऐसा असर कर देता है तो सब लोग एक ही शरीर क्यों देखते, एक ही बात क्यों सुनते और एक ही काम होते क्यों देखते हैं?

आप एक बात और कह सक्ते हैं। आप कह सक्ते हैं कि वे आकार केवल खयाली पदार्थ नहीं हैं, परन्तु थोड़े समय तकके लिये चलायमान शरीर, वास्तविक

आकार, मिडियमकी इच्छानुसार हवामें रहनेवाले पर-मात्मओंके द्वारा बन जाते हैं। अगर यही बात सच्ची है तो जरा इसका मतलब तो समझिये। अगर उन आकारोंके बारेमें आप वही युक्तिमानेंगे तो आपको यह भी मानना पड़ेगा कि उन आकारोंको जाहिर करनेके पहिले विलियम एड्डी दर्शकोंके मनकी बात जान लेता है; अपने मित्रादिकोंको जो सूरत दर्शकोंके चित्तपर अंकित है, उसे भी वह देख लेता है; तब उन मित्रोंका शरीर अपनी इच्छानुसार बनाकर उन्हे पुशाक, सूरत, तौर तरीका बातचीत सब कुछ वास्तविक मृत मित्रके अनुसार दे देता है। इतना ही नहीं; आपको यह भी स्वीकार करना होगा कि वह जाहिल किसान विलियम एडडी दुनिया भरकी भाषामें बोल चाल सक्ता है, सबके घर घरकी छिपी बातें जो बरसों पहिले हुई थीं, जान लैता है और उनका जिक्र करता है। और यह सब काम वह बिना ताम्मुल, हर एक सेकेण्डमें, बिना तयारी किये, कर सक्ता है। जो दर्शक सर्केल-कोठरीमें प्रवेश करनेके दो ही चार मिनट पहिले दूरके स्थानसे वहां पहुचते हैं उनके मनकी बात जाननेमें भी विलियम एड्डी अपनी शक्ति इसी प्रकार जाहिर कर सक्ता है। अगर आप इतनी बातें मान सक्ते हैं, तो अवश्य हीं आप रातको दिन भी समझ सक्ते हैं और कालेको सुफेद भी कह सक्ते हैं।

ऊपर जितनी बातें कह आये हैं उनका सारांश अब एक ही निकलता है। मिडियमका दूसरोंकी

सहायता लेना असम्भव बतला दिया गया ; मिडियम खद ही अनेक रूप धारन करता हो, सो बात भी झूठी ठहराई गई ; हवाके पदार्थों से उन शरीरोंका खुद बखुद बन जाना भी असत्य होगया ; दर्शकोंके मनकी बात जानकर मिडियम उन आकारोंको अपनी इच्छानुसार पैदा कर सके सो भी कोई नहीं मान सक्ता। तब एक ही बात बाकी रही। वे शरीर धारी व्यक्ति किसी अन्य संसारके निवासी हैं और मिडियममें कोई विशेष गुण रहनेके कारण उसके समाने प्रगट होते हैं। वे व्यक्ति कौन हैं ? कहां रहते हैं ?; सचमुच मरे लोगोंकी मुक्तात्मा हैं वा और कोई हैं, सो बात विद्वानोंकी खोज करनेकी है, उसकी सचाई वेही लोग बतावेंगे ; पर मैं समझता हूं कि उन व्यक्तियोंको किसी अन्य संसारका निवासी मान लेना ही होगा।

तीसरा अध्याय।

अन्यान्य घटनायें।

जिस रात मैंने पहिले पहिल विलियम एड्डीकी कारंवाई देखी, उसी रात विलियमके चबूतरे परकी कोठरीसे निकल आनेके बाद उसका भाई होरेशियोने अपना तमाशा दिखलाया। होरेशियो एड्डी चबूतरे परकी कोठरीमें नहीं गया, उसने अपना तमाशा बाहर किया। दखिनवारी दीवालसे कुछ हट कर एक डोरी

पूरबे पच्छिमें बाँध कर उसपर दो कपड़े लटका दिये गये जिससे वह दीवाल दर्शकोंके नजरसें छिप गई। ये दोनो कपड़े एक दूसरेसे सटे थे। इनमेंसे एक कुछ छोटा था इस लिये वह नीचे सितहसे करीब दो हाथ ऊपर उठा था। होरेशियो एड्डी इसी छोटे परदेके आगे कुरसीपर बैठा। उसके बगलमें एक मर्द दर्शक बैठाया गया और उस मर्दके बगलमें एक मेम साहब बैठीं। परदेके बाहर ये लोग ऐसे बैठे, और परदेके भीतर एक टेबल रख दिया गया। उस टेबलपर सितार, तानपूरा, बेयाला, हारमोनिअम, सजीरेकी तरह बोलने वाली लोहेकी तिकोन और कई तरहकी सात घण्टियाँ रखी गईं। जब सब कुछ ठीक हा गया तब विलियम एड्डीने होरेशियो एड्डो और उस मर्दके गलेमें लगा-कर एक दूसरा कपड़ा बाँध दिया जिससे उन दोनोकी देह गरदनसे नीचे एक दम छिप गई। इस तीसरे कपड़ेकी दोनों ओर परदेमें लगी थीं। होरेशियो एड्डीने इसके पहिले अपने दोनो हाथसे उस मर्दका एक हाथ थाम लिया था और उस मदने अपने दूसरे हाथसे उस मेमका हाथ थाम्ह लिया था। इसके अनन्तर बड़ी रौशनीका एक लम्फ उन सबके आगे ऊपर उठाके लटका दिया गया। तमाम घर बखूबी उजियाला हो गया।

परदेके भीतर अन्धकार नहीं था। छतसे परदा बहुत नीचे था इस लिये लम्फकी रौशनी उसके भीतर भी जाती थी। होरेशियोंके पीठके पासका परदा सितहसे अलग था, इस लिये आप लोग शायद अनु-

मान करेंगे कि वह उसी राहसे परदेके भीतर कुछ चालाकी कर देता था। परन्तु ऐसा समझना उचित नहीं। अगर वह ऐसा करता तो पहिले उसे अपना हाथ पांव हिलाना पड़ता जिससे उसके वदन परके तीसरे कपड़ेपर अवश्य ही कुछ हलचल जाहिर हो जाता। वा उसका सिर कुछ न कुछ डोल जाता। परन्तु मैं इस बातको वहां गौरसे देखरहा था, कभी जरा सा भी हलचल उसके चेहरे पर वा तीसरे कपड़ेपर नहीं पाया, दूसरी बात यह है कि वे घटनायें मिडि-यमसे इतनी दूरपर और इस तरहसे होती थीं कि उनका मिडियमके हाथ पाँवके जरिये होना असम्भव था। तीसरी बात यह है कि अगर होरोशियो एड्डी अपने हाथ पाँवके जरिये कुछ करना भी चाहता तो नहीं कर सक्ता क्योंकि उसके दोनो हाथ उसके पासके दूसरे आदमीके हाथसे सटे थे, अगर जरा भी उसके हाथसे अलग होते तो वह कह देता। इसके बाद जो बातें हुईं सो सुनिये। मुझे पूरा विश्वास है कि इनमें होरोशियो एड्डीको कुछ चालाकी वा छल नहीं था।

थोड़ी देरके बाद भीतरके टेबलपरकी चीजें हड़बड़ हड़बड़ करने लगीं; टेबलपर खटखट शब्द होने लगा। घण्टियां बजने लगीं, कई साज परदेके ऊपर नजर आने लगे; सितार छूड़पकर छतमें सट गया और वहीं खुदबखुद बजने लगा; फिर नीचे चक्रमें बैठे लोगोंकी कुरसीके नीचे, दीवालमें सटके मेमके बगलमें, मिडियमके बगलमें आकर बजने लगा। टेबल परके साज सब आपसमें योग्यमेल करके सुर तालके

हिसाबसे बजने लगे और कई आकार और रङ्गके हाथ परदेके बाहर नजर आये। कुछ देरके बाद होरेशि-योंके बगलवाला मर्द उठा दिया गया और एक औरत उसकी कुरसीपर बैठ गई। जब तीसरा कपड़ा उसके बदनपर भी ठीक कर दिया गया तब एक बहुत छोटा हाथ उसको देहमें लिपट गया, फिर मुहपर चला गया और अनेक प्रकारसे उस सेमका लाड़ प्यार करने लगा। जब अपनी मृत छोटी लड़कीको इसपर याद करके वह सेम रोने लगी तब उस छोटे हाथने उसका आंसू पोछ दिया। इस समय मैं सब दर्शकोंसे आगे बढ़ गया था इस लिये उस छोटे हाथपर आंसूका बुन्द साफ देखा। मिडियमका हाथ लम्बा, भूरा, हड्डीसे भरा, नसे निकली हुई हैं, परन्तु वह छोटा हाथ बहुत छोटा, सुफैद कोमल; मांसमय और मुलायम मालूम होता था। अगर मिडियम होरेशियो एड्डी कुछ चालाकी भी करना चाहता तो वह अपना हाथ ऐसा नहीं बना सक्ता। इसके बाद खटखटके द्वारा मुक्तात्माओंने लिखनेकी सामग्री मांगी। इस पर विलियम एड्डीने कलम दावात परदेतक पहुंचाया और कई रुक्तात्मा-ओंके हाथने परदेके बाहर निकलकर कलम थाम्हकर लोगोंका नाम मेरी पाकटबुकपर लिख दिया, जिनमेंसे कई मरे और कई जिन्दे थे, पर कोई भी होरेशियोंके परिचित नहीं थे।

विलियमके दूसरे दिनके चक्रमें सबसे पहिले हण्टो आई। इस दिन इसकी गौन घुटनेके नीचेतक नहीं थी, इस लिये मुझे साफ मालूम हो गया, कि जिन लोगोंने कहा था

कि कोई पुरुष गौन पहनकर घुठनेके बल झुकके अपना शरीर छोटा करके हबशोंकी शकल बनाता है वे साफ झूठे ठहर गये। हबशी कई तरहसे बहुत देरतक नाचके चली गई। तब एक कमसिन औरत गोदमें एक लड़का लिये जाहिर हुई। उसके जाहिर होनेसे दर्शक लोग एकाएकी पूछने लगे "यह किसका है। यह किसका है।" परन्तु वह औरत-मुक्तात्मा कुछ जवाब नहीं देती थी। किन्तु जब एक औरतने पीछेके बेञ्चपरसे पुकारके करुणा स्वरसे कहा "क्या यह मेरा बच्चा है?—यह मेरा चार्लीं है?" तब उसने उस लड़केको हाथपर उठाके आगे बढ़ाया। उस मांने तब अपने लड़केको पहचान लिया और "हाय बच्चा, हाय चार्लीं" कहती कहती रोने लगी। मेरे बगलमें एक यहूदिन जर्मनीदेशकी रहनेवाली बैठी थी। जब लड़केवाली मुक्तात्मा चली गई तब उसी यहूदिनकी १२ बरसकी लड़की चबूतरेपरकी कोठरीके दरवाजेपर जाहिर हुई। अपनी लड़कीको पहचानते ही खुशीसे भरके अपनी देश भाषामें कुछ बोल उठी और उसका उत्तर उस मुक्तात्माने खटखटके द्वारा दिया, पर जब यहूदिन मारे खुशी और शोकके बेहोश होना चाहती थी, तब वह मुक्तात्मा गायब होगई। इसके बाद और भी कई मुक्तात्मा सामने आईं। सब मिलाकर आज दस मुक्तात्मायें सदेह प्रगट हुईं।

इसके बिहान होकर शनिवारको सात काले इण्डियन और पांच अंगरेज मुक्तात्माके स्वरूप जाहिर हुए। दूसरा दिन रविवार था, इस लिये उस दिन चक्र

नहीं बैठा। सोमवारका समय अच्छा था, चार काले इण्डियन और चार अङ्गरेजोंकी मुक्तात्मा इस दिन प्रगट हुई। अपने दस्तरके मुताबिक हुगटो सबसे पहिले आई और बहुत देर तक नाचती रही, अन्तमें एक जगह खड़ी होकर दर्शकोंके साथ बैठे हो रेशियो एडडीको कुछ इशारा करने लगी पर वह कुछ समझ नहीं सका। तब वह लाचार होकर कोठरीके भीतर घुसजाना चाहती थी, कि इतनेहीमें कोठरीके भीतरसे बीबी एटनकी आवाज आई कि "हुगटो चुरुट मागती है।" मैंने तब अपने चुरुटमें तम्बाकू भरके आग लगाके होरेशियो एडडीके हाथमें दिया और उसने आगे बढ़के हुगटोके हाथमें दे दिया। हुगटोने उसे लेकर सबके सामने अपने मुहमें दबाया और जैसे कोई जिन्दा आदमी चुरुट पीता है वैसे ही वह पीने लगी और मोटकी मोट धुंआ फेकने लगी।

यहां पर दो बातें गौर करनेके लायक हैं। यह बात पहिले ही लिख चुके हैं कि चबूतरे परकी कोठरीमें विलियम एडडीको छोड़ कर और कोई दूसरा शखस मुक्तात्माओंके प्रगट होनेके समय नहीं रहने पाता है और न रह सक्ता है। इसका कारण यह है कि (च) दरवाजेको छोड़कर और कोई राह उसमें जानेकी नहीं है, पर इस राहसे मिडियमको छोड़कर और कोई आदमी वहां जाने नहीं पाता है। इससे साफ साबित होता है कि जिस समय हुगटोने चुरुट मागा था और न पानेके कारण वह भीतर चली जानेकी थी उस समय जो आवाज कोठरीके भीतरसे आई वह अगर मिडियम

होंकी आवाज मान ली जाय तो भी नो मिडियम और हराटो दो आदमी ठहरे। सो जो लोग कहते हैं कि विलियम एड्डी ही हराटोकी शकल बन जाता है, उन्हें समझना चाहिये कि एक विलियम कोठरीके बाहर हराटोकी शकल और कोठरीके भीतर बीबी एटनकी बोली एक ही समय नहीं दिखा और सुना सक्ता है। यह हराटोकी शकल तब कौन है और कैसे चबूतरेपर आई सो सब निश्चय करनेको मैंने पहिलेहीसे विद्वानोंको प्रार्थना कर रक्खी है।

इसके दूसरे दिनके चक्रमें १७ मुक्तात्मायें आईं; इस दिन बीबी एटनकी आवाजने मेरी दहिनी ओर बैठे प्रिचार साहबको चबूतरेपर कुरसीपर बैठ गये तब उनके दो स्वत भाञ्जे विलियम पैकार्ड और चेष्टर पैकार्ड एकाएकी बाहर आये और उनसे हाथ मिलाकर चले गये। विलियमने अपना बायाँ हाथ अपने मामेकी गरदनपर रख दिया।

चौथा अध्याय।

अन्धियाला चक्र।

विलियम एड्डीके चबूतरेपरकी कोठरीसे निकल आनेपर चबूतरेके नीचे बैठकर होरेशियो एड्डीने एक अन्धियाला चक्र दिखलाया। इस चक्रके बैठनेके पहिले घरकी सब खिड़कीयां बन्द कर दी गईं और उनके जरिये रौशनी आनेकी राह एक दम बन्द कर देनेके लिये उनपर कपड़े लटका दिये गये। बाजोंके साथ टेबल जङ्गलेके नीचे बीचोबीच कोठरीमें लाया गया और उस टेबलकी दहिनी ओर एक कुरसीपर होरेशियो एड्डी दर्शकोंकी ओर मुह करके बैठा। मिडियमके हाथ उसके पीछे कुरसीके कठरेमें लगाकर बांध दिये गये। इसके बाद दर्शक लोग एक दूसरेका हाथ पकड़के बैठे और रौशनी एक दम बुझा दी गई। घरका दरवाजा बन्द कर दिया गया घरके इस प्रकार अन्धियाला, मिडियमके बवश और दर्शकोंके आपसमें आबद्ध हो जानेपर मुक्तात्मायें आने लगीं।

सबसे पहिले जहाजी जौर्ज डिक्सकी मुक्तात्मा आई और तब मेम्रावर नामकी एक औरतकी मुक्तात्मा पहुंची। इनका आना इनकी आवाजसे मालूम हुआ। डिक्सने बयान किया कि मैं धूआंकस "प्रेसिडेण्ट" के समुद्रमें टट जानेसे डूब गया था। मेम्रावरने कहा कि मेरी मृत्यु एक सौ वर्ष पहिले हुई थी, मैं इटैली देशके

निवासी एक भले आदमीकी लड़की थी, वह अमेरिकामें आ बसे थ, पर उस समय काली इण्डियन जातिसे लड़ाई बहुत होती थी, उसी एक लड़ाईमें मेरे पिता मारे गये और मैं कैदी हो गई। उसी कैद अवस्थामें मेरी मृत्यु हुई, पर मृत्युका कारण ज्वर था। जौर्ज डिक्स मर्दसूरत ताकतवर मुक्तात्मा है और उसकी ठर्री बोलीहीसे उसकी कूवत जाहिर होती है, पर वह बड़ा कुदक्कड़, फुरतीला और एक तरहका हरफन मौला है। गाना, बजाना, नाचना, सीटी बजाना, भारी चीजोंको उठा लेना इत्यादि काममें वह अपनेको बड़ा मुस्तैद दिख लाता है। भले आदमियोंके साथ यह भलमनसाहत-हीसे पेश आता है, पर शैतानोंके लिये तो यह गोया आफत हो जाता है। एक बार इसने एक धूर्त्तराज डाक्तर साहबके सिरपर मजबूत सितारकी डांड़ी तोड़ी थी, तबसे डाक्तर साहबकी नानी मरे कि फिर उसके पास जायं। मेम्नावरके साथ आश्चर्य्यकी बात यह है, कि यद्यपि वह अपनी मृत्युका समय सौ वर्ष पीछे बतलाती है तो भी जब कभी वह जाहिर होती है तब चौदही बरसकी जवान छोकड़ीकी सूरतमें। पर स्वभावकी मेम्नावर बहुत भोली और दयालु मालूम होती है। कई तरहका बाजा बजानेमें योग्यियार है और गीत गाने और बनानेमें भी अपनेको पण्डिता समझती है।

मैं यह बात दरियाफ्त करना हरगिज नहीं चाहता हूं कि जौर्ज डिक्स वा मेम्नावरका नाम वास्तवमें यही है और उनकी मृत्युकी बातें सही हैं वा नहीं; मुझे सिर्फ

इतनी ही बातसे मतलब है कि जिन शरीरोंको मैं देखता हूं और जो अपनेको जोर्ज डिक्स और मेह्मा-वरकी मुक्तात्मा बतलाती हैं वे सचमुच मुक्तात्मा हैं वा क्या हैं? केवल इतनी ही बात निश्चय होजानेसे मेरा इतना परिश्रम सफल हो जायगा।

सब लोगोंके स्थानानुसार बैठ जाने, सब कुछ ठीक हो जाने और चिराग बुझ जानेपर मुक्तात्मा लोग अपना काम करने लगी। एकायक मालूम हुआ कि आठ दस आदमी घरमें कूदने, चिल्लाने, ढोल बजाने, अनेक तर-हकी बोली बोलने और नाचने लगे; शङ्ख भेरी बजने लगे, बड़े बड़े घराटे बजने लगे और शीघ्र ही जमीनपर गिरने लगे। गरज इस तरहका हरदम्मुश धूमधामका नाच होने लगा कि साफ मालूम हुआ कि अगर मिडि-यम बन्धा नहीं रहता—स्वतन्त्र होता और उसके साथ चक्रमें बैठे और सब लोग भी शरीक हो जाते तो भी ऐसी धूम नहीं हो सक्ती। यद्यपि कोठरी अन्धियाली थी तो भी उस नाचमें इतने लोग शरीक थे और वे इतने बेगसे घूमते थे, कि उनके घूमनेका क्रम साफ नजर आता था। इस नाचके समाप्त होजानेपर दो तीन मिनटतक घर सन्नाट रहा, उसके बाद दो आदमियोंमें लड़ाई होने लगी, तलवारका भिड़ना, खट खट शब्द होना, हूंहूंके साथ मनूसूबा करना साफ सुन पड़ता था। लड़ाई होते होते एक आदमीके सख्त घायल होकर कहंरनेकी आवाज आई, फिर उसके जमीनपर गिर जानेका धमाका भी सुन पड़ा। मालम हुआ वह आदमी मेरे ही पैरपर गिर पड़ा है। झट दिया

सलाईसे बत्ती जलाई गई। देखें तो न लाश है और न विजयी शत्रु। टेबलपरके बाजे इधर उधर छीटे थे, टेवल भी उलटा हुआ था और उनके साथ लड़नेवालोंको तलवारें भी मिलीं, पर मिडियम ज्योंका त्यों बंधा हुआ कुरसीपर वेहोश बैठा हुआ पाया गया।

इस समय मिडियमने, वा जिस मुक्तात्माके अधिकारमें वह था उसने, मुझसे कहा कि आप इन घटनाओंकी सचाई जानलेनेके लिये जो कुछ करना चाहें सो करें। तदनुसार मैं मेरे साथ बैठे जोर्ज निकल्स सौदागरको मिडियमकी गोदमें बैठाकर खुद कुरसी लिये मिडियमके दोनों पैरोंकी उंगलियोंको अपने पैरकी उंगलियोंसे दबाकर और निकल्स साहबके दोनो हाथ अपने हाथमें रखकर बैठ गया। ऐसा करनेसे अगर मिडियम जरा भी हिलता तो निकल्स साहब और मैं दोनो जान जाते ; अगर निकल्स साहब वा मैं ही जरा सा हिलता तो शेष दोनो आदमी जानजाते। जब यह प्रबन्ध ठीक हो गया तब फिर चिराग बुझा देनेकी आज्ञा दी गई। अन्धेरा हो जानेसे सर्द पर मजबूरी हाथने मेरे चेहरे और सिरपर थप थप किया था, मेरे पैर और पीठपर चपत जमाया गया। निकल्स साहबने भी ऐसाही मालूम किया। किसीने मेरे गालका चुम्मा ले लिया और किसीने अपने दोनो बड़े२ हाथोंसे मेरी बगलमें गुदगुदी लगाई। हम लोगोंकी चारों ओर कई तरहके बाजे बजने लगे। इस समय सब दर्शक चक्रहीमें बैठे थे क्योंकि वे लोग हाथाबांही किये हुए थे मुक्तात्माओंने एकत्र होकर एक बहुत बढ़िया गीत

गाया; मालूम हुआ कि इन सबोंने किसी एक ही ओस्तादके साथ मश्शाकी की थी। इसके बाद फिर रोशनी लाई गई। हम लोग अपनी अपनी जगहपर चले आये। इस परीक्षित घटनासे साफ मालूम हुआ कि अन्धेरीमें भी मिडयम कोई करामत नहीं करता है, किसी अज्ञात शक्तिहीके द्वारा सब आश्चर्य्य घटनायें होती हैं।

पाचवां अध्याय।

कई तरहकी परीक्षा।

मुक्तात्माओंकी परीक्षा करनेमें मुझे एक बड़ा भारी असुविधा था—मैं चवूतरेके पास वा चवूतरेके ऊपर प्रिचार्ड साहबकी तरह बैठने नहीं पाता था। इसका कारण पूछनेपर उन लोगोंने कहा कि चक्रमें बैठनेवाले वा चवतेरके पास वा ऊपर बैठनेवाले लोगोंका चित्त जब तक अपना कर्तृत्व न भूलेगा तब तक कोई मुक्तात्मा न तो आ सकती है और न प्रगट हो सकती है। अर्थात् जब तक चवूतरे पर वाले आदमीका मन किसी अन्य विषयपर बहुत दृढ़तासे आवद्ध रहेगा तबतक उसके पास मुक्तात्मा नहीं आवेगी। खास खास विषयोंपर मेरा चित्त इतना दृढ़ कहा गया और उसपर इतना आबद्ध समझा गया कि मेरे साथ मुक्तात्माओंका प्रगट होना असम्भव कहा गया। इस कारण मैंने चव-

तरेपरकी मुक्तात्माओंकी परीक्षाके लिये जितना यत्न किया प्रायः सबमें दूसरोंहीकी सहायता लेनी पड़ी।

पाठकोंने देखा होगा कि अङ्गरेज लोग और आजकल बहुतसे बड़े बड़े देशी भी नौकरोंको बुलानेके लिये अपने सामने एक घण्टी रखते हैं। अलगसे देखनेसे वह घण्टी उलटी हुई कटोरीकी तरह मालूम होती है और उसपर एक खूंटी निकली रहती है। इस खूंटीपर जरा सा हाथ रखनेसे कटोरी जोरसे टन टन टन बोलने लगती है और बाहरसे नौकर उसे सुनकर भीतर चला जाता है। मैंने मुक्तात्माओंकी एक तरहकी परीक्षाके लिये एक ऐसी ही घण्टी मगा ली और उसे जंगलेपर रख दिया। हण्टीकी मुक्तात्मा जब आई तब उसे कहा कि तुम इस बहारके साथ इस घण्टीकी खूंटीपर पांव देके खड़ी हो जावो कि घण्टी बोलने न पावे। पहिले तो हण्टी कुछ देर तक उसे आश्चर्यके साथ देखती रही पीछे धीरे धीरे उसपर खड़ी हो गई। मैंने तब उससे कहा कि उस खूण्टी पर इस हिसाबसे कूद जाओ कि घण्टी एक ही बार बोले, उसने वैसा ही किया। तब कहा कि दो बार कूदो, उसने फिर भी वैसा ही किया। दूसरे दिन मैंने खुद आजमा कर देखा कि धीरे धीरे जोर देनेसे मैं भी उस खूण्टी पर खड़ा हो सक्ता था; परन्तु मैं एक बार दो बार उसे शर्त्तिया नहीं बजा सक्ता था।

हण्टीकी दूसरी परीक्षा मैंने तौल करके की। रेलके ष्टेशनोंपर मुसाफिरोंकी गठरी तौलनेके लिये एक लोहेकी कल रहती है, उसे पाठकोंने देखा होगा। यह

कल एक तरहका लोहेका चबूतरा होता है जिसके एक किनारेके बोचमें एक लोहेका खम्भा रहता है। इसी खम्भेसे चबूतरेके बाहर एक लकड़ीसी लगी रहती है, इसी लकड़ीपर बटखरा रखनेकी जगह रहती है और सेर छटांक जाननेका नम्बर रहता है। जब माल चबूतरेपर रखा जाता है, तब उस लकड़ीके जरिये तौल हो जाता है। मैंने भी एक ऐसी ही कल मगाली और चबूतरेपर रखके प्रिचार्ड साहबको तौलनेकी हिकमत सिखला दी। जब हयटी सामने जाहिर हुई तब वह चबूतरेपर कल देखकर घबड़ानी, पीछे जब मैंने उसे चबूतरेपर जानेको कहा और अपना तौल देनेको कहा तब वह मुसकराती ऊपर चली गई। यद्यपि सूरत देखनेसे वह करीब १४० पौण्ड (१मन ३०सेर) की मालूम होती थी, तथापि इस कल पर वह केवल ८८ पौण्ड (१मन ४ सेर) की हुई। तब मैंने उसे कहा कि तुम अपना भार घटालेओ, इसके बाद तौलनेसे वह सिर्फ ५८ पौण्ड (२९सेर) की हो गई। फिर तौलनेसे वह ६५ पौण्ड (साढ़े ३२ सेर) की पाई गई। इतना कम वेश भार करना इन्सानके इखतियारसे बाहर है।

मुक्तात्माओंके बदनमें कितनी ताकत होती है, उसकी परीक्षा करनेको भी मैंने कोशिशकी। इसके लिये भी मैंने एक कल मगवाई। इसकलका नाम स्प्रिङ्ग बैलेन्स है। यह कल बहुतही छोटी, एक बालिश्तकी होती है। इसकी एक तरफ एक रिङ्ग (अङ्गूठी) रहती है और दूसरी तरफ एक अंकुसी रहती है।

रिङ्गके जरिये यह खम्भे में वा मकानके छतमें लटकाई जाती है और तौले जानेकी चीज अंकुसीमें बांधी जाती है। चीजका वजन बतलानेके लिये कलके ऊपर एक सूई और नम्बर रहता है। मैंने इस कलको रिङ्गके जरिये जंगलेमें बांध दिया और जब होरेशियो एड्डीके उजियाले चक्रमें परदेके बाहर एक हाथ निकला तब मैंने उसे वह अंकुसी पकड़के खीचने कहा। उस हाथने जब अंकुसी खींचली तब कलकी सूई ४० पौण्डके नम्बर पर आगई। आज यह कल और खींचनेवाला हाथ जमीनसे समानन्तर थे, इस लिये मैंने दूसरे दिन उसे ऊपरसे ठीक नीचे खींचनेको कहा, तब जौर्ज डिक्सके हाथने उसे ५० पौण्ड तक खीच लिया मालूम हुआ कि अगर उस कलके जरिये और खींचनेकी जगह होती तो डिक्स और भी खींचता।

इन परीक्षाओंके अलावे मैंने एड्डी साहबके चबूतरे परकी मुक्तात्माओंकी और भी कई तरहसे परीक्षाकी। कहना नहीं होगा; सबहीमें उन लोगोंको मैंने पक्का पाया, सबहीमें उनकी अमानुस शक्तिके लच्छन मिले। यदि एड्डी साहब दोनों भाई कुछ पढ़े लिखे मिलनसार सभ्य होते तो मैं उन मुक्तात्माओंकी और भी उचित परीक्षा कर सक्ता, परन्तु वे जाहिल, बेमेल दिहाती किसान थे और न मालूक क्यों मुझसे कुछ अधिक अलग रहा चाहते थे। अगर कोई धोखेबाज तमाशावाला होता तो वह अवश्यही मुझसे हेलमेल करनेकी कोशिश करता, परन्तु विलियम और होरेशियो एड्डीने अनेक परीक्षकोंकी दुर्नीति ज़िद

और अविचारके कारण उन लोगोंको इतना कष्ट सहना पड़ा है कि वे परीक्षक साहबोंसे नफरत करते हैं। अगर अन्यायी परीक्षक लोग मिथ्याभाषण और दुष्टाचार पहिले होट्ट चिखडेनमें न किये होते तो मेरी की हुई परीक्षायें कुछ और अच्छी और खुलासा होतीं। उन लोगोंकी करतूतसे मैं जबतक रहा तब तक मेरे साथ ऐसा ही सुलूक रहा कि जिससे मुझे सदा भय था कि न जाने किस समय मैं निकलवा दिया जाऊंगा।

छठवां अध्याय।

होलमिज मिडियम।

मेरी इच्छा पहिले इतनी थी कि एड्डी लोगोंकी मिडियमगरीकी सचाई जाचलूं; और सब मिडियमोंकी परीक्षा करनेका भार अपने ऊपर उठा लेना और परिचकोंमें नाम लिखवाना मेरी राय कभी नहीं थी; परन्तु यूनाइटेडष्टेटसके विख्यात नगर-प्रधान फिलेडेल-फियामें रहनेवाले नेलसन होलमिज और उनकी स्त्रीकी मिडयमगरीके विषयमें जब अनेक प्रकारके समाचार छपने लगे तब सैकड़ों आदमियोंने मेरे यहां चिट्ठी लिखी और उन दोनोंकी मिडियमगरीकी परीक्षा करनेकी प्रार्थना की। आखिरमें लाचर होकर मुझे उन लोगोंके यहां लिखना पड़ा और ताः २८वीं दिसम्बर सन१८७४ ई० को बीबी होलमीजने मुझे निमन्त्रण भेजा और यह निमन्त्रण स्वीकार करके मैं ता ५वीं

जनवरीसन ७५ को फिलेडेलफियामें पहुंचा और परीक्षा करनेको मुस्तैद हुआ। इसी दिन इन मिडियमोंके सम्बन्धमें एक बड़ा भारी कागज जाहिर किया गया।

होलमिज साहबके चक्रमें सन१८७४के मई महीनेमें एक रात केटी किङ्ग और उसका पिता जोन किङ्गकी मुक्तात्मा सदेह प्रगट हुई थीं। इन चक्रोंमें डाक्तर हनेरी डी० चाइल्ड, मिष्टर डी० ओवेन और जेनरल लिप्पिट भी थे। इन लोगोंने उन चक्रोंका बिलकुल हाल छपवा दिया था। मिष्टर ओवेन और डाक्तर चाइल्डने बड़े जोर शोरसे होलमिज साहबकी मिडियमगरी और केटी किङ्ग तथा जोन किङ्गकी सदेह मुक्तात्माओंकी सचाई पर अपना विश्वास दिखलाया था, यहाँ तक कि डाक्तर चाइल्डने इसी विषयपर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की थी। परन्तु जेनरल लिप्पिटने केवल घटनाओंका उल्लेख किया था—उनमें अपना विश्वास नहीं जाहिर किया था। इन सब कागजोंको पढ़के साधारण लोगोंमें बहुत आदमियोंने उन सब घटनाओंमें और होलमीज साहबकी मिडियमगरीमें विश्वास करना शुरू किया था। परन्तु थोड़ेही दिन बाद फिलेडेलफियाके अनेक समाचार पत्रोंने अनेक तरहकी खबरें जाहिर की और लिखा कि न तो केटी किङ्ग कोई मुक्तात्मा है और न होलमीज और उसकी स्त्री मिडियम हैं। इन बातोंके जाहिर होनेसे सर्व्व साधारणमें बड़ा वादानुवाद आरम्भ हुआ था और इसी कारण मुझे यह परीक्षा करनेके लिये फिलेडेलफिया आना पड़ा था।

जिस दिन मैं फिलेडेलफियामें पहुंचा उसी दिन मिष्टर ओवेन और डाक्तर चाइल्डने भी होलमीजोंकी मिडियमगरीमें अविश्वास जाहिर करनेके लिये चिटठी छपवाई।

एक औरतने डाक्तर चाइल्डसे और अन्यान्य कई प्रतिष्ठित लोगोंसे कहा था कि मैं ही केटी किङ्की सकल बनकर सदेह मुक्तात्माकी नकल करती थी। शायद इस औरतकी सूरत और केटी किङ्की मुक्तात्माकी सूरत कुछ कुछ मिलती भी थी। इस औरतको देखनेकी मैंने बड़ी कोशिश की, परन्तु वह मुझसे सदा छिपती ही रही। इसीके कहनेसे उन लोगोने होलमीजोंकी मिडियमगरीमें अविश्वास जाहिर किया था। मैंने उस औरतकी खोज करके पक्का प्रमाण पाया कि वह लड़कपनहीसे बदचलन, बदकार, झूठी, फरेबी और शैतान थी। ऐसी औरतकी बातोंपर विश्वास करके अपनी पहिली पक्की बातोंको खुद बखुद झूठी ठहरानेवाले ओवेन सहाब और डाक्तर चाइल्ड की बातों पर भी मुझे विश्वास नहीं हुआ। मैं होलमीजोंकी मिडियमगरीकी परीक्षा स्वयं करनेको प्रस्तुत हुआ।

फिलेडेलफियामें पहुंचनेके साथ ही मैने इन मिडियमोंसे बातचीत करनेवाले कई आदमियोंसे मुलाकात करके एक होटलमें डेरा दिया। इसी होटलमें मैडेम ब्लेवेटस्की * भी रहती थीं। इनसे मुझे पहिली मुला-

* मैडेम ब्लेवेटस्कीका नाम पाठक सुन चुके होंगे। ऊपर लिखे हुए अवसरपर कर्नल औलकटसे मुलाकात होनेके बाद इन दोनोंमें अच्छी मित्रता हो गई। दोनोंने मिलकर पीछे हिन्दुस्थानमें थियोसोफिकल सोसायटीका निर्माण किया। मैडेम ब्लेवेटस्की सन १८९१ सालमें परलोकगामिनी हुईं।

कात चिट्टेण्डेनमें हुई और एड्डीकी मुक्तात्माओंकी परीक्षा करनेमें इन्होंने मुझे बड़ी सहायता दी थी। उसी समयसे मुझे इनपर बड़ी श्रद्धा होगई थी। यहां भी मुझे उनसे बड़ी सहायता मिली।

जिसी दिन मैं पहुंचा उसी दिन एक मुक्तात्मा मेरे पास खटखटाने लगी, पूछनेपर उसने अपना नाम जौन किङ्ग बतलाया। मैंने देखा कि जिस जौन किङ्ग और केटी किङ्गकी नकली बात चाइल्ड साहबने लिखी थी वही जौनकिङ्ग तो खट खट करने लगा। कई तरहकी बातें कहकर जौन किङ्ग होलमीजके विषयमें बातें कहने लगा। उसने मुझे कहा कि वे सच्चे मिडियम हैं, उनके फलाने फलाने दुश्मनोंने उनके खिलाफ मेल करके इतना रुपया जमा किया, फलानेके पास रुपया रखा गया, फलानेने वह रुपया फलाने फलाने आदमियोंको बांटा और फलानी फलानी तरहसे अपनेको केटी किङ्ग कहनेवाली औरतने झूठी बात जाहिर की इत्यादि इत्यादि। कहना नहीं होगा मैंने पीछे खोजकरके इन सब बातोंको ठीक पाया। अगर मैं कुछ और खोज करता तो उन बातोंकी कागजी सुबूत भी मुझे मिलतीं। उस समय जौनकिङ्गकी परीक्षा करनेके लिये मैंने उससे कहा कि जिस औरतने अपनेको केटी किङ्गका रूप बनानेवाली जाहिर किया है उसकी एक चिट्ठी मेरे पाकटबुकमें बन्द है। उस चिट्ठीकी एक ठीक नकल अगर तुम मुझे दे सको तो मैं तुम्हे सच्चा जानूं। मैंने इतना कह कर उस पाकट बुकको बड़ी हिफाजतसे रख छोड़ा, पर

दूसरे दिन जौन किङ्गने उसकी बहुत अच्छी नकल मुझे दी।

जिस समय मैं फिलेडेलफियामें पहुंचा था उस समय वह बीबी भी उसीके साथ थी, इस लिये मुझे बाहरी बातोंकी खोजमें दिन काटना पड़ा। ता० ११वीं जनवरीको बीबी होलमीज पहुची। उसी दिन मैंने उसके घरके चक्रमें बैठकर उसकी मिडियमगरीका तामाशा देखा। इस दिन मैंने कुछ परीक्षा नहीं की, सिर्फ यही देखता रहा कि यह किस तरहसे काम करती है।

होलमीज लोगोंकी लाई हुई मुक्तात्मा भी काठकी कोठरीमें जाहिर होती हैं, पर इस कोठरीसे और एक स्त्रीके चबूतरे परकी कोठरीसे बहुत फ़र्क है। होलमीजकी कोठरी चबूतरेपर नहीं रहती; पंचकोने, बेपेंदीके बक्सकी तरह घरके एक कोनेमें यह कोठरी पड़ी रहती है। कोठरीकी शकल इस तरहकी है—
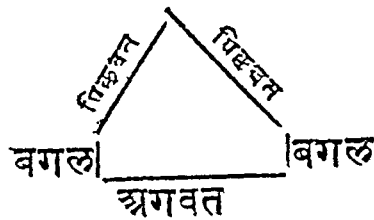
दोनो पिछवत बराबर तखतोंके बने थे, इनमें कोई खिड़की नहीं थी। परन्तु दोनो बगलोंमें एक एक खिड़की जमीनसे बहुत ऊंचे पर थी। जैसे रेलगाड़ीकी खिड़कियां नीचेका तखता उठादेनेसे बन्द हो जाती हैं वैसे ही ये खिड़कियां भी बन्द होती थीं। अगवतके बीचमें जमीनसे बहुत नजदीक, पर छत्तसे बहुत दूर, एक कीवाड़ था जिस होकर मीडियम भीतर

घरोमें जाती थी। इस कोवाड़की दोनो तरफ जमीनसे बहुत ऊचेंपर एक एक त्रिकोणकी तरह खिड़कियां थीं। इन खिड़कियोंपर भीतर कोठरीमें काले परदे लगे हुए थे। मिडियम बीबी होलमीज कोवाड़ खोल कर भीतर चली गई और किल्लीबन्द करके भीतर रखी हुई कुरसीपर बैठ गई। बाहर किसीने बाजा बजाना शुरू किया। इस पर अगवतकी एक खिड़कीका परदा हंटा और उसमें होकर एक सिर नजर आया। यह सिर बड़ाही भयावना था। काली काली दाढ़ी और मूंछके साथ चेहरेका नीचा हिस्सा समूचा साकार था, परन्तु एक दम मृत्युकी तरह पीला था। कपाल पेशानी भौं, नाक भी साकार मालूम होते थे; पर आंखका पता नहीं था—मालूम होता था कि किसीने मोमका चेहरा बनाकर गर्म लोहेके जरिये आंख गला दिया हो। यह सिर दर्शकोंकी ओर देखतासा मालूम हुआ और हवामें इधर उधर घूमता था। वह चेहरा ऐसा भयावना था कि बड़े बड़े साहसीका कलेजा दहल जाय, पर मैं उठकर उस सिरके पास चला गया, खिड़की पर कुहनी अड़ा कर उस सिरसे कुल एक बालिश्तके फासलेपर आंख लेजाकरके मैं उसे टक टक देखने लगा। उससे तब मैंने पूछा "खूबसूरत ज्वानतो तुम अलबत्ते हो, पर क्या इस चेहरे पर कोई शौकीन औरत आशिक हो सक्ती है?" सिर बाईं ओरसे दहिनी ओर हिला—गोया उसने कहा "नहीं" इस प्रकार मैंने कई प्रश्न किये, सबका उत्तर उसने सिर नीचे ऊपर (हां) वा बायें

दहिने (न) हिलाकर जवाब दिया। परन्तु मैं आजकी घटनाओंपर विश्वास नहीं करता था क्योंकि मैंने परीक्षा-करनेकी कोई युक्ति नहीं लगाई थी। अजब क्या था कि कोमहीका मुखड़ा हाथमें लेकर मिडियम भीतरसे लटका रही हो?

दूसरे दिन सवेरे ही मैं होलमीज साहबके मकानपर गया और उस काठकी कोठरीको अपने हाथसे घंसका कर एक ऐसी दीवारमें लगाकर खड़ा कर दिया कि जिसमें कोई खिड़की नहीं थी, खिड़कीवाली दोनो बगलोंमें मैंने नीचेसे ऊपर तक जालीलेट अपने मुहरके जरिये चपरेसे लगा दिया जिससे वे खिड़कियाँ बेकार हो गईं। फिर मिस्त्रीका औजार लेकर कोठरीके भीतर चला गया और प्रत्येक काँटी, परेगी पेंच और जोड़ मिलावकी परीक्षा करके निश्चय कर लिया कि बाहर भीतर आनेकी और कोई राह नहीं है। मिडियम जब कोठरीके भीतर जाने लगी तब मैंने उसे गरदन तक एक जाली थैलीमें बन्द कर दिया जैसे सुरती खनेका बटुआ बन्द हो जाता है, वैसेही गरदनके पासकी डोरी खींच लेनेसे वह थैली बन्दहो गई। इस डोरीको कसकर बांधके मैंने उस गांठपर चपरा देके अपना मुहर कर दिया। इस थैलीमें बन्द हो जानेसे मिडियम अपने आप पांवसे कोई नकली मुखड़ा नहीं थाम्ह सकती थी और न कोई दूसरा ही काम कर सक्ती थी। कोठरीमेंकी कुरसी भी मैंने बाहर निकाल ली और मिडियमको खड़ीहा रहनेकी आज्ञा दी। . . . .

बीबी होलमीज जब भीतर चली गई तब मैंने बाहरसे किवाड़ बन्द कर दिया, उसी समय किसीने भीतरसे किल्ली ठोक दी। याद रखना चाहिये कि मिडियमका हाथ थैलीके भीतर बन्द था। इसके तीन मिनटके अन्दर एक सुफेद हाथ अगवतकी एक खिड़कीके सामने निकला। बीबी होलमीजकी ऊंगलियोंमें अनेक अङ्गूठी थीं, पर यह हाथ खाली था। मिडियमके हाथसे यह हाथ और बातोंमें भी भिन्न मालूम होता था। इस हाथके गायब हो जानेपर एक चेहरा नजर आया। यह चहेरा कलहीके चेहरेकी तरह इधर उधर हवामें हिलता था, परन्तु यह कलके चेहरेसे भी बड़ा भयङ्कर था। इसको देखनेसे थोड़ीही देरमें तबीयत खराब हो जाती थी। मालूम होता था कि किसीने इस सिरको जमीनमें गाड़ दिया था, कीड़ोंने उसे आधा चाट लिया था और तब खिड़कीके पास लटकाया गया था। सिवाय छोटी और कोतह पेशानीके और कोई अङ्ग पूरे पूरे साकार नहीं हुआ था। आंखके न रहनेसे सिर्फ आखका छेद तो भयावना था ही, तिसपर लाल सिन्दूरकेसे लब और भी चेहरेको भयावना बनाये थे। मैं इस चेहरेके पास भी गया और कलकी तरह बात चीत करके जान लिया कि यह छोकड़ी केटी किङ्गका चेहरा था।

उसके विहान होकर मैं सुबही बीबी होलमीजके पास गया और चक्र बैठाया, कई बार मैंने उन लोगोंको विला आगाह किये झटपट चक्रमें बैठजानेको कहा। परन्तु इन सब अवसरोंपर मैं उस काठकी कोठरीकी खिड़कीके सामने आश्चर्य्य आश्चर्य्य घटना देखता रहा।

एक बार जौन किङ्गकी मुक्तात्माने मेरी अङ्गठी माँगली। मिडियम जब कोठरीसे निकल आई तब मैंने उसमें बहुत खोजा, पर उस अङ्गठीका पता नहीं मिला। मिडियमके पास भी अङ्गठी नहीं थी। परन्तु जब मैं अपने होटलमें आया तब अपने बिछावनपर तकियेके नीचे वही अङ्गठी पाई। एक बार जब मैंने मिडियमको सब तरहसे धोखेबाजी करनेके अयोग्य करके भीतर जाने दिया, तब मैडेम ब्लैवेटस्कीने अपनी एक अपूर्व्व शक्ति*के द्वारा उसे मृतकके समान बेहोश कर दिया। ऐसी अवस्थामें वह बराबर रही और चक्र टूटनेके बाद भी वह बड़ी मुश्किलसे होशमें लाई गई। साफ जाहिर है कि उस समय मिडियम न कुछ कर सक्ती थी और न कुछ जान सक्ती थी। परन्तु तौभी किवाड़ बन्द होनेके साथही खिड़कीके पास एक हाथ निकला, धीरे धीरे हाथ बाहर आने लगा, पीछे वह इतना लम्बा हो गया कि आगे बढ़कर घरके बीचमें रखे हुए टेबलपरसे एक घण्टी उठाकर बजाता हुआ भीतर ले गया और तब घण्टीके साथ गायब हो गया। इसके बाद शीघ्र ही कोठरीकी किल्ली खटसे खुली, कीवाड़ धीरे धीरे खुलने लगा और एक बड़ी हसीन जवान औरत सामने आगई। यह कौन थी सो मैं नहीं कह सक्ता हूं, पर इतना कह सक्ता हूं कि बीबी होलमीज इससे लम्बी, मोटी और कुरूपा थी। ज्योंही यह बाहर खड़ी हुई कि मैडेम ब्लैवेटस्कीकी जबानसे न जाने कौन एक शब्द निकला। उसे सुनते

* शायद मेस्मेराइज कर दिया।

ही वह वोंही धीरे धीरे लौट गई। मैं उस समय उस कीवाड़के बहुत ही नजदीक बैठा था।

मैंने बीबी होलमीज और उसके स्वामीको अपने डेरेमें बोलाकर कपड़ेकी कोठरी बनाके चक्र बैठवाया, परन्तु यहां भी वैसी ही आश्चर्य जनक घटनायें देखी गईं। मैंने इन सबको देख भालकर निश्चय किया कि—

(१) किसी औरतकी सहायतासे होलमीजोंने लोगोंको धोखा देनेका यत्न किसी समयमें किया था वा नहीं सो निश्चय नहीं कहा जा सक्ता है, परन्तु इतना कहा जा सक्ता है, कि जेनरल लिप्पिटने जिन घटनाओंका उल्लख किया था उतना काम होलमीजोंकी मिडियम गरीमें निश्चल हो सक्ता है।

और (२) मिष्टर होलमीज और उसकी बीबीकी मिडियमगरीमें बहुत कुछ सत्यता है।

सातवां अध्याय।

कौमटन मिडियम।

जब मैं फिलेडेलफिया शहरमें होलमीजोंकी मिडियमगरीकी परीक्षा कर रहा था तब एक बार जौन किङ्गकी मुक्तात्माने मुझसे कहा था कि अगर आप न्यूयोर्क स्टेटके स्कोलर जिलेके हवेन्ना गांवमें जायं तो अध्यात्म विज्ञान सम्बन्धी ऐसी ऐसी घटनायें देखेंगे कि आपको भी आश्चर्य्य ही होना पड़ेगा। उसने हवेन्ना स्थानकी घटनाओंका ऐसा वर्णन किया कि फिलेडेलफियासे

छुट्टी होते ही मैं वहां भी गया। कहना नहीं होगा, जौन किङ्की मुक्तात्माने जितनी बातें उसके सम्बन्धमें कही थी उससे कहीं अधिक मैंने अपनी आखोंसे हवेन्वा गांवमें देखा।

इस गांवमें रहनेवाला मिडियमका नाम एली-जबेथ जे० कौमटन है। यह बड़ी दीना, दूसरे स्वामीकी स्त्री और नौ लड़कोंकी मा है। पहिले यह धोबिनका काम करती थी, पर अब अपने दूसरे पतिके साथ काश्त-कारीमें परिश्रम करती है। एड्ढीकी तरह उसकी मिडि-यमगरी भी पुश्तानी है। इसकी दादी और नानी दोनो "डाइन" कहलाती थीं। इसके लड़के भी मिडि-यम हुए हैं। वीवी कौमटनने नौ बरसकी अवस्थामें मुक्तात्माका पहिले पहिल दर्शन किया था। उसके बाद इसे मुक्तात्माओंने अनेक तरहकी बातें कही थी जिनका यहां लिखा जाना उचित नहीं। सन १८७३ ई०के मार्च महीनेमें एक पड़ोसीने इसे चक्र बनानेकी राय दी तबसे यह वास्तविक मिडियमगरी करने लगी। कहते हैं, पहिले ही चक्रमें इससे सेलविल वाटनकी मुक्तात्माने आकर अपने मारे जानेकी बिलकुल बातें कही और दोही दिन बाद पुलिसकी खोजसे भी वे ही सब बातें जाहिर हुईं।

ता० १२ वीं फरवरी सन १८७४ ई०को इसके स्वामी और पड़ोसियोंकी रायसे मुक्तात्माओंको सदेह प्रगट करनेका यत्न किया गया। एक कम्बल लटका दिया गया और मुक्तात्माओंके हाथ उसकी चारों ओर जाहिर हुए। यह काम कई बार कई जगह किया

गया और सब जगह मुक्तात्मा प्रगट होने लगीं। थोड़े ही दिनोंके बाद एक बार एक छोटे बच्चेकी मुक्तात्मा पूरापूरा सदेह होकर प्रगट हुई, तिसके बाद सयानी सयानी मुक्तात्मायें भी आने लगीं। अप्रैल महीनेमें मुक्तात्मा बोलने भी लगीं।

मैंने वहां पहुंचकर देखा कि मुक्तात्माओंके प्रगट होनेकी जगह यहां कोठेपरका एक कमरा था। इस कमरेके एक कोनेमें एक ऐसी दीवाल दे दी गई थी कि कमरेकी दो दीवालोंके साथ इससे एक त्रिकोण कोठरी बन गई थी। मैंने इस त्रिकोण कोठरीके भीतर जाकर देखा कि दीवाल सब ऐसी पोखता थीं कि उनपर होकर कोसी चोजका आना जाना हरगिज मुमकिन नहीं था। इसमें जानेका एक ही कीवाड़ तीसरी नई दिवालमें था। इस कीवाड़के ऊपर एक छोटा सूराख था जिससे होकर एक काला परदा दरवाजेपर लटक रहा था। कोठरी एकदम अन्धियाली थी।

यहांके चक्रमें मैं पहिले पहिल ता: ३०वीं जनवरीको शरीक हुआ। मिडियमके बैठनेकी कोठरीसे आठ फिट पर १२ दर्शक कुर्सीपरबैठे थे मिडियमके बैठ जाने पर और रोशनी धीमी कर दी जानेपर भी आधे घण्टे-तक हम लोग योंही बैठे रहे। पर आखिरको कोठरीका दरवाजा खुला और एक काला इण्डियन सामने आया। इसने सब लोगोंका स्वागत किया, खासकर मुझको, पर चौकठसे बाहर नहीं निकला, बाहर नहीं आनेका कारण उन्होंने यही बतलाया कि मिडियमको आज उतनी शक्ति नहीं है कि मैं बाहर निकल सकूं।

दूसरे दिनके चक्रमें केटो ब्रिङ्क नामकी औरतकी मुक्तात्मा निकली। यह कोठरीसे निकलकर बाहर चली आई। दर्शकोंका बदन छूने लगी, किसीके सिरपर हाथ रखती; किसीके पीठपर थपथपाती और किसीके गाल-पर हाथ रखती थी। सुफेद मलमलकी सजी सुडौल पुशाक पहिने, सिरसे घुटनेतक बारीक रेशमी कपड़ेका घूंघट डाले वह चुपचाप आहिस्ते आहिस्ते कमरेमें घूमने लगी। देखनेसे अजीबही माजरा मालूम होता था। और सब दर्शकोंके साथ स्पर्श करके वह मेरे पास आई। मैं सब लोगोंसे अलग मिडियमकी कोठ-रीकी दीवालमें एक हाथ अड़ाये बैठा था। मेरे पास आकर उसने पहिले मेरा सिर छूआ, फिर मेरी गोदमें बैठ गई और एक बाजू मेरे कन्धेपर होके मेरी गरदनकी चारो तरफ लपेटकर उसने बड़ी नजाकतसे मेरे गालका चुम्मा लिया। मेरी गोदमें उसके समूचे बदनका बोझ मुझे बहुत ही हलका मालूम हुआ—आठ बरसके लड़केके बोझके समान—पर कन्धेपर उसका हाथ और गालपर उसके लब मोटे आदमीके हाथ और लबोंके समान मालूम हुए। जब वह मेरे पाससे हटी तो मैं मिडियमकी कोठरीमें चला गया। वहां जाकर देखें तो मिडियम नहीं है। मैंने उस छोटी कोठरीमें बखूबी ढूंढ़ा, कुर्सी दीवाल आदि सब जगहोंको टटोला, पर कहीं मिडियमका पता नहीं पाया।

यह माजरा देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य्य मालूम हुआ; गौर किया कि इसमें दोही बात हो सक्ती है। या तो मिडियम ही रूप बदलकर केटो ब्रिङ्ककी सूरत

है और सब लोगोंको धोखा दे रही है, वा सचमुच मुक्तात्माओंने मिडियमको गायब कर दिया है। मैंने उसी समय निश्चय किया कि जो कुछ हो, इस बातकी ठीक परीक्षा कर लूंगा तब यहांसे जाऊंगा।

बीबी कौमटन परीक्षामें उपस्थित होनेको खुशीसे राजी हुई। तदनुसार मैंने दूसरे दिनके चक्रके समय उसके कानकी बाली निकाल ली और कानके उन सूराखोंमें करके एक एक तागा कमजोर मोटा सूत पिन्हा दिया। फिर मिडियमको उसी छोटी कोठरीमें लेजाके मैंने उसे उसकी कुर्सीपर बैठा दिया और उन दोनों सूतोंके चारों किनारोंको कुर्सीके पीछेकी पटरीपर चपड़ेके जरिये लगाकर उस पर अपना मुहर कर दिया। ऐसा करनेसे मिडियम ऐसी बेबस होगई कि अगर वह जरा भी हिलती तो यातो उसका कान कट जाता वा तागेपर जोर पहुंचनेसे वह तागा टूट जाता, वा मोहर उखड़ जाता। इनमेंसे कोई बात होनेसे मिडियमकी धोखेबाजी जाहिर हो जाती। अगर लोहेकी सिकड़ी मिडियमके बदमें पैन्हा दी जाती और वह सिकड़ी किसी लकड़ीमें बंधी रहती तो भी मिडियम इससे अधिक बेबस नहीं होती।

उस दिनके चक्रमें दस बारह आदमी बैठे, कोठरीके दरवाजेसे सिर्फ चारही पांच फिटपर मैं कुर्सीपर बैठा था और शेष लोग साबिक़ ही स्थानपर दो पक्तियोंमें कुर्सीपर बैठे थे। जिस तरहकी कलके जरिये मैंने चिट्टेण्डेनको मुक्तात्माओंको तौला था, वैसीही कल उस दिन भी मैं अपने सामने रखे था। रोशनी

कम किये जानेके बाद बहुत देरतक सब लोग गीत गाते रहे, पर कोई नतीजा नजर नहीं आया। आखिरको कोठरीके दरवाजेके ऊपरके छेदमें दो हाथ दीख पड़े, ये हाथ इधर उधर घूमकर चले गये। तब कुछ और बड़े हाथ आये, ये भी चले गये तब एक आवाज सुन पड़ी, इस आवाजने मुझे उपदेश दिया। उसने कहा कि जब मुक्तात्मा कोठरीके बाहर रहती है उस समय अगर तुम भीतर कोठरीमें आकर मिडियमकी खोज करो तो तुम्हे अखतियार है कि कोठरीके भीतर सब जगहको टटोललो परन्तु कुर्सीको अपने हाथसे मत छूना—कुर्सीके भीतर बाहर जहांतक नजदीक चाहो हाथ लेजाना पर कुर्सीको छूना मत। मुक्तात्माको जब तौलना चाहो तो उस कलके चबूतरे पर एक कपड़ा रख दो जिससे मुक्तात्माका पैर उस लोहेपर न सटे। मैंने कहा "बहुत अच्छा" इसके बाद ही कलकी मुक्तात्मा जो अपना नाम केटी क्रिङ्ग बतलाती थी आकर और उनलोगोंका शरीर छूकर उस तौलनेवाली कलके पास आई। ज्योंही वह उसके चबूतरे पर चढ़ी कि मैंने झट पट कलका चिन्ह ठीक कर लिया। तब मुक्तात्मा कलसे उतरकर उस कोठरीमें चली गई मैंने तब दिया-सलाई जलाई और कलका नम्बर देखकर जान लिया कि मुक्तात्मा केवल ७७ पौण्ड (साढ़े ३८ सेर)की थी, बावजूदेके उसका आकार देखनेसे इससे कहीं अधिक वजनकी मालूम होती थी।

मुक्तात्मा फिर भी बाहर आई, तब मैं कठरीमें पैठ गया। भीतर जाकर मैंने समुची कोठरी भली भांति

देखी, बड़ी खबरदारीसे मैंने समूची कोठरी टटोल ली; परन्तु कहीं मिडियमका नाम निशान नही पाया, कुर्सी सामने मौजूद थी, परन्तु उसपर कोई भी बैठी न थी। तब मैं बाहर निकल आया और स्त्री-मुक्तात्मासे कहा कि तुम अपना बदन हलका बना लो और फिर तौल-नेकी कलपर चढ़ो। इतना सुनकर वह फिर कलपर आई, मैंने पहिले हीकी तरह इसको फिर तौल लिया। फिर वह कठोरीमें चली गई और मैंने कलपर नम्बर पढ़ा तो वह सिर्फ ५९ पोण्ड (साढ़े २९ सेर)की पाई गई। तीसरी बार फिर भी वह बाहर निकली और दर्शकोंका अङ्ग स्पर्श करते मेरे पास पहुंची और तब तीसरी बार कलपर चढ़ी इस बार वह ५२ पैण्ड (२६ सेर)की हुई, यद्यपि आज तमाम दिन उसकी सूरतवा पुशाकमें जाहिरा कोई चीज बदली हुई नहीं मालूम होती थी।

एड्डी मिडियमके द्वारा प्रगट होनेवाली मुक्तात्मा-ओंकी ऊंचाई कभी घटती बढ़ती नहीं थी। परन्तु यहांकी केटी ब्रिङ्गकी ऊंचाई भी घटती बढ़ती मालूम हुई, क्योंकि मैंने उसे एक बार ५ फिट साढ़े १० इञ्चका पाया, और दूसरी बार ४ फिट पौने पांच इञ्चका।

तौले जानेके बाद केटी ब्रिङ्ग फिर नहीं आई, पर एक काले इण्डियनकी मुक्तात्मा कोठरीके दरवाजेके पास आई और अपनी भाषामें बहुत देरतक एक दर्शकके साथ बात चीत करती रही। उस दर्शकने पीछे मुझसे कहा कि यह मुक्तात्मा अपनी भाषा सचमुच काले इण्डियनोंकी तरह बोलती है। मिडियम बीबी कौमटन

अपनी गवांरी भाषा छोड़कर और कोई भाषा नहीं बोल सक्ती है लिखना पढ़ना तो उसके लिये हराम ही है। लड़ाई आरम्भ होनेके समय जसी वज्रध्वनि काले इण्डियन लोग करते हैं वैसाही सिंहनाद इस काले इण्डियनने बातचीत समाप्त होनेपर किया। इस आवाजसे मालूम हुआ कि मकान टूटके गिर जायगा। जैसी आवाज काले इण्डियन लोग मित्रता करनेके समय करते हैं वैसी ही आवाज उस मुक्तात्माने जानेके समय किया। यह आवाज भी बड़ी भयावनी थी। अगर कोई महापुरुष ऐसा भी कहें कि मिडियम ही काले इण्डियनकी सूरत बनाती है तौभी उन्हे यह कहनेका मजाल नहीं है कि वे दोनो आवाज उस कोमलाङ्गी रमणीके मुहसे निकल सक्ती है।

उस काले इण्डियनके चले जानेके बाद और भी कई तरहकी मुक्तात्मा गायब ही रहकर बातचीत करती रहीं, तदनन्तर रोशनी तेजकी गई, सामने कई सिर नजर आये और तब चक्र समाप्त हुआ।

झटपट मैं चिराग लेकर भीतर कोठरीमें पैठ गया। देखा कि मिडियमको मैंने जैसे चक्र बैठनेके पहिले छोड़ा था वह वैसे ही बैठी है। पर बेहोश, बेखबर, गोया मरी हुई थी। सूत और मुहर सब ज्योंकेज्यों पाये गये। सब लोगोंने एक एकी मुहर देख लिया तब डोरी काटके मिडियमको कोठरीके बाहर किया। अठारह मिनट तक वह निर्जीव पड़ी रही। धीरे धीरे उसके शरीरमें जान आई। जब पसीना चलने लगा, नाड़ी धड़धड़ करनेकी और मामूली तरहकी गरमी उसके बदनपर मालम हुई

तब मैंने उसे तौलनेकी कलपर रख दी। नम्बर देखा, मालूम हुआ १ सौ २१ पौण्ड (१ मन साढ़े २० सेर)।

कर्नैल औलकर साहबने अपनी बड़ी पुस्तकमें मुक्तात्मा-ओंके सम्बन्धमें जितनी बातें लिखी है उन सबका संक्षेप हाल भी देना इस छोटी पुस्तकके लिये सम्भव नहीं। उन्होंने कैसी कैसी परीक्षा की थी, धोखेबाजी रोकनेके लिये कैसे कैसे यत्न किये थे, किन किन तदबीरोंसे चक्रके समय मिडियमको उन्होंने बेबस किया था, उन सब बातोंका उल्लेख करनेसे पुस्तक बहुत बड़ी होजाती। उन्होंने अपने सामने जो कुछ देखासुना वे सब बातें ऐसे आश्चर्य्य-जनक और अलौलिक अपूर्व्व मालूम होती हैं कि उन्हे पाठकोंके सामने रखनेका शौक रहनेपर भी हम स्थानाभावसे कुछ नहीं लिख सक्ते हैं।

प न्तु जो कुछ इस पुस्तकमें लिखा गया, वह यद्यपि बहुत थोड़ा है, तौ भो इतना है कि पाठकोंका चित्त अध्यात्म-विज्ञानकी ओर खिच सकेगा। मरनेके बाद मनुष्यका नाश नहीं होता है ऐसा विश्वास इस देशके प्रायः सब लोगोंको है। मनुष्य कहां जाता है कैसे रहता है यह बात जान लेनेकी इच्छा सब लोगोंको होनी चाहिये। यदि बुद्धिमान विद्वान हमारे देशवासी इस विद्याकी उन्नतिमें इस खयालसे भी तत्पर हों तो हिन्दुस्तानमें और सब देशोंसे बढ़कर अध्यात्म विज्ञानकी उन्नति थोड़े हो दिनोंमें हो जाय।

समाप्त।

Finished first reading 26-6-93.